विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ
1	नींद से जागने के बाद दुआएँ	1
2	कपड़ा पहनते समय की दुआ।	16
3	नया कपड़ा पहनने की दुआ।	16
4	नया कपड़ा पहनने वाले को क्या दुआ दी जाए	17
5	कपड़ा उतारे तो क्या पढ़े ?	17
6	पाख़ाना घर में दाख़िल् होने की दुआ।	17
7	पाख़ाना घर से निकलने की दुआ।	17
8	वुज़ू करते समय की दुआ।	18
9	वुज़ू से फारिग़ होने के बाद दुआ।	18
10	घर से निकलते समय की दुआ।	18
11	घर में दाख़िल् होते समय की दुआ।	19
12	मस्जिद की तरफ जाने की दुआ।	19
13	मस्जिद में दाख़िल् होने की दुआ।	20
14	मस्जिद से निकलने की दुआ।	21
15	अज़ान की दुआएँ।	21
16	नमाज़ शुरू करने की दुआ।	22
17	रुकूअ़ की दुआएँ	27
18	रुकूअ से उठने की दुआएँ।	29
19	सजदे की दुआ।	29
20	दोनों सजदों के बीच की दुआएँ।	31

21	सजदा तिलावत् की दुआ ।	31
22	तशह्हुद् की दुआ ।	32
23	दरूद शरीफ ।	33
24	आख़िरी तशह्हुद् के बाद और सलाम फेरने से पहले की दुआएँ ।	34
25	नमाज़ से सलाम फेरने के बाद की दुआएँ ।	38
26	इस्तिख़ारा की दुआ ।	42
27	सुबह् और शाम के अज़्कार तथा दुआएँ ।	44
28	सोते समय की दुआएँ ।	54
29	रात को करवट बदल्ते समय की दुआ ।	59
30	नींद में बेचैनी तथा घब्राहट् की दुआ ।	59
31	कोई आदमी बुरा ख़्वाब (स्वप्न) देखे तो क्या करे और कौनसी दुआ पढ़े ।	60
32	क़ुनूते वित्र की दुआ ।	60
33	वित्र का सलाम फेरने के बाद की दुआ ।	62
34	ग़म् चिन्ता और फिक्र से नजात पाने की दुआ	62
35	बेक़रारी तथा बेचैनी की दुआ ।	64
36	दुश्मन् तथा शासन अधिकारी से मुलाक़ात के समय दुआ ।	65
37	शसक् के अत्याचार से बचने की दुआ ।	65
38	दुश्मन् पर बद्दुआ ।	66
39	जब किसी क़ौम से डरता हो तो कौन्सी दुआ पढ़े ?	67
40	जिसे अपने ईमान में शक् होने लगे तो वह निम्नलिखित दुआ पढ़े ।	67
41	क़र्ज (ऋण) की अदायगी के लिए दुआ ।	68

42	नमाज़ में या क़ुरआन पढ़ते समय उत्पन्न होने वाले वस्वसों से बचने की दुआ।	68
43	उस आदमी की दुआ जिस पर कोई काम मुश्किल तथा कठिन हो जाए।	69
44	गुनाह कर बैठे तो कौन्सी दुआ पढ़े और क्या करे ?	69
45	वह दुआएँ जो शैतान तथा उस के वस्वसों को दूर करती हैं।	70
46	जब कोई ऐसा वक़िआ़ जो उस के इच्छा और मर्ज़ी के विरुद्ध हो या कोई काम उस की ताक़त् शक्ति और क्षमता से बाहर हो जाए तो कोन्सी दुआ पढ़े ?।	70
47	जिस के यहाँ कोई औलाद पैदा हो उसे किस प्रकार मुबारक्बाद (दुआ) दी जाए और जिसे मुबारक्बादी दी जा रही हो वह मुबारकबाद देने वाले के लिए क्या कहे ?	71
48	बच्चों को कौन्से कलिमात के साथ पनाह दी जाए।	72
49	बीमार पुर्सी के वक़त मरीज़ के लिए दुआ	73
50	बीमार पुर्सी की फज़ीलत्।	73
51	उस मरीज़ की दुआ जो अपनी ज़िन्दगी से मायूस हो चुका हो।	74
52	जो आदमी मरने के क़रीब हो उसे निम्नलिखित कलिमा पढ़ाया जाए।	75
53	जिसे कोई मोसीबत् पहुँचे वह निम्नलिखित दुआ पढ़े।	75
54	मययत् की आँखें बन्द करते समय की दुआ।	76
55	नमाज़े जनाज़ा की दुआ।	76

56	बच्चे पर जनाज़े की दुआ।	78
57	तअ्ज़ियत् (मृतक के घर वालों को तसल्ली देना) की दुआ।	79
58	मृतक को क़ब्र में दाख़िल् करते समय की दुआ	80
59	मययत् को क़ब्र में दफन् करने के बाद दुआ।	80
60	क़बरों की ज़ियारत् की दुआ।	81
61	हवा चलते समय की दुआ।	81
62	बादल् गरजते समय पढ़ी जाने वाली दुआ।	82
63	बारिश् माँगने की कुछ दुआएँ।	82
64	बारिश् उतरते समय की दुआ।	83
65	बारिश् समाप्त होने के बाद दुआ।	83
66	बारिश् रुकवाने के लिए दुआ।	83
67	चाँद देखते समय की दुआ।	83
68	रोजा खोलते समय की दुआ।	84
69	ख़ाना खाने से पहले दुआ।	84
70	खाने से फारिग़ होने के बाद दुआ।	85
71	मेहमान की दुआ खाना खिलाने वाले मेज़बान के लिए।	86
72	जो आदमी कुछ पिलाए या पिलाने का इरादा करे उस के लिए दुआ।	86
73	जब किसी घर वालों के यहाँ रोज़ा इफ्तार करे तो उन के हक़ में यह दुआ करे।	86
74	दुआ जब खाना हाज़िर हो और रोज़ादार रोज़ा न खोले।	87
75	रोज़ादार को जब कोई गाली दे तो क्या कहे ?	87
76	पहला फल् देखने के समय दुआ।	87

77	छींक की दुआ ।	88
78	जब काफिर छींकते समय अल्हम्दुलिल्लाह कहे तो उस के लिए क्या कहा जाए ?	88
79	शादी करने वाले के लिए दुआ ।	88
80	शादी करने वाले की अपने लिए दुआ और सवारी खरीदने की दुआ ।	89
81	जिमाअ़ (सम्भोग) से पहले दुआ ।	89
82	गुस्सा (क्रोध) समाप्त करने की दुआ ।	89
83	किसी बीमारी या मोसीबत् में मुब्तला आदमी को देखे तो निम्नलिखित् दुआ पढ़े ।	90
84	मज्लिस् में पढ़ने की दुआ ।	90
85	मज्लिस् के गुनाह दूर करने की दुआ ।	90
86	जो आदमी कहे (ग़फरल्लाहु लका)) अर्थात अल्लाह तुझे बख़्श दे उस के लिए दुआ ।	91
87	जो अच्छा सुलूक (ब्योहार) करे उस के लिए दुआ ।	92
88	वह दुआ जिसे पढ़ने से आदमी दज्जाल के फित्ने से महफ़ूज़ रहता है ।	92
89	जो आदमी कहे मुझे तुम से अल्लाह के लिए मोहब्बत् है उस के लिए दुआ ।	92
90	जो आदमी तुम्हारे लिए अपना माल पेश करे उस के लिए दुआ ।	93
91	क़र्ज़ (ऋण) अदा करते समय क़र्ज देने वाले के लिए दुआ ।	93
92	शिर्क से बचने की दुआ ।	93
93	जो किसी को तोहफा (उपहार) दे या सदक़ा करे और उस के लिए दुआ की जाए तो क्या	94

	कहे ?	
94	अगर किसी के दिल् में कोई बद्फाली या बद्शुगूनी की बात उत्पन्न हो जाए तो उस से नजात पाने के लिए निम्नलिखित दुआ पढ़े।	94
95	सवारी पर सवार होने की दुआ।	94
96	सफर की दुआ।	95
97	किसी गावँ या शहर में दाखिल् होने की दुआ।	96
98	बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ।	97
99	किसी सवारी या जानवर के फिसल्ने या गिरने के समय की दुआ।	97
100	मोसाफिर की दुआ मोक़ीम के लिए।	98
101	मोक़ीम की दुआ मुसाफिर के लिए।	98
102	ऊँची जगहों पर चढ़ते समय तक्बीर और नीचे उतरते समय तस्बीह़ पढ़नी चाहिए।	98
103	मुसाफिर की दुआ जब सुबह् करे।	99
104	सफर के दौरान जब मुसाफिर किसी मन्ज़िल् (मोक़ाम) पर उतरे उस समय की दुआ।	99
105	सफर से वापसी की दुआ।	99
106	खुश करने वाली या ना पसन्दीदा चीज़ पेश आने पर क्या कहे ?	100
107	रसूलुल्लाह ﷺ पर दरूद की फज़ीलत्।	100
108	सलाम को फैलाना।	102
109	जब काफिर सलाम कहे तो उसे किस तरह जवाब दिया जाए।	103
110	मुर्ग़ बोलने और गदहा हींगने के समय दुआ।	103
111	रात में कुत्तों का भूँकना तथा गदहों का हींगना सुनकर निम्नलिखित दुआ पढ़े।	104

112	उस आदमी के लिए दुआ जिसे तुम ने बुरा भला कहा हो।	**104**
113	कोई मुस्लिम जब किसी मुस्लिम की तारीफ करे।	**105**
114	जब कोई किसी की तज़्किया (तारीफ) करे उस समय की दुआ।	**105**
115	हज या उमरा का इह़राम बाँधने वाला निम्नलिखित तल्बिया पढ़े।	**106**
116	ह़जरे अस्वद् वाले कोने पर अल्लाहु अक्बर कहना चाहिए।	**106**
117	रुकने यमानी और ह़जरे अस्वद् के दरमियान दुआ।	**106**
118	सफा और मरवा पर दुआ।	**107**
119	अरफा (९जुल्हिज्जा) के दिन दुआ।	**108**
120	तअज्जुब या खुशी के समय दुआ।	**108**
121	जो आदमी अपने बदन् में दरद महसूस करे वह क्या करे और कौन्सी दुआ पढ़े ?	**108**
122	जानवर ज़बह् करते समय या क़ुरबानी करते वक़्त की दुआ।	**109**
123	सरकश् शैतानों की ख़ुफिया तदेबीरों के तोड़ के लिए दुआ।	**109**
124	अल्लाह से बख़्शिश् माँगना तथा तौबा व इस्तिग़फार एवं क्षमा याचना करना।	**110**

जिक्र की फज़ीलत्

अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ فَٱذۡكُرُونِيٓ أَذۡكُرۡكُمۡ وَٱشۡكُرُواْ لِي وَلَا تَكۡفُرُونِ ۝١٥٢ ﴾ (البقرة 152)

तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करुँगा और मेरा शुक्र करो और मुझ से कुफ्र न करो। (सूरा बक़रा १५२)

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ ذِكۡرٗا كَثِيرٗا ۝٤١ ﴾ (الأحزاب 041)

ऐ ईमान वालो अल्लाह को बहुत अधिक याद करो। (अह्ज़ाब ४१)

﴿ وَٱلذَّٰكِرِينَ ٱللَّهَ كَثِيرٗا وَٱلذَّٰكِرَٰتِ أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُم مَّغۡفِرَةٗ وَأَجۡرًا عَظِيمٗا ۝٣٥ ﴾ (الأحزاب 035)

और वह मर्द जो अल्लाह को बहुत याद करने वाले हैं और याद करने वाली औरतें अल्लाह ने उन के लिए बख़शिश् और बहुत बड़ा प्रतिफल् तैयार कर रखा है। (सूरा अह्जाब ३५)

﴿ وَٱذۡكُر رَّبَّكَ فِي نَفۡسِكَ تَضَرُّعٗا وَخِيفَةٗ وَدُونَ ٱلۡجَهۡرِ مِنَ ٱلۡقَوۡلِ بِٱلۡغُدُوِّ وَٱلۡأٓصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ ٱلۡغَٰفِلِينَ ۝٢٠٥ ﴾ (الأعراف 205)

और अपने रब् को आजिज़ी और डर से बुलन्द आवाज़ के बिना सुब्ह व शाम याद कर और ग़ाफिलों में से मत् हो जा। (सूरा आराफ २०५)

وقالَ ﷺ:((مثلُ الذِى يذكُر ربه والذِى لايذكُر ربه مثـلُ الحـى والميتِ)) (البخارى مع الفتح ११/२०८)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया (उस आदमी की मिसाल जो अपने रब को याद करता है और जो अपने रब को याद नहीं करता ज़िन्दा और मुर्दा की तरह् है। (बुख़ारी)

وقَالَ ﷺ : ((ألا أنبئُكُم بخير أعمالِكُم ، وأزكاها عِند مليكِكُم ، و أرفعِها في درجاتِكُم ، وخيرٍ لكُم مِن إنفَاق الذهبِ والورق ، وخيرٍ لكُم مِن أنْ تلقَوا عدوكُم فَتضربوا أعناقَهم ويضربوا أعناقَكُم ؟)) قالُوا بلى . قالَ : ((ذِكْرُ اللهِ تعالى))

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम् ने फरमाया (क्या मैं तुम्हें वह काम न बताऊँ जो तुम्हारे सब कामों से बेहतर , तुम्हारे पदों में सब से बुलन्द और तुम्हारे सोना चाँदी ख़र्च करने से बेहतर है और तुम्हारे लिए इस से भी बेहतर है कि तुम अपने दुश्मनों से मिलो तुम उनकी गर्दनें काटो और वे तुम्हारी गर्दनें काटें । सहाबा ने कहा क्यों नहीं जरुर बतलाइए । आप ने फरमाया अल्लाह तआला को याद करना । (त्रिमिजी ५/४५९ इबने माजा २/१२४५ और देखिए सही इबने माजा २/३१६ और सही त्रिमिजी ३ /१३९)

وقَالَ ﷺ : يقُولُ اللهُ تعالى : ((أنا عِند ظَنِ عبدِي بي ، وأنا معه إذَا ذَكَرني ، فَإِنْ ذَكَرني في نفْسِهِ ذَكَرته في نفْسِي ، وإِنْ ذَكَرني في ملأٍ ذَكَرته في ملأٍ خيرٍ منهم ، وإِنْ تقَرب إِلي شِبراً تقَربت إِليه ذِراعاً وإِنْ تقَرب إِلي ذِراعاً تقَربت إِليه باعاً ، وإِنْ أتانِي يمشِي أتيته هرولةً

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाते हैं ((मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक़् हूँ जो वह मेरे विषय में रखता है । और जब वह मुझे याद करता है तो मैं उस के साथ होता हूँ । यदि वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं उसे अपने दिल में याद करता हूँ और अगर वह किसी जमाअत् में मुझे याद करता है तो मैं उसे

ऐसी जमाअत् में याद करता हूँ जो उस से बेहतर है और अगर वह एक बालिश्त मेरे क़रीब आए तो मैं एक हाथ उस के क़रीब आता हूँ और अगर वह एक हाथ मेरे क़रीब आए तो मैं दोनों हाथ फैलाने के बराबर उस के क़रीब आता हूँ और अगर वह चलकर मेरे पास आए तो मैं दौड़ कर उस के पास आता हूँ । (बुखारी ८/१७१ मुस्लिम ४/२०६१ और शब्द बुखारी के हैं ।

وعن عبدِاللهِ بسرٍ رضِى اللهُ عنه أن رجلاًقَالَ : يارسولَ اللهِ إن شرائِع الإسلامِ قَد كثُرت علَى فَأخبِرنى بِشيءٍ أتشبثُ بِهِ . قَالَ : ((لايزالُ لِسانك رطباً مِن ذِكْرِاللهِ))

और अब्दुल्लाह बिन बुस्र फरमाते हैं कि एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मुझ पर इस्लाम के अह्काम बहुत अधिक हो गए हैं । इस लिए आप मुझे कोई एक चीज़ बताएँ जिसे मैं मज़्बूती के साथ पकड़ लूँ । आप ने फरमाया कि तेरी ज़बान हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर् रहे । (त्रिमिज़ी ५/४५८इबने माजा २/१२४६१और देखिए सही त्रिमिज़ी ३/१३९ और सही इबने माजा २/३१७)

وقَالَ ﷺ: ((من قَرأَ حرفاً مِن كِتابِ اللهِ فَله بِهِ حسنةٌ ، والحـسنةُ بِعشرِ أمثَالِها ، لا أقُولُ :﴿ الم ﴾ حرف ولكِن: ألِف حرف ، ولاَم حرف ، ومِيم حرف))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया जो आदमी अल्लाह की किताब में से ऐक हर्फ (शब्द) पढ़े उस के लिए इस के बदले में दस नेकियाँ मिलती हैं । मैं यह नहीं कहता कि अलिफ् लाम मीम एक हर्फ (शब्द) है बल्कि अलिफ् एक हर्फ है

लाम एक हर्फ है और मीम एक हर्फ है । (त्रिमिज़ी ५/१७५ और देखिए सहीहुल् जामिइस्सग़ीर ५/३४०)

وعن عُقْبَةَبن عامِرٍ رضِى اللهُ عنه قَالَ : خرج رسولُ اللهِ ﷺ ونحـن فِى الصفةِ فَقَالَ : ((أيكُم يحِب أنْ يغدو كُل يومٍ إلى بطْحـانَ أو إلى العقِيقِ فَيأتى مِنه بِناقَتين كوماوين فِى غَيرِ إثْمٍ ولا قَطِيعةِ رحِمٍ ؟)) قَقُلْنا : يا رسولَ اللهِ نحِب ذلك . قَالَ : ((أفَلا يغدو أحدكُم إلى المسجِدِ فَيعلم ، أو يقْرأ آيتين مِن كِتابِ اللهِ عزوجل خير لَه مِـن ناقَتين ، وثَلاثٌ خير لَه مِن ثَلاثٍ ، وأربع خير لَه مِن أربع ، ومِـن أعدادِهِن مِن الإبِل))

उक़्बा बिन् आ़मिर (रजि) फरमाते हैं कि हम सुफ्फा में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् घर से निकले और फरमाया ((तुम में से कौन है जिसे यह पसन्द हो कि हर दिन बुत्हान या अ़क़ीक़ वादी की ओर जाए और वहाँ से बड़ी बड़ी कौहानों वाली दो ऊँटनियाँ लेकर आए और उसे उस में न कोई गुनाह हो और न रिश्तों नातों को तोड़ना ।)) हम ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल हम सभी लोग यह पसन्द करते हैं । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया तो तुम में से कोई मस्जिद में क्यों नहीं जाता ताकि अल्लाह की किताब की दो आयतें सीखे या सिखाए या पढ़े यह उस के लिए दो ऊँटनियों से बेहतर हैं तीन आयतें हों तो तीन ऊँटनियों से बेहतर हैं और चार आयतें चार ऊँटनियों से इसी प्रकार जितनी आयतें हों उतने ऊँटों से बेहतर हैं । (मुस्लिम १/५५३)

وقَالَ ﷺ:((من قَعد مقْعداً لَم يذْكُرِاللهَ فِيهِ كانت علَيهِ مِن اللهِ تِرةٌ ، ومن اضطَجع مضجعاً لَم يذْكُرِ اللهَ فِيهِ كانت علَيهِ مِن اللهِ تِرةٌ))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया जो व्यक्ति किसी ऐसी जगह बैठा जिस में उस ने अल्लाह को याद न किया तो वह अल्लाह की तरफ् से उस पर नुक्सान का कारण होगी और जो व्यक्ति किसी जगह लेटा जिस में उस ने अल्लाह को याद न किया तो वह उस पर अल्लाह की ओर से हानिकारक् सिद्ध होगी । (अबूदाऊद ४/२६४आदि और देखिए सहीहुल् जामिअ् ५/३४२)

وقَالَ ﷺ: ((ماجلَس قَوم مجلِساً لَم يذْكُروا اللهَ فِيهِ ، ولَم يصلوا علَى نبِيهِم إلاكانَ علَيهِم تِرةٌ ، فَإِنْ شاءَ عذبهم وإِنْ شاءَ غَفَر لَهم

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया जब कोई क़ौम किसी मज्लिस् में बैठती है और उस जगह उन्हों ने अल्लाह को याद न किया और अपने नबी पर दरुद व सलात न पढ़ी हो तो ऐसी मज्लिस् उन के लिए हानिकारक् सिद्ध होगी । फिर अगर अल्लाह चाहे तो ऐसी क़ौम को अज़ाब दे या उन्हें क्षमा कर दे । (त्रिमिज़ी और देखिए सहीह् त्रिमिज़ी ३/१४०)

وقَالَ ﷺ: ((ما مِن قَومٍ يقُومونَ مِن مجلِسٍ لايذْكُرونَ اللهَ فِيهِ إلاقَاموا عن مِثْلِ جِيفَةِ حِمارٍ وكَانَ لَهم حسرةً))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया जब कोई क़ौम ऐसी मज्लिस् से उठती है जिस में उन्हों ने अल्लाह का ज़िक्र न किया हो तो वह मुर्दार गदहे की तरह मुर्दार तथा बद्बूदार होकर उठती है और वह मज्लिस् उन के लिए

हानिकारक् साबित् होगी । (अबूदाऊद ४/२६४ , मुस्नद् अह्मद् २/३८९ और देखिए सहीहुल् जामिअ् ५/१७६)

1- नींद से जागने के बाद की दुआएँ

1 - ((الحمد لِلّٰهِ الذى أحيانا بعدما أماتنا وإليه النشور))

१. सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें मारने के बाद ज़िन्दा किया और उसी की तरफ् उठकर जाना है ।
(बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ११/११३ , मुस्लिम ४/२०८३)
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया ((जो आदमी रात को किसी भी समय जागे ओर जागने के बाद निम्नलिखित दुआ पढ़े तो उसे बख़्श दिया जाता है फिर यदि कोई दुआ करे तो उस की दुआ क़बूल होती है फिर यदि उठ खड़ा हो वुज़ू करे और नमाज़ पढ़े तो उस की नमाज़ क़बूल होती है ।))

2- ((لا إله إلا الله وحده لاشريك له ، له الملك وله الحمد ، وهو على كُل شيءٍ قَدِير . سبحانَ اللهِ ، والحمد لِلّٰهِ ولا إله إلا الله والله أكبر ، ولا حولَ ولاقُوةَ إلا باللّٰهِ العلي العظِيم ، رب اغْفِر لى

२.कोई भी पूजनीय नहीं परन्तु केवल अकेला अल्लाह । उसका कोई शरीक नहीं , उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है । अल्लाह पाक है और सब तारीफ अल्लाह के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई सच्चा मअ्बूद नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है और बुलन्दी तथा अज्मत् वाले अल्लाह की मदद् के बिना न किसी चीज़ से बचने की शक्ति है और न कुछ करने की क्षमता है । ((बुखारी फत्हुल्बारी के साथ ३/३९ , शब्द इबने माजा के हैं देखिए

3 - ((الحمد لله الذي عافاني في جسدي ، ورد علي روحي ، وأذن لي بذكره)) .

सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने मेरे बदन् को हर प्रकार की बीमारियों से स्वच्छ रखा और मेरे प्राण को मेरे बदन् में लौटा दी और मुझे अपने ज़िक्र की क्षमता प्रदान की । (त्रिमिज़ी ५/४७३ और सही त्रिमिजी ३/१४४)

4-**(4)** ﴿ إِنَّ فِي خَلۡقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَٱخۡتِلَٰفِ ٱلَّيۡلِ وَٱلنَّهَارِ
لَأٓيَٰتٖ لِّأُوْلِي ٱلۡأَلۡبَٰبِ ﴿١٩٠﴾ ٱلَّذِينَ يَذۡكُرُونَ ٱللَّهَ قِيَٰمٗا وَقُعُودٗا وَعَلَىٰ
جُنُوبِهِمۡ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلۡقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ رَبَّنَا مَا خَلَقۡتَ
هَٰذَا بَٰطِلٗا سُبۡحَٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ ﴿١٩١﴾ رَبَّنَآ إِنَّكَ مَن تُدۡخِلِ
ٱلنَّارَ فَقَدۡ أَخۡزَيۡتَهُۥۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنۡ أَنصَارٖ ﴿١٩٢﴾ رَّبَّنَآ إِنَّنَا سَمِعۡنَا
مُنَادِيٗا يُنَادِي لِلۡإِيمَٰنِ أَنۡ ءَامِنُواْ بِرَبِّكُمۡ فَـَٔامَنَّاۚ رَبَّنَا فَٱغۡفِرۡ لَنَا
ذُنُوبَنَا وَكَفِّرۡ عَنَّا سَيِّـَٔاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ ٱلۡأَبۡرَارِ ﴿١٩٣﴾ رَبَّنَا وَءَاتِنَا مَا
وَعَدتَّنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخۡزِنَا يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِۗ إِنَّكَ لَا تُخۡلِفُ ٱلۡمِيعَادَ
﴿١٩٤﴾ فَٱسۡتَجَابَ لَهُمۡ رَبُّهُمۡ أَنِّي لَآ أُضِيعُ عَمَلَ عَٰمِلٖ مِّنكُم مِّن ذَكَرٍ
أَوۡ أُنثَىٰۖ بَعۡضُكُم مِّنۢ بَعۡضٖۖ فَٱلَّذِينَ هَاجَرُواْ وَأُخۡرِجُواْ مِن دِيَٰرِهِمۡ
وَأُوذُواْ فِي سَبِيلِي وَقَٰتَلُواْ وَقُتِلُواْ لَأُكَفِّرَنَّ عَنۡهُمۡ سَيِّـَٔاتِهِمۡ وَلَأُدۡخِلَنَّهُمۡ

جَنَّٰتٍ تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ ثَوَابٗا مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ عِندَهُۥ حُسۡنُ ٱلثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ فِي ٱلۡبِلَٰدِ ﴿١٩٦﴾ مَتَٰعٞ قَلِيلٞ ثُمَّ مَأۡوَىٰهُمۡ جَهَنَّمُۚ وَبِئۡسَ ٱلۡمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لَٰكِنِ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوۡاْ رَبَّهُمۡ لَهُمۡ جَنَّٰتٞ تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا نُزُلٗا مِّنۡ عِندِ ٱللَّهِۗ وَمَا عِندَ ٱللَّهِ خَيۡرٞ لِّلۡأَبۡرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَإِنَّ مِنۡ أَهۡلِ ٱلۡكِتَٰبِ لَمَن يُؤۡمِنُ بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡكُمۡ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِمۡ خَٰشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشۡتَرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ ثَمَنٗا قَلِيلًاۚ أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمۡ أَجۡرُهُمۡ عِندَ رَبِّهِمۡۗ إِنَّ ٱللَّهَ سَرِيعُ ٱلۡحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱصۡبِرُواْ وَصَابِرُواْ وَرَابِطُواْ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾ ﴾ (آل عمران 190-200)

४. बेशक् आसमानों और ज़मीन की पैदाइश् , रात और दिन के बदल् बदल् कर आने जाने में अक़्ल् वालों के लिए निशानियाँ हैं । जो खड़े , बैठे , और लेटे हर हालत् में अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों ज़मीन की पैदाइश् में विचार करते हैं और कहते हैं ऐ हमारे पालन्कर्ता तूने इन्हें अकारण नहीं पैदा किया है । तू पाक है अतः हमें नरक के अज़ाब से बचा ले । ऐ हमारे पालनकर्ता जिसको तू ने जहन्नम् में डाला तो अवश्य उस को आप ने रुस्वा किया और ज़ालिमों का कोई मदद्गार नहीं । ऐ हमारे रब हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान के लिए पुकार रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आए । ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को माफ

फरमा दे और हमारे गुनाहों को हम से मिटा दे और मरने के बाद हमें नेक बन्दों के साथ करदे । ऐ हमारे रब तूने जिन जिन चीज़ों के विषय में हम से अपने पैग़म्बरों के ज़बानी वादे किए हैं वह हमें प्रदान कर और क़यामत् के दिन हमें रुस्वा न करना । इस में कुछ शक् नहीं कि तू वादा ख़िलाफी नहीं करता ।
(बुख़ारी फत्हुल् बारी के साथ ८/२३५ , मुस्लिम १/५३०)

2- कपड़ा पहनते समय की दुआ

5- ((الْحمد لِلّهِ الذِى كَسانِى هذَا (الثوب) ورزقَنِيهِ مِن غَير حولٍ مِنى ولاقُوةٍ))

५. सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे यह (कपड़ा) पहनाया और मेरी किसी ताक़त् एवं शक्ति के बग़ैर मुझे प्रदान किया । (अबूदाऊद , त्रिमिज़ी , इबने माजा और देखिए इर्वाउल् ग़लील् ७/४७)

3- नया कपड़ा पहनने की दुआ

6- ((اَللّهم لَكَ الحمد أنت كَسوتَنِيهِ ، أسئَلُكَ مِن خيرهِ وخير ما صنِع له ، وأعوذُبِكَ مِن شرهِ وشرماصنِع له))

६.ऐ अल्लाह तेरे ही लिए तारीफ है तूने मुझे यह पहनाया , मैं तुझ से इस की भलाई और जिस चीज़ के लिए बनाया गया है उस की भलाई चाहता हूँ । और इस की बुराई से और जिस चीज़ के लिए बनाया गया है उस की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ । (अबूदाऊद , त्रिमिजी , बग़वी और देखिए शैख़ अल्बानी (रहि) की किताब मुख़तसर शमाइले त्रिमिजी पृष्ठ ४७)

4 – नया कपड़ा पहनने वाले को क्या दुआ दी जाए

7- ((تبلِى ويخلِف الله تعالى))

७ . तू इसे पुराना करे और अल्लाह तआला इस के बाद और अधिक वस्त्र प्रदान करे । (अबूदाऊद ४/४१)

8- (2) اِلْبس جدِيداً ، وعِش حمِيداً ، ومت شهيداً .

८ . नया कपड़ा पहन् और खुश्गवार ज़िन्दगी गुज़ार और शहीद होके मर । (इबने माजा २/११७८ बग़वी १२/४१ और देखिए सही इबने माजा २/२७५)

5 – कपड़ा उतारे तो क्या पढ़े ?

9- ((بِسمِ اللهِ))

९ . अल्लाह के नाम के साथ । (त्रिमिजी २/५०५ सहीहुल् जामिअ् ३/२०३ और देखिए अल्इर्वा हदीस न०–४९)

6 – पाख़ाना घर में दाख़िल् होने की दुआ

10- (([بِسمِ اللهِ] اللّهم إِني أعوذُبك مِن الخبثِ والخبائِثِ))

१० . [अल्लाह के नाम से] ऐ अल्लाह मैं ख़बीसों और ख़बीसनियों से तेरी पनाह चाहता हूँ । (बुखारी १/४५ मुस्लिम १/२८३ शुरु में बिस्मिल्लाह की बृद्धि सोनन् सअीद बिन् मन्सूर में है । देखिए फतहुल्बारी १/२४४

7- पाख़ाना घर से निकलने की दुआ

11- ((غُفْرانك))

११. ऐ अल्लाह तेरी बख़्शिश् माँगता हूँ । (त्रिमिजी , अबूदाऊद , इबने माजा ।

8- वुजू शुरु करते समय की दुआ

12-((بِسمِ اللهِ))

१२. अल्लाह के नाम से शुरु करता हूँ। (अबूदाऊद , इबने माजा , मुस्नद् अहमद्)

9-वुज़ू से फारिग़ होने के बाद की दुआ

13-((أشهد أنْ لاإله إلاالله وحده لاشريك له وأشهد أن محمـداً عبده ورسولُه))

१३. मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई मअ्बूद नहीं। वह अकेला है , उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बन्दे और रसूल हैं। (मुस्लिम)

14-((اللهم اجعلْنى مِن التوابين واجعلْنى مِن المتطهرين))

१४. ऐ अल्लाह मुझे बहुत अधिक तौबा करने वालों में से बना दे और बहुत अधिक पाक साफ रहने वालों में से बना दे।
(त्रिमिज़ी १/७८और देखिए सहीह त्रिमिज़ी १/१८)

15-((سبحانك اللّهم وبحمدِك أشهد أنْ لا إله إلا أنت أستغفرك وأتوب إليك))

१५. ऐ अल्लाह तू हर ऐब से पाक है। केवल तेरे लिए तारीफ है। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई सच्चा मअ्बूद नहीं। मैं तुझ से क्षमा चाहता हूँ और तुझ ही से क्षमायाचना करता हूँ। (इमाम निसाई की किताब अमलुल् यौमि वल्लैला पृष्ठ १७३ और देखिए इर्वाउल् ग़लील १/१३५ तथा २/९४)

10- घर से निकलते समय की दुआ

16-((بِسمِ اللهِ توكلْت علىاللهِ ولاحولَ ولاقُوةَ إلا بِاللهِ))

१६. अल्लाह के नाम से। मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया और अल्लाह की मदद् के बिना न किसी चीज़ से बचने की ताक़त है

न कुछ करने की । (अबूदाऊद ४/३२५ , त्रिमिजी ५/४९० देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५१)

17-((اللّٰهم إنى أعوذُبك أنْ أضِل ، أو أضل ، أو أزل ، أو أزل ، أو أظلِم ، أو أظلم ، أو أجهلَ ، أو يجهلَ على))

१७ . ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस बात से कि गुम्राह हो जाऊँ या मुझे गुम्राह किया जाए या फिसल् जाऊँ या मुझे फिस्लाया जाए या मैं किसी पर जुल्म करुँ या कोई मुझ पर जुल्म करे या मैं किसी पर जिहालत् व नादानी करुँ या कोई मुझ पर जिहालत् व नादानी करे । (अबूदाऊद , त्रिमिजी , निसाई , इबने माजा और देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५२ और सहीह इबने माजा २/३३६)

11- घर में दाख़िल् होते समय की दुआ

18- ((بِسمِ اللهِ ولَجنا ، وبِسمِ اللهِ خرجنا ، وعلى ربنا توكلْنـا ، ثُم لِيسلم على أهلِهِ))

१८. अल्लाह के नाम से हम दाख़िल् हुए , अल्लाह के नाम के साथ निकले और अपने रब ही पर हम ने भरोसा किया ।
(अबूदाऊद सहीह सनद् के साथ ४/३२५)

12- मस्जिद की तरफ् जाने की दुआ

19-((اللّٰهم اجعلْ فِى قلْبِى نوراً ، وفِى لِسانِى نوراً ، وفِى سمعِى نوراً ، وفِى بصرِى نوراً ، ومِن فَوقِى نوراً ، ومِن تحتِى نوراً، وعـن يمِينِى نوراً ، وعن شِمالِى نوراً ، ومِن أمامِى نوراً ، ومِن خلْفِى نوراً ، واجعلْ فِى نفْسِى نوراً ، وأعظِم لِى نوراً ، وعظـم لِـى نـوراً ،

واجعلْ لِى نوراً ، واجعلْنِى نوراً ، اللّهم أعطِنِى نوراً ، واجعلْ فِى عصبِى نوراً ، وفِى لحمِى نوراً ، وفِى دمِى نوراً ، وفِى شعرِى نوراً ، وفِى بشرِى نوراً))

१९ . ऐ अल्लाह मेरे दिल् में नूर बना दे और मेरी ज़बान में नूर बना दे और मेरे कानों में नूर बना दे और मेरी आँखों में नूर बना दे और मेरे ऊपर नूर बना दे और मेरे नीचे नूर बना दे और मेरे दाएँ तथा बाएँ नूर बना दे और मेरे आगे तथा पीछे नूर बना दे और मेरे प्राण में नूर भर दे और मेरे लिए नूर को विशाल तथा बहुत अधिक बड़ा बना दे और मेरे बदन में नूर भर दे और मुझे नूर बना दे । ऐ अल्लाह मुझे नूर प्रदान कर और मेरे माँसपेशियों (पट्ठों) में नूर भर दे और मेरे गोश्त में नूर भर दे और मेरे खून में नूर पैदा कर दे और मेरे बालों में नूर बना दे और मेरे चमड़े में नूर भर दे ।

(बुख़ारी हदीस न०– ६३१६ मुस्लिम हदीस न०–७६३)

13- मस्जिद में दाख़िल् होने की दुआ

20- ((أعوذُ باللهِ العظِيمِ وبوجهِهِ الكرِيمِ وسلطانِهِ القَدِيمِ مِن الشيطانِ الرجِيمِ)) (أ)[بِسمِ اللهِ والصلاةُ] (ب)[والسلام علَى رسول اللهِ] (ج) ((اللّهم افْتح لِى أبواب رحمتِك)) (د)

२० . मैं अज़मत् वाले अल्लाह की और उस के करीम चेहरे की और उस के हमेशा से रहने वाले राज्य की पनाह चाहता हूँ मर्दूद शैतान से । अल्लाह के नाम से दाख़िल् होता हूँ और रसूलुल्लाह ﷺ पर दरुद व सलाम हो । ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी रह़मत् के दरवाज़े खोल दे ।

(क) अबूदाऊद देखिए सहीहुल्जामिअ् हदीस न०–४५९१
(ख) इबनुस्सुन्नी हदीस न०–८८ शैख़ अल्बानी (रहि) ने इसे सहीह कहा है ।
(ग) अबूदाऊद १/१२६ देखिए सहीहुल् जामिअ् १/५२८ (घ) मुस्लिम १/४९४ ।

14 - मस्जिद से निकलने की दुआ

21- ((بسم الله والصلاةُ على رسول الله ، اللّهم إني أسئلك مـن فضلك ، اللّهم اعصمني من الشيطان الرجيم))

२१. अल्लाह के नाम के साथ और सलात व सलाम नाज़िल् हो रसूलुल्लाह ﷺ पर । ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरे फज़ल का सवाल करता हूँ । ऐ अल्लाह मुझे मर्दूद शैतान से बचा ।
(देखिए सहीह इब्ने माजा १/१२९)

15 – अज़ान की दुआएँ

22 -मोअज़्ज़िन के जवाब में वही कलिमा कहे जो मोअज़्ज़िन् कह रहा हो परन्तु ((हØया अलस्सलात)) तथा ((हØया अलल् फलाह)) के जवाब में ((लाहौला वाला कूव्वता इल्ला बिल्लाह)) कहे । (बुख़ारी १/१५२ मुस्लिम १/२८८)

23- मोअज़्ज़िन् के ((अश्हदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह और अश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह)) पढ़ने के बाद निम्नलिखित दुआ पढ़े

((وأنا أشهد أنْ لا إله إلاالله وحده لاشريك له وأن محمداً عبـده ورسوله ((رضيت بالله رباً، وبمحمدٍ رسولاً وبالأسلام ديناً))

२३. और मैं भी गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा मअ्बूद नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और मोहम्मद ﷺ उस के बन्दे तथा रसूल हैं । मैं अल्लाह को अपना रब मानकर और मोहम्मद ﷺ को अपना रसूल मान कर और

इस्लाम को अपना दीन मानकर प्रसन्न हूँ । (इब्ने खुजैमा १/२२० मुसिलम १/२९०)

24 – मोअज़्ज़िन् के जवाब से फारिग् हो कर रसूलुल्लाह ﷺ पर सलात (दरुदे मस्नून) पढ़े । (मुस्लिम १/२८८)

25-((اللّهم رب هذه الدعوة التامة والصلاة القائمة آت محمداً الوسيلةَ والفضيلةَ وابعثه مقاماً محموداً الذى وعدته [إنك لا تخلف الميعاد]

२५. ऐ अल्लाह ऐ इस मुकम्मल् दअ्वत् और क़ायम् सलात के रब् । मुहम्मद ﷺ को वसीला और फज़ीलत् प्रदान कर और उसे मक़ामे महमूद पर खड़ा कर जिस का तूने उस से वादा किया है । बेशक् तू वादा खेलाफी नहीं करता । (बुख़ारी १/१५२ दोनों कोस्ट के बीच के शब्द बैहक़ी के हैं इस की सनद् बेहतर है देखिए शैख़ बिन् बाज़ (रहि) की किताब तुहफतुल् अख़्यार)

26- अज़ान और इक़ामत् (तक्बीर) के बीच अपने लिए दुआ करे क्योंकि उस समय दुआ नहीं रद् की जाती । (त्रिमिजी , अबूदाऊद , देखिए इर्वाउल् ग़लील १/२६२)

16 – नमाज़ शुरु करने की दुआ

अल्लाहु अक्बर् कह कर नमाज़ शुरु करे और निम्नलिखित दुआओं में से कोई दुआ पढ़े ।

27–((اللهم باعِد بينى وبين خطاياى كما باعدت بين المشرق والمغرب ، اللهم نقِنى مِن خطاياى ، كما ينقى الثوب الأبيض مِن الدنس ، اللهم اغْسِلنى مِن خطاياى ، بالثلج والماءِ والبردِ))

२७ . ऐ अल्लाह मेरे और मेरे गुनाहों के बीच पूरब तथा पश्चिम जितनी दूरी कर दे । ऐ अल्लाह मुझे मेरे गुनाहों से इस

तरह पाक व साफ कर दे जिस तरह सफेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ किया जाता है । ऐ अल्लाह मुझे मेरे गुनाहों से बरफ् , पानी और ओलों के साथ धो दे । (बुखारी १/१८१ मुस्लिम १/४१९)

28-((سبحانك اللّهم وبحمدِك وتبارك اسمك وتعـالى جـدك ولاإله غيرك))

२८. ऐ अल्लाह तू पाक और पवित्र है हर प्रकार की तारीफ केवल तेरे ही लिए है । बाबरकत् है तेरा नाम और बुलन्द है तेरी शान और तेरे सिवा कोई सच्चा मअ्बूद नहीं ।
(अबूदाऊद , त्रिमिजी , निसाई , इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिज़ी १/७७ और सहीह इब्ने माजा १/१३५)

29-((وجهت وجهى للذى فطر السماواتِ والأرض حنيفاً وما أنا من المشركين إن صلاتى ، ونسكى ، ومحياى ، ومماتى للّـه رب العالمين ، لا شريك له وبذلك أمرت وأنا من المسلمين . اللّهـم أنت الملك لا إله إلا أنت . أنت ربى وأناعبدك ، ظلمت نفْـسي واعترفْت بذنبى فاغْفرلي ذُنوبي جميعاً إنه لا يغفر الذنوب إلا أنت . واهدِني لأحسن الأخلاق لا يهدى لأحسنهاإلا أنـت ، واصـرف عني سيئها، لايصرف عني سيئها إلا أنت لبيك وسعديك ، والخير كُله بيديك والشرليس إليك أنا بك وإليـك تباركْـت وتعاليْـت أستغفرك وأتوب إليك .))

२९. मैं ने अपना चेहरा उस ज़ात की तरफ् फेर लिया एक्सू (एकाग्रचित्) हो कर और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ । मेरी नमाज़ मेरी कुरबानी , मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह रब्बुल्

आलमीन के लिए है। उस का कोई शरीक नहीं और मुझे इसी अक़ीदे पर विश्वास रखने का आदेश दिया गया है और मैं मुसलमानों में से हूँ। ऐ अल्लाह तू ही बादशाह है तेरे सिवा कोई सच्चा मअ्बूद नहीं, तूही मेरा रब् है और मैं तेरा बन्दा हूँ। मैं ने अपने आप पर जुल्म किया है और अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ। इस लिए मेरे सारे गुनाहों को बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई अन्य गुनाहों को नहीं बख़्श सकता। और मुझे सब से अच्छे अख़लाक़ (स्वभाव) की और हिदायत् दे और सब से अच्छे अख़लाक़ की ओर हिदायत् तेरे सिवा कोई नहीं दे सकता। ऐ अल्लाह मैं उपासना के लिए हाजिर हूँ तेरी प्रशंसा के लिए हाजिर हूँ और हर प्रकार की भलाई तेरे हाथों में है और बुराई की निस्बत् तेरी तरफ् नहीं की जा सकती। मैं तेरे साथ हूँ और तेरे तरफ् हूँ तू बरकत् वाला और बुलन्द है। मैं तुझ् से क्षमा माँगता हूँ और तौबा करता हूँ।
(मुस्लिम १/५३४)

30-((اللّهم رب جِبرائيلَ ، ومِيكَائيلَ وإسرافيلَ فَاطِرالـسماواتِ والأرض ، عالِم الغيبِ والشهادةِ ، أنت تحكُم بين عِبـادِك فِيمـا كَانوا فِيهِ يختِلفُونَ . اهدِنى لمااختِلف فِيهِ مِن الحق بِإذْنـك إنـك تهدِي مِن تشاءُ إلى صِراطٍ مستقِيمٍ))

३०. ऐ अल्लाह ऐ जिब्राईल, मीकाईल और इस्राफील के रब् आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, ग़ायब् और हाजिर को जानने वाले अपने बन्दों के बीच तूही उस चीज़ के विषय में निर्णय करेगा जिस में वे इख़्तिलाफ करते थे। हक़् की जिन बातों में इख़्तिलाफ हो गया है तू अपनी अनुमति से मुझे सत्य

की ओर हिदायत् दे दे । निस्सन्देह तू जिसे चाहता है सीधी राह की तरफ् हिदायत् देता है । (मुस्लिम १/५३४)

31-((اللهُ أكْبرُكَبِيراً ، اللهُ أكْبر كَبِيراً ، اللهُ اكْبر كَبِيراً ، والْحمد لِلّهِ كَثِيراً ، والْحمد لِلّهِ كَثِيراً ، والْحمد لِلّهِ كَثِيراً ، وسـبحانَ اللهِ بكْرةً وأصِيلاً))

तीन बार पढ़े **أعوذُباللهِ مِن الشيطَان:مِن نفْخِهِ،ونفْثِهِ ،وهمزِهِ**

३१. अल्लाह सब से बड़ा है और बहुत् बड़ा है । अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा । अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा और हर प्रकार की तारीफ केवल अल्लाह के लिए है बहुत अधिक प्रशंसा । और हर प्रकार की तारीफ केवल अल्लाह के लिए है बहुत अधिक प्रशंसा । और हर प्रकार की तारीफ केवल अल्लाह के लिए है बहुत अधिक प्रशंसा । और अल्लाह पाक है , सुबह् व शाम अल्लाह की पनाह पकड़ता हूँ शैतान से उसकी फूँक से ,उस के थुक्थुकाने से और उस के चोके से । (यानी शैतान के दुर्भावना , षडयन्त्र , मक्र व फरेब तथा वस्वसा से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ) (अबूदाऊद १/२०३ , इब्ने माजा १/२६५ , मुस्नद् अह्मद् ४/८५ और मुस्लिम ने इसे इब्ने उमर (रजि) से रिवायत् किया है कि एक मरतबा हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक आदमी ने कहा ((अल्लाहु अक्बर् कबीरा वल्हम् दुलिल्लाहि कसीरा व सुब्हानल्लहि बुक्रतौं व असीला)) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया फलाँ फलाँ शब्द के साथ दुआ माँगने वाला कौन है ? उपस्थित लोगों में से एक ब्यक्ति ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैं हूँ । आप ﷺ ने फरमाया मुझे इन

शब्दों से तअ़ज्जुब् हुआ कि इन के लिए आसमान के दरवाज़े खोले गए। (मुस्लिम १/४२०)

रसूलुल्लाह ﷺ जब रात को तहज्जुद् के लिए उठते तो निम्नलिखित दुआ पढ़ते।

32-((اللّهم لك الحمد أنت نور السماواتِ والأرض ومن فِيهن ، ولك الحمد أنت قَيم السماواتِ والأرض ومن فِيهن ، [ولك الحمد أنت رب السماواتِ والأرض ومن فِيهن] [ولك الحمد لك ملْـك السماواتِ والأرض ومن فِيهن] [ولك الحمد أنت ملِك السماواتِ والأرض] [ولك الحمد] [أنت الحق ، ووعدك الحق ، وقَولُـك الحق ، ولِقَاءُ ك الحق ، والجنةُ حق ، والنار حق ، والنبِيونَ حق ، ومحمد ﷺ حق ، والساعةُ حق ،] [اللّهم لك أسلمت ، وعليك توكلت ، وبك آمنت ، وإليك أنبت ، وبك خاصـمت ، وإلَيـك حاكمت . فَاغْفِرلي ماقَدمت ، ومأأخرت ، وما أسـررت ، ومـا أعلنت] [أنت المقَدم ، وأنت المؤخرلاإله إلا أنت] أنت إلهي لاإله إلا أنت]

३२. ऐ अल्लाह तेरे लिए ही तारीफ है तूही आसमानों और ज़मीन का नूर है और उन का भी नूर है जो उन में हैं और तेरे ही लिए प्रशंसा है। तू ही आसमानों और ज़मीन को क़ायम् रखने वाला है और उन को भी क़ायम् रखने वाला है जो उन में हैं। और तेरे ही लिए हर प्रकार की तारीफ है तू ही आसमानों और ज़मीन का रब् है और उन का भी रब है जो

उन में हैं। और तेरे ही लिए तारीफ है तेरे ही लिए आसमानों तथा ज़मीन की बादशाही है और जो कुछ उन में हैं। और तेरे ही लिए हर प्रकार की प्रशंसा है तू आसमानों तथा ज़मीन का बादशाह है। और केवल तेरे लिए प्रशंसा है। तूझ से मुलाक़ात हक़् है और जन्नत् हक़् है और जहन्नम् हक़् है और सारे पैग़म्बर हक़् हैं और मुहम्मद ﷺ भी हक़् हैं और क़यामत् हक़् है। ऐ अल्लाह मैं तेरे लिए मुसलमान हुआ और तुझ पर मैं ने भरोसा किया और तुझी पर मैं ईमान लाया और तेरी ही तरफ् रुजूअ् किया और तेरी मदद् तथा तेरे भरोसे पर और तेरे लिए मैं ने दुश्मन् से झगड़ा किया और तुझ को अपना हाकिम् माना। इस लिए मेरे वह गुनाह बख़्श दे जो मैं ने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैं ने छिपा कर किया और जो मैं ने जाहिर में किया। तू ही सब से पहले था और तू ही बाद में भी रहेगा तेरे सिवा कोई सच्चा मअ्बूद नहीं। तू ही मेरा सच्चा मअ्बूद है तेरे सिवा कोई सच्चा मअ्बूद नहीं।

(बुखारी फत्हुल्बारी के साथ ११/४६४ मुस्लिम् १/५३२)

17 - रुकूअ् की दुआएँ

33-((سبحانَ ربي العظيم))

मेरा महान रब् पाक है। (कम से कम तीन बार पढ़े)

((अबूदाऊद , त्रिमिजी , निसाई , इब्ने माजा ,अह्मद् और देखिए सहीह त्रिमिज़ी १/८३))

34- ((سبحانك اللّهم ربنا وبحمدِك اللّهم اغْفِرلي))

३४. ऐ अल्लाह तू पाक है। ऐ हमारे रब् तेरे ही लिए हर प्रकार की प्रशंसा है। ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे।

(बुखारी १/१९९ मुस्लिम १/३५०)

35-((سبوح ، قُدوس ، رب الملائكةِ والروح))

३५. बहुत पाकीज़गी वाला , बहुत मोक़द्दस् है फरिश्तों तथा रुह (जिब्रील) का रब् । (मुस्लिम १/३५३)

36-((اللّٰهم لك ركعت ، وبك آمنت ، ولك أسلمت خشع لك سمعي ، وبصري ، ومخي ، وعظمي ، وعصبي ، ومااستقل به قدمي))

३६. ऐ अल्लाह मैं तेरे ही लिए झुका (रुकूअ् किया) और तुझी पर ईमान लाया और तेरे लिए ईस्लाम धर्म क़बूल किया और तेरे भय से तेरे लिए विनीत हो गए (झुक् गए) मेरे कान , मेरी आँखें , मेरा मग़ज़ , (भेजा) मेरी हड्डियाँ , मेरे पट्ठे और मेरा पूरा बदन जिसे मेरे दोनों पैर उठाए हुए हैं । (मुस्लिम १/५३४ त्रिमिजी , निसाई , अबूदाउद)

37-((سبحانَ ذِي الجبروتِ ، والملكُوتِ ، والكِبرياءِ والعظمةِ))

३७ . पाक है बहुत अधिक शक्ति रखने वाला , बड़े मुल्क वाला और बड़ाई तथा अज्मत् वाला अल्लाह ।
(अबूदाऊद १/२३० निसाई , अह्मद्)

18 - रुकूअ् से उठने की दुआ

38-((سمع اللّٰهُ لمن حمده))

३८. सुन ली अल्लाह ने जिस ने उस की तारीफ की । (बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ २/२८२)

39-((ربناولك الحمد حمداً كثيراً طيباًمباركاً فيه))

३९. ऐ हमारे रब और तेरे ही लिए तमाम तारीफ है , बहुत अधिक तारीफ , पाकीज़ा , जिस में बरकत् की गई हो ।
(बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ २/२८४)

40-((مِلْءَ السماواتِ ومِلْءَ الأرض وما بينهما ومِلْءَ ما شِئْت مِن شيءٍ بعد . أهلَ الثناءِ والمجدِ أحق ما قَالَ العبد وكُلنا لك عبد . اللّهم لامانِع لِما أعطيت ولامعطِي لِما منعت ولا ينفَع ذَالْجد مِنك الْجد))

४०. ऐ अल्लाह ऐ हमारे रब तेरे ही लिए तारीफ है इतनी जिस से आसमान भर जाएँ और ज़मीन भर जाए और उन दोनों के दरमियान भर जाए और इस के बाद जो तू चाहे भर जाए ऐ तारीफ तथा बुज़ुर्गी के लायक़। सब से सच्ची बात जो बन्दे ने कही यही है और हम सब तेरे बन्दे हैं। ऐ अल्लाह जो तू दे तो उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं। किसी शान वाले को उस की शान तेरे यहाँ कोई फाइदा नहीं पहुँचा सकती। (मुस्लिम १/३४६)

19 - सजदे की दुआ

41- ((سبحانَ ربي الأعلى))

४१. मेरा महान रब् पाक है। ((इस दुआ को कम से कम तीन बार पढ़े)) देखिए सहीह त्रिमिज़ी १/८३।

42-((سبحانك اللّهم ربنا وبحمدك اللّهم اغْفِرلي))

४२ . पाक है तू ऐ अल्लाह ऐ हमारे रब् और हर प्रकार की तारीफ तेरे ही लिए है। ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे।
(बुख़ारी तथा मुस्लिम)

43-((سبوح ، قُدوس ، رب الملائكةِ والروح))

४३ . बहुत् अधिक पाक बहुत मोक़द्दस् है फरिश्तों तथा रुह (जिब्रील) का रब्। (मुस्लिम)

44- ((اللّهم لك سجدت وبك آمنت ، ولك أسلمت ، سجد وجهي لِلذِي خلقه وصوره ، وشق سمعه وبصره ، تبارك اللهُ أحسن الخالِقِين))

४४. ऐ अल्लाह मैं ने तेरे लिए ही सजदा किया और तेरे ऊपर ईमान लाया ,तेरा ही फरमाँबर्दार बना । मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए सजदा किया जिस ने उसे पैदा किया , उस की सूरत् बनाई और कानों में सूराख़ बनाए और आँखों के शेगाफ बनाए । बरकत् वाला है अल्लाह जो तमाम बनाने वालों से अच्छा है । (मुस्लिम १/५३४)

45-((سبحانَ ذِي الجبروتِ ، والملكُوتِ ، والكِبرياءِ ، والعظمةِ))

४५ . पाक है बहुत अधिक शक्ति रखने वाला , बड़े मुल्क वाला और बड़ाई तथा अज्मत् वाला अल्लाह ।
(अबूदाऊद १/२३० निसाई , अह्मद्)

46-((اللّهم اغْفِر لِي ذَنبِي كُله ، دِقه وجِلـه ، وأولـه وآخِـره وعلانيته وسِره))

४६ . ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे । मेरे छोटे ,बड़े , पहले पिछले , ज़ाहिर और पोशीदा तमाम गुनाहों को बख़्श दे (मुस्लिम)

47- ((اللّهم إني أعوذُ بِرضاك مِن سخطِك ، وبمعافاتِـك مِـن عقوبتك وأعوذُبك مِنك ، لا أحصِي ثناءً عليك أنت كمـا أثنيـت على نفْسِك))

४७ . ऐ अल्लाह मैं तेरे गुस्से से तेरी प्रसन्नता की पनाह चाहता हूँ और तेरी सज़ा से तेरी माफी की पनाह चाहता हूँ । और मैं तुझ से तेरी ही पनाह चाहता हूँ । मैं पूरी तरह तेरी

तारीफ नहीं कर सकता। तू उसी तरह है जिस तरह तू ने खुद् अपनी तारीफ की है। (मुस्लिम)

20 – दोनों सजदों के बीच की दुआएँ

48 -((رب اغْفِر لِي رب اغْفِر لِي))

४८ . ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे। ऐ मेरे रब् मुझे बख़्श दे।
(अबूदाऊद १/२३१और देखिए सहीह इब्ने माजा १/१४८)

49- ((اَللّٰهم اغْفِر لِي ، وارحمني ، واهدِني ، واجبرني ، وعافِني ، وارزقْني ، وارفَعني))

४९ . ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे और मुझ् पर दया कर और मुझे हिदायत् दे और मेरे नुक़सान पूरे कर दे और मुझे आफियत् दे और मुझे रोज़ी दे और मुझे बुलन्द कर।
(अबूदाऊद , त्रिमिजी , इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिजी १/९० , सहीह इब्ने माजा १/१४८)

21-सजदए तिलावत् की दुआ

50-((سجد وجهي لِلذِي خلقَه وشق سمعه وبصره بحوله وقوته ﴿فَتبارك اللهُ أحسن الخالِقين ﴾))

५० . मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए सजदा किया जिस ने उसे पैदा किया। अपनी ताक़त् व क्षमता से उस के कान में सूराख़ और आँखों के शेगाफ बनाए। अत: बरकत् वाला है अल्लाह जो सब बनाने वालों से अच्छा है।
(त्रिमिजी २/४७४ अहमद् ६/३० और हाकिम् ने इसे रिवायत् करके सहीह कहा है और इमाम ज़ोहरी भी इस बात की पुष्टि की है और ((फतबारकल्लाहु अह्सनुल् ख़ालिक़ीन)) शब्द की बृद्धि भी हाकिम् के हैं।

51- اللّهم اكْتب لي بها عِندك أجراً ، وضع عنـي بهـا وزراً ، واجعلها لي عِندك ذُخراً ، وتقبلْها مِنى كما تقَبلْتها مِن عبدِك داؤد

५१ . ऐ अल्लाह इस सजदे के बदले में अपने पास पुण्य लिख ले और इस के माध्यम से मेरे ऊपर से गुनाहों का बोझ उतार दे और इसे मेरे लिए अपने पास नेकियों का भण्डार बना दे और इसे मेरी तरफ़ से इस तरह क़बूल कर ले जिस तरह् तूने अपने बन्दे दाऊद की ओर से क़बूल किया था । (त्रिमिज़ी २/४७३ और इमाम हाकिम् ने इसे सहीह कहा है ।

22 – तशह्हुद् की दुआ

52- التحيات لِلّهِ ، والصلوات ، والطيبات ، السـلام عليـك أيهاالنبي ورحمةُ اللهِ وبركاتـه ، السـلام علينـاوعلى عِبـادِ اللهِ الصالِحين . أشهد أنْ لا إله إلاالله وأشهد أن محمداً عبده ورسوله

५२ . ज़बान , बदन् तथा माल के माध्यम से की जाने वाली सारी इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं । सलाम हो तुझ पर ऐ नबी और अल्लाह की रह्मत् और उस की बरकतें । सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं । और मैं गवाही देता हूँ कि मुहमम्द ﷺ उस के बन्दे और उस के रसूल हैं । (बुखारी फत्हुल् बारी के साथ ११/१३ और मुस्लिम् १/३०१)

23- दरुद शरीफ

53-((اللّهم صل على محمدٍ وعلى آل محمدٍ ، كما صليت على إبراهيم وعلى آل إبراهيم ، إنك حميد مجيد ، اللّهم بارك علـى

محمدٍ وعلى آل محمدٍ كما باركت على إبراهيم وعلى آل إبراهيم ، إنك حميد مجيد))

५३ . ऐ अल्लाह सलात (दरुद) भेज मुहम्मद् पर और मुहम्मद् की औलाद पर जिस प्रकार तूने सलात भेजी इब्राहीम पर और इब्राहीम की औलाद पर निस्सन्देह तू तारीफ वाला बुजुर्गी वाला है । ऐ अल्लाह बरकत् नाज़िल फरमा मुहम्मद ﷺ पर और मुहम्मद ﷺ की औलाद पर जिस प्रकार तूने बरकत् नाज़िल् की इब्राहीम पर और इब्राहीम की औलाद पर निस्सन्देह तू तारीफ और बुजुर्गी वाला है । (बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ६/४०८)

54-((اللّهم صل علىمحمدٍ وعلي أزواجِهِ وذُريتِهِ ، كما صليت على آل إبراهيم . وبارك على محمدٍ وعلى أزواجِهِ وذُريتِهِ ، كما باركت على آل إبراهيم ،إنك حميد مجيد))

५४. ऐ अल्लाह सलात (दरुद) भेज मुहम्मद ﷺ पर और आप ﷺ की बीवियों तथा औलाद पर जिस प्रकार तूने सलात भेजी इब्राहीम की औलाद पर । और बरकत् नाज़िल् फरमा मुहम्मद् ﷺ पर और उस की बीवियों तथा औलाद पर जिस प्रकार बरकत् नाज़िल् की तूने इब्राहीम की औलाद पर निस्सन्देह तू तारीफ वाला बुजुर्गी वाला है । (बुखारी फतेहुल् बारी के साथ ६/४०७ और मुस्लिम १/३०६ शब्द मुस्लिम के हैं ।

24 – आख़िरी तशह्हुद् के बाद और सलाम फेरने से पहले की दुआएँ ।

55-((اللّهم إني أعوذُبك مِن عذَابِ القَبر ، ومِن عذَابِ جهـنم ، ومِن فِتنةِ المحيا والمماتِ ، ومِن شر فِتنةِ المسِيح الدجال))

५५. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ क़ब्र के अज़ाब से और जहन्नम् के अज़ाब से और ज़िन्दगी तथा मौत के फित्ने से और मसीहे दज्जाल के फित्ने की बुराई से।
(बुखारी २/१०२ और मुस्लिम १/४१२)

56-((اللّهم إني أعوذُبك مِن عذَابِ الْقَبر ، و أعوذُبك مِن فِتنـةِ المسِيح الدجال ، و أعوذُ بك مِن فِتنةِ المحيا والمماتِ . اللّهم إني أعوذُبك مِن المأثَمِ والمغرمِ))

५६. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ क़ब्र के अज़ाब से और तेरी पनाह चाहता हूँ मसीहे दज्जाल के फित्ने से और तेरी पनाह चाहता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फित्ने से। ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ गुनाह से और क़र्ज (ऋण) से। (बुख़ारी १/२०२ तथा मुस्लिम १/४१२)

57- اللّهم إني ظَلمت نفْسِي ظُلْماً كَثِيراً ، ولا يغفِر الـذنوب إلا أنت ، فَاغْفِر لي مغفِرةً مِن عِندِك وارحمنِي إنك أنت الغفُور الرحِيم

५७ . ऐ अल्लाह मैं ने अपनी जान पर बहुत जुल्म किया और तेरे सिवा कोई अन्य गुनाहों को नहीं क्षमा कर सकता। इस लिए मुझे अपने ख़ास फज़्ल से बख़्श दे और मुझ पर दया कर। निस्सन्देह तू बख़्शने वाला बहुत अधिक दया करने वाला है। (बुख़ारी ८/१६८ तथा मुस्लिम् ४/२०७८)

58-((اللّهم اغْفِرلي ماقدمت، وماأخرت ، وما أسـررت ، ومـا أعلنت ، وما أسرفْت ، وما أنت أعلم بِهِ مِني . أنت المقدم ، وأنت الموخرلاإله إلا أنت))

५८ . ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे जो मैं ने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैं ने छिपाकर किया और जो मैं ने जाहिर में किया और जो मैं ने ज़ियादती की और जिसे तू मुझ से ज़्यादा जानता है । तू ही पहले करने वाला है तू ही पीछे करने वाला है । तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं । (मुस्लिम १/५३४)

59-((اللّهم أعِني على ذِكْرِك ، وشكْرِك ، وحسن عِبادتك))

५९. ऐ अल्लाह अपनी याद , अपने शुक्र और अपनी अच्छी इबादत् पर मेरी मदद् फर्मा । (अबूदाऊद २/८६ तथा निसाई ३/५३)

60-((اللّهم إني أعوذُبك مِن البخل ، و أعوذُبك مِن الجـبن ، و أعوذُبك مِن أنْ أرد إلى أرزل العمر ، و أعوذُبك مِن فِتنـةِ الـدنيا وعذَابِ القبر))

६० . ऐ अल्लाह मैं कन्जूसी से तेरी पनाह चाहता हूँ और बुज़दिली से तेरी पनाह चाहता हूँ और इस बात से तेरी पनाह चाहता हूँ कि निकम्मी उम्र की तरफ लौटाया जाऊँ और मैं दुनिया के फित्ने और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ । (बुख़ारी ६/३५)

61-((اللّهم إني أسئلك الجنةَ و أعوذُبك مِن النار))

६१ . ऐ अल्लाह मैं तुझ् से जन्नत् का सवाल करता हूँ और जहन्नम् से तेरी पनाह चाहता हूँ । (अबूदाऊद और देखिए सहीह इब्ने माजा २ / ३२८)

62- ((اللّهم بِعلْمِك الغيب وقُدرتك علي الخلْق أحيِني ما عِلمت الحياةَ خيراً لي وتوفِني إذَا عِلمت الوفَاةَ خيراً لي . اللّهم إنِي أسئلُك خشيتك فِي الغيبِ والشهادةِ ، و أسألُك كَلِمةَ الحق فِي الرضا والغضبِ ، و أسألُك القَصد فِي الغِني و الفَقْر ، و أسألُك نِعيماً لاينفَد ، و أسألُك قَرةَ عين لاتنقَطِع ، و أسألُك الرضا بعد القَضاءِ ، و أسألُك برد العيش بعد الموتِ ، و أسألُك لذةَ النظَر إلى وجهك و الشوق إلى لِقَائك فِي غَير ضراءَ مضِرةٍ ولافتنةٍ مضِلةٍ . اللّهم زينا بِزينةِ الإِيمان واجعلْنا هداةً مهتدِين))

६२ . ऐ अल्लाह मैं तेरे ग़ैब जानने और मखलूक़ पर कुद्रत् रखने के साथ सवाल करता हूँ कि मुझे उस वक़्त तक ज़िन्दा रख् जब तक तू ज़िन्दगी मेरे लिए बेहतर जाने और मुझे उस वक़्त मृत्यु दे जब वफात मेरे लिए बेहतर जाने । ऐ अल्लाह मैं ग़ायब् और हाजिर होने की हालत् में तुझ से तेरे भय का सवाल करता हूँ और प्रसन्न तथा क्रोधित होने की हालत में तुझ से हक़् बात कहने की तौफीक़ का सवाल करता हूँ और तुझ से अमीरी तथा ग़रीबी में मियाना रवी का सवाल करता हूँ और तुझ से ऐसी नेमत् का सवाल करता हूँ जो कभी भी समाप्त न हो और आँखों की ऐसी ठन्ढक् का सवाल करता हूँ जो समाप्त न हो और तुझ से तेरे फैसले पर राज़ी रहने का सवाल करता हूँ और तुझ से मौत के बाद जो जीवन है उस

की ठन्ढक् (प्रफुल्लता) का सवाल करता हूँ और तुझ से तेरे चेहरे की तरफ देखने की लज़्ज़त् और तेरी मुलाक़ात के शौक़ का सवाल करता हूँ बिना किसी तक्लीफदेह मोसीबत् और गुम्राह करने वाले फित्ने के। ऐ अल्लाह हमें ईमान की ज़ीनत् (शोभा) से मुज़øog\ फरमा और हमें हिदायत् देने वाले और हिदायत् पाने वाले बना दे। (निसाई ३/५४ तथा अह्मद् ४/३६४ इस की सनद् अच्छी है।

63- ((اللهم إني أسئلك يا اللهُ بأنك الواحِد الأحد الصمد الـذِي لم يلِد ولم يولد ولم يكُن له كُفُواً أحد أنْ تغفِر لِي ذُنوبِي إنك أنت الغفُور الرحِيم))

६३ . ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के माध्यम से कि तू अकेला , एक तथा बेनियाज़ है जिस ने न किसी को जना और न वह किसी से जना गया है और न ही उस का कोई शरीक व सहीम है कि तू मुझे मेरे गुनाहों को माफ फरमा दे। निस्सन्देह तूही बख़्शने वाला मेहरबान है।
(निसाई ३/५२और अह्मद् ४/३३८ और देखिए शैख़ अल्बानी (रहिमहुल्लाह) की किताब सिफतु सलातुन्नबी पृष्ठ २०४)

64-((اللهم إني أسألك بأن لك الحمد لا إله إلا أنـت وحـدك لاشريك لك،المنانُ،يابـدِيع الـسماواتِ والـأرض يـاذاالجلال والإكْرام،ياحي ياقيوم إني أسألك الجنةَ وأعوذُبك مِن النار))

६४. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के साथ कि तारीफ तेरे ही लिए है , तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं। तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं। बेहद् इह्सान करने वाला। ऐ आसमानों तथा ज़मीन को बनाने वाले , ऐ बुज़ुर्गी

तथा इज़्ज़त् वाले , ऐ ज़िन्दा और क़ायम् रखने वाले मैं तुझ से जन्नत् का सवाल करता हूँ और आग से तेरी पनाह चाहता हूँ। (अबूदाऊद , निसाई , त्रिमिज़ी , इब्ने माजा और देखिए सहीह

65-((اللهم إني أسألك بأني أشهد أنك أنت الله لا إله إلا أنت الأحد الصمد الذي لم يلد ولم يولد ولم يكن له كفواً أحد))

६५. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के माध्यम से कि मैं गवाही देता हूँ कि तूही अल्लाह है तेरे सिवा कोई अन्य इबादत् के लायक़् नहीं। तू अकेला है , बेनियाज़ है जिस से न कोई पैदा हुआ और न तो वह किसी से पैदा हुआ है और न ही कोई उस का शरीक है। (अबूदाऊद २/६२त्रिमिज़ी ५/५१५ इब्ने माजा २/१२६४अह्मद् ५/३६० और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३२९ और सहीह त्रिमिज़ी ३/१६३)

25 – नमाज़ से सलाम फेरने के बाद की दुआयें।

66-((أستغفرالله)) तीन बार

६६. मैं अल्लाह से बख़्शिश् माँगता हूँ।

اللهم أنت السلام ومنك السلام تباركت ياذاالجلال والإكرام

ऐ अल्लाह तू ही सलामती वाला है और तुझी से सलामती है। ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त् वाले तू बड़ी बरकत् वाला है। (मुस्लिम १/४१४)

67-((لا إله إلاالله وحده لاشريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير ، اللهم لامانع لما أعطيت ولا معطي لما منعت ، ولا ينفع ذاالجد منك الجد))

अर्थ :– अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं , वह अकेला है , उसका कोई शरीक नहीं । उसी के लिए बादशाहत् है , और उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है । ऐ अल्लाह जो कुछ तू दे उसको कोई रोकने वाला नहीं , और जिस चीज़ से तू रोकदे उसको कोई देने वाला नहीं और दौलत्मन्द को उसकी दौलत् तेरे अज़ाब से छुट्कारा न देगी ।

68- ((لاَ إِلٰهَ إِلا اللهُ وحده لاَشريك له ، له المُلك ، وله الحمـد وهو علي كُل شيءٍ قَدِير . لاَحولَ ولا قُوةَ إِلابالله ، لاَ إِلٰهَ إِلااللهُ ، ولا نعبد إِلا إِياه ، له النعمةُ وله الفَضلُ و له الثناءُ الحـسن،لا إِلٰهَ إِلا اللهُ مخلِصِين له الدين ولو كَره الكَافِرونَ))

६८ . अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । बादशाही उसी की है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर कुद्रत् रखने वाला है । न बचने की ताक़त् है न कुछ करने की शक्ति मगर अल्लाह की मदद् के साथ । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं । और उस के सिवा हम किसी की इबादत् नहीं करते । उसी के लिए नेमत् है और उसी के लिए फज़्ल और उसी के लिए अच्छी तारीफ है । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं । हम अपनी इबादत् उसी के लिए ख़ालिस् करते हैं चाहे काफिरों को बुरा ही लगे ।

(मुस्लिम १/४१५)

69)((سبحانَ اللهِ ، والحمد لِلّهِ ، واللهُ أَكْبر ३३ बार **لاَ إِلٰـه إِلا اللهُ وحده لاَشريك له ، له المُلك وله الحمد وهو علي كُل شيءٍ قَدِير))**

६९. जो आदमी हर नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े उस के गुनाह माफ कर दिए जाते हैं चाहे वे समुन्द्र के झाग की तरह हों। (मुस्लिम)

70-((﴿ قُلۡ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ۝٢ لَمۡ يَلِدۡ وَلَمۡ يُولَدۡ ۝٣ وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدُۢ ۝٤ ﴾ (الإخلاص 001-004)

﴿ قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلۡفَلَقِ ۝١ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِي ٱلۡعُقَدِ ۝٤ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝٥ ﴾ (الفلق 001-005)

﴿ قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ۝١ مَلِكِ ٱلنَّاسِ ۝٢ إِلَٰهِ ٱلنَّاسِ ۝٣ مِن شَرِّ ٱلۡوَسۡوَاسِ ٱلۡخَنَّاسِ ۝٤ ٱلَّذِي يُوَسۡوِسُ فِي صُدُورِ ٱلنَّاسِ ۝٥ مِنَ ٱلۡجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ ۝٦ ﴾ (الناس 001-006)

हर नमाज़ के बाद एक बार और मग़रिब् तथा फज्र की नमाज़ के बाद तीन बार पढ़ना चाहिए। (अबूदाऊद २/८६ निसाई ३/६८ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/८)

71- हर नमाज़ के बाद आयतल् कुर्सी पढ़े।

﴿ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡحَيُّ ٱلۡقَيُّومُۚ لَا تَأۡخُذُهُۥ سِنَةٞ وَلَا نَوۡمٞۚ لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۗ مَن ذَا ٱلَّذِي يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦۚ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيۡءٖ مِّنۡ عِلۡمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَۚ

وَسِعَ كُرْسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ ۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ ٱلْعَلِيُّ ٱلْعَظِيمُ

﴿ (البقرة 255)

अर्थ :– अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूद(पूजनीय) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला (चिरञ्जीवी) है , सबको क़ायम् रख्ने वाला है । उसको न ऊँघ आती है न नींद आसमान और जमीन की सब चीज़ें उसी की हैं । कोन है जो उस के पास किसी की सिफारिश् (अनुसन्शा) करे उसकी इजाज़त् के बग़ैर । वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उन्के पीछे है , और लोग उसके इल्म से कुछ नहीं घेर (मालूम) सक्ते मगर जितना चाहे अल्लाह , और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने वुस्अत् (घेरे) में ले रक्खा है । और उन दोनों की हिफ़ाजत् उसको थका नहीं सकती और वह बुलन्द है अज़ूमत् वाला है ।))

72-((لا إله إلاالله وحده لاشريك له ، له الملك وله الحمد وهـو على كُل شيءٍ قَدِير))

दस बार मग़्रिब् और फज्र के बाद । (त्रिमिज़ी ५/५१५ अह्मद् ४/२२७)

73-((اللهم إني أسألك عِلماً نافِعاً ، ورزقاً طيباً ، وعملاً متقبلاً

फज्र की नमाज़ का सलाम फेर्ने के बाद ऊपर बयान की गई दुआ पढ़े । (इब्ने माजा और देखिए सहीह इब्ने माजा १/१५२)

26 – इस्तिख़ारा की दुआ

नमाज़े इस्तिखारा का बयान

इस्तिख़ारा कहते हैं किसी काम की भलाई तलब् करना , जब किसी को कोई जायज़् काम मिसाल के तौर पर (उदाहरणार्थ) निकाह , तेजारत , सफर , या किसी नए काम की इब्तिदा (प्रारम्भ) आदि का इरादा हो तो उसको चाहिए कि दो रकात खुशूअ , खुदूअ आजिज़ी वइन्किसारी , इत्मीनान वसुकून से इस्तिख़ारा की नीयत से नमाज़ पढ़े । इस का कोई ख़ास (निश्चित) तरीक़ा नहीं है । आम (साधारण) नमाज़ों की तरह् दो रकात पढ़कर इस्तिख़ारा की यह मश्हूर दुआ पढ़े और अपनी जरूरत ज़ाहिर करे । फिर नमाज़े इस्तिख़ारा और दुआ वग़ैरा के बाद दिल् जिस बात पर मुत्मइन् हो जाए उस पर अ़मल् करे । इस्तिख़ारा केवल् एक बार किया जाता है । एक ही चीज़ या काम के लिए बार बार इस्तिख़ारा करना साबित नहीं । ऐसे ही किसी से इस्तिख़ारा करवाना भी दुरुस्त नहीं । (अनुवादक)

हजरत जाबिर (रजि) फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें तमाम कामों में इस्तिख़ारा करने की तालीम देते जिस तरह हमें कु़रआन की सूरा की तालीम देते आप फर्माते कि तुम में से कोई आदमी जब किसी काम का इरादा करे तो फर्ज़ के सिवा दो रकातें अदा करे फिर यह दुआ पढ़े ।

(اللهم انى أستخيرك بعلمك ؛ وأستقدرك بقدرتك ؛ وأسئلك من فضلك العظيم ؛ فإنك تقدر ولاأقدر ؛ وتعلم ولاأعلم ؛ وأنت علام الغيوب * اللهم إنْ كُنت تعلم أن هذاالأمر خير لى فى دينى ومعاشى وعاقبة أمرى وعاجل أمرى اوآجله فاقدره لى ويسره لى ثُم بارك لى فيه وإنْ كُنت تعلم أن هذاالأمر شرلى فى دينى ومعاشى

وعاقبةَ أمرى وعاجِل أمرى أوآجِلِهِ فَاصرفْه عنى واصـرفْنى عنـه واقْدرلِى الْخير حيثُ كَانَ ثُم أرضِنى بِهِ)) (مسلم)

ऐ अल्लाह मैं तेरे इलम के मदद् से भलाई तलब् करता हूँ और तेरी कुद्रत् की मदद् से कुद्रत् (ताकत्) माँगता हूँ। और तुझ् से तेरा अज़ीम फज़्ल माँगता हूँ। बेशक् तूही कुद्रत् रखता है। और मैं कुद्रत् नहीं रख्ता और तूही जानता है और मैं नहीं जानता । और तूही ग़ैबों (परोक्ष) का जानने वाला है । ऐ अल्लाह अगर तू जानता है कि यह काम (उस काम का नाम ले) मेरे लिए मेरे दीन और मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार में इस दुनिया के लिए या आख़िरत के लिए बेहतर है तो इस काम को मेरे लिए बेहतर करदे और इसको मेरे लिए आसान बना दे फिर मेरे लिए उसमें बरकत् दे । और अगर तू जानता है कि यह काम मेरे दीन और जिन्दगी और अन्जामे कार इस दुनिया के लिए या आख़िरत के लिए बुरा है तो तू इस काम को मुझ् से फेर दे और मुझको उस काम से फेर दे । और मेरे लिए भलाई मुहयया (एकत्रित) करदे वह जहाँ कहीं हो । फिर तू उस काम के लिए मुझ् को राज़ी और आमादा करदे । (मुस्लिम)

27 - सुबह् और शाम के अज़्कार

75-((آية الكرسي))

७५. जो आदमी सुब्ह के समय आयतल् कुर्सी पढ़ ले तो वह शैतान व जिन्नात के शर् व फित्ने से शाम तक के लिए मह्फूज़ हो जाता है और जो आदमी शाम के वक़्त् पढ़ ले तो सुब्ह तक् के लिए शैतान व जिन्नात के शर् व षडयन्त्र से मह्फूज़ हो जाता है ।

76- ﴿ قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدٌۢ ۝٤ ﴾ (الإخلاص 001-004)

﴿ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلْفَلَقِ ۝١ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِى ٱلْعُقَدِ ۝٤ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝٥ ﴾ (الفلق 001-005)

﴿ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ۝١ مَلِكِ ٱلنَّاسِ ۝٢ إِلَٰهِ ٱلنَّاسِ ۝٣ مِن شَرِّ ٱلْوَسْوَاسِ ٱلْخَنَّاسِ ۝٤ ٱلَّذِى يُوَسْوِسُ فِى صُدُورِ ٱلنَّاسِ ۝٥ مِنَ ٱلْجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ ۝٦ ﴾ (الناس 001-006)

जो आदमी ऊपर की तीनों सूरतें सुब्ह के वक़्त् तीन बार पढ़ ले और शाम के वक़्त तीन बार पढ़ ले तो ये सूरतें उस के लिए हर चीज़ के बदले में काफी हैं। (सहीह त्रिमिज़ी ३/१८२)

77- ((أ صبحنا و أ صبح الملك لِلّهِ ، و الحمد لِلهِ ، لاإله إلا اللهُ وحده لاشريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كُل شيءٍ قَدِير ، رب أسألُك خير ما فِى هذااليومِ وخير ما بعده ، و أعوذُ بِك مِن شر ما فِي هذااليومِ وشر ما بعده ، رب أعوذُبك مِن الكَسل ، وسوءِ الكِبر ، رب أعوذُبك مِن عذابٍ فِي النارِ وعذابٍ فِي القبر))

७७ . हम ने सुब्ह़ की और अल्लाह के मुल्क ने सुब्ह़ की [1] और सब तारीफ अल्लाह के लिए है । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । उसी के लिए मुल्क है । और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है । ऐ मेरे रब् आज के इस दिन में जो ख़ैर व भलाई है और जो इस दिन के बाद ख़ैर व भलाई है मैं तुझ से इस का सवाल करता हूँ । [2] और इस दिन के शर (बुराई) से और इस के बाद वाले दिन के शर् से तेरी पनाह चाहता हूँ । ऐ मेरे रब् मैं सुस्ती और बुढ़ापे की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ । ऐ मेरे रब् मैं जहन्नम के अज़ाब और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ ।

(मुस्लिम ४/२०८८)

78-((اللهم بك أصبحنا ، وبك أمسينا ، وبك نحيا ، وبك نموت وإليك النشور))

७८ . ऐ अल्लाह तेरे ही नाम से हम ने सुब्ह़ की और तेरे ही नाम से हम ने शाम की और तेरे ही नाम से हम ज़िन्दा हैं और तेरा ही नाम लेते हुए हम मरेंगे और तेरी ही ओर लौट कर जाना है । (त्रिमिज़ी ५/४४६ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४२)

---

[1] और जब शाम के वक़्त् पढ़े तो यह कहे । أمسينا وأمسى الملك لله

[1] और जब शाम के समय पढ़े तो इस प्रकार कहे ।

رب أسألك خير ما في هذه الليلة وخير ما بعدها و أعوذ بك من شر هذه الليلة وشر ما بعدها))

79-((اللهم أنت ربي لاإله إلا أنت خلقتني و أنا عبدك ، وأنـا علـي عهدك ووعدك مااستطعت ، أعوذبك من شر ما صنعت ، أبـوء لـك بنعمتك علي و أبوءُ بذنبي فاغفر لي فإنه لايغفر الذنوب إلا أنت))

७९.ऐ अल्लाह तू ही मेरा रब् है । तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं । तू ने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं अपनी ताक़त् अनुसार तेरे प्रतिज्ञा तथा वादे पर क़ायम् हूँ । मैं ने जो कुछ किया उस की शर् (बुराई) से तेरी पनाह चाहता हूँ । अपने ऊपर तेरी नेमत् का इक़्रार करता हूँ । और अपने गुनाहों का इक़्रार करता हूँ इस लिए मुझे बख़्शा दे क्योंकि तेरे सिवा कोई दूसरा गुनाहों को नहीं बख़्श सकता ।[3] (बुख़ारी ७/१५०)

80- ((اللهم إني أصبحت أشهدك و أشـهد حملـةَ عرشـك ، وملائكتك وجميع خلقك ، أنك أنت الله لا إله إلا أنـت وحـدك لاشريك لك ، وأن محمداً عبدك ورسولك))

८०. ऐ अल्लाह मैं ने इस हाल में सुब्ह की कि मैं तुझे गवाह बनाता हूँ और तेरा अर्श उठाने वालों को , तेरे फरिश्तों को और तेरी तमाम मख़्लूक़ को गवाह बनाता हूँ कि तू ही अल्लाह है । तू अकेला है । तेरा कोई शरीक नहीं और बेशक् मुहम्मदﷺ

[3] जो आदमी इस दुआ पर यक़ीन रखते हुए शाम को पढ़ ले और उसी रात उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो ऐसा आदमी जन्नत में दाख़िल् होगा और ऐसे ही अगर यह दुआ सुब्ह को पढ़ले और उसी दिन मर जाए तो जन्नत में दाख़िल होगा । (बुख़ारी ७/१५०)

तेरे बन्दे और रसूल हैं। [4] (अबूदाऊद ४/३१७ और इमाम बुख़ारी (रहि) की किताब अल्अद्बुल् मुफ़्रद् हदीस न० = १२०१)

81-((اللهم ما أصبح بي من نعمة أو بأحد من خلقك فمنك وحدك لاشريك لك ، فلك الحمد ولك الشكر))

८१.ऐ अल्लाह मुझ पर या तेरी मख़लूक़ में से किसी पर जिस नेमत् ने भी सुब्ह़ की है वह केवल तेरी तरफ से है। तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं। इस लिए तेरे ही वासते तारीफ है और तेरे ही लिए शुक्र है। (अबूदाऊद ४/३१८ शैख़ इब्ने बाज़ रहि ने इस की सनद् को हसन् कहा है। देखिए तुह़फतुल् अख़्यार पृष्ठ न० = २४)

82-((اللهم عافني في بدني ، اللهم عافني في سمعي ، اللهم عافني في بصري ، لاإله إلا أنت . اللهم إني أعوذ بك من الكفر ، والفقر ، وأعوذبك من عذاب القبر ، لا إله إلا أنت))

तीन बार सुबह् और तीन बार शाम को पढ़ना चाहिए।

८२ . ऐ अल्लाह मुझे मेरे बदन् में आफियत् दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरे कानों में आफियत् दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरी आँखों में आफियत् दे। तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं। ऐ अल्लाह मैं कुफ़्र और फक़्र से तेरी पनाह चाहता हूँ और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक़ नहीं। (अबूदाऊद ४/३२४ अहमद् ५/४२ अमलुल्यौमि वल्लैला निसाई हदीस न०.२२ इस की सनद् हसन् है।)

[4] जो आदमी यह दुआ सुब्ह़ को चार बार या शामको चाह बार पढ़ले तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम से आज़ाद कर देते हैं।(बुख़ारी अदब् मैं)

83 -((حسبي اللهُ لا إله إلا هو عليه توكلت وهو رب العرش العظيم))

सात बार सुबह् सात बार शाम को पढ़ें ।
मुझे अल्लाह ही काफी है । उस के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वह अर्शे अज़ीम का रब् है । (अबूदाऊद ४/३२१)

84-((اللهم إني أسألك العفو والعافية في الدنيا والآخرة ، اللهم إني أسألك العفو والعافية : في ديني ودنياي و أهلي ، ومالي ، اللهم استر عوراتي وآمن روعاتي ، اللهم احفظني من بين يدي ، ومن خلفي ، وعن يميني ، وعن شمالي ، ومن فوقي ، و أعوذ بعظمتك أنْ أغتالَ من تحتي))

८४.ऐ अल्लाह मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत् में आफियत् का सवाल करता हूँ । ऐ अल्लाह मैं अपने दीन अपनी दुनिया अपने परिवार और अपने माल में तुझ से क्षमा और आफियत् का सवाल करता हूँ । ऐ अल्लाह मेरी परदा वाली चीज़ पर परदा डाल दे और मेरी घब्राहटों को सुकून में बदल् दे । ऐ अल्लाह मेरे सामने से मेरे पीछे से मेरे दायें तरफ से और मेरे बायें तरफ से और मेरे ऊपर से मेरी हिफाजत् कर और इस बात से मैं तेरी अज़्मत् की पनाह चाहता हूँ कि अचानक् अपने नीचे से हेलाक किया जाऊँ ।

85-((اللهم عالم الغيب والشهادة فاطر السماوات والأرض ، رب كل شيءٍ ومليكه ، أشهد أنْ لا إله إلا أنت ، أعوذ بك من شر

نفْسِي ، ومِن شرالشيطَان وشِركِهِ ، و أنْ أقْترف علَى نفْسِي سـوءاً أو أجره إِلَى مسلِمٍ))

८५ . ऐ अल्लाह ऐ ग़ैब तथा हाजिर को जानने वाले , आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले हर चीज़ के पालनहार और मालिक ! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत के लायक् नहीं । मैं तेरी पनाह माँगता हूँ अपने नफस् के शर् से और शैतान के शर् एवं उस के शिर्क से और इस बात से कि मैं अपनी जान के विषय में दुरविचार करुँ या किसी अन्य मुस्लिम के बारे में दुरविचार करूँ । (त्रिमिज़ी , अबूदाऊद , और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४२)

86-((بِسمِ اللهِ الذِي لايضر مع اسمِهِ شيءٌ فِي الأرض ولا فِـي السماءِ وهو السمِيع العلِيم)) तीन बार पढ़े

८६.अल्लाह के नाम के साथ जिस के नाम के साथ ज़मीन तथा आसमान में कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुँचाती और वही सुनने वाला तथा जानने वाला है । अबूदाऊद , त्रिमिज़ी और देखिए सहीह इब्नेमाजा २/३३२ [5]

87-((رضِيت بِاللهِ ربا ، وبِالْإِسلامِ دِيناً ، وبِمحمدٍ ﷺ نبِياً))

[5] जो आदमी इस दुआ को सुबह् तीन बार और शाम को तीन बार पढ़ ले उसे कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकती । (सहीह् इब्ने माजा २/३३२)

८७ . मैं अल्लाह पर राज़ी हूँ उस के रब् होने में और इस्लाम पर दीन होने में और मुह़म्मद ﷺ पर नबी होने में । (त्रिमिज़ी ५/४६५ और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१४१) [6]

88-((ياحي ياقيوم برحمتك أستغيثُ أصلح لي شأني كُله ولا تكلني إلى نفْسي طرفةَ عين))

८८. ऐ ज़िन्दा रहने वाले ऐ क़ायम् रखने वाले ! मैं तेरी ही रह़मत् से फरयाद करता हूँ । मेरे तमाम काम दुरुस्त कर दे और आँख झपक्ने के बराबर भी मुझे मेरे नफस् के ह़वाले न कर । (सह़ीह़ तरग़ीब व तरहीब १/२७३)

89-((لا إله إلاالله وحده لاشريك له ، له الملك وله الحمـد وهو على كُل شيءٍ قدِير)) प्रतिदिन १००बार

८९ . अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । उसी का मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है । (बुख़ारी ४/९५ मुस्लिम ४/२०७१)

90-((أصبحنا و أصبح الملك لِلّهِ رب العالمين [7] اللهـم إنـي أسألُك خير هذَا اليوم [8] فتحه ، ونصره ونوره ، وبركته ، وهداه ، و أعوذُبك مِن شر ما فِيه وشر ما بعد ه))

---

[6] जो आदमी इस दुआ को तीन बार सुबह् और तीन बार शाम को पढ़ा करे तो अल्लाह तआला ऐसे आदमी से क़यामत् के दिन राज़ी तथा प्रसन्न होंगे । (मुस्नद् अह़मद् ४/३३७)

[7] और शाम के वक़्त कहे . أمسينا و أمسى الملك لِلّهِ رب العالمين

९० . हम ने सुबह् की और अल्लाह रब्बुल् आलमीन के मुल्क ने सुबह् की । ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस दिन की भलाई इस की फत्ह व मदद् इस की नूर व बरकत् और इस की हिदायत् का सवाल करता हूँ और इस दिन की बुराई तथा इस के बाद वाले दिनों की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूँ । (अबूदाऊद ४/३२२ सनद् ह़सन् है और देखिए ज़ादुल् मआ़द २/३७३)

91- أصبحنا على فِطرةِ الإسلامِ، وعلى كَلِمةِ الإخلاص ، وعلـى دِينِ نبينا محمدٍ ﷺ وعلى مِلةِ أبينا إبراهيم حنيفاً مسلماً وما كـانَ مِن المشركين .

९१ . हम ने फित्रते इस्लाम और कलिमए इख्लास और अपने नबी मुह़म्मद ﷺ के दीन और अपने बाप इब्राहीम की मिल्लत् पर सुबह् की जो ह़नीफ व मुस्लिम थे और वह मुश्रिकों में से न थे । (अह्मद् ३/४०६ सह़ीहुल्जामिअ् ४/२०९)

92- سبحانَ اللهِ وبحمدِهِ १०० बार

93- لاإله إلا اللهُ وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كُل شيءٍ قدِير

९३ . अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक़् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । उसी का मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ।
(इब्ने माजा और देखिए सह़ीह़ इब्ने माजा २/३३१)

---

[8] और शाम के समय कहे :

اللهم إني أسألك خير هذِهِ الليلةِ فتحها ونصرها ونورها وبركتها وهداها و أعوذُبك مِن شر ما فِيها وشر ما بعدها .

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो आदमी सुब्ह के समय इस दुआ को पढ़े तो उस को इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और उस के दस गुनाह माफ किए जायेंगे और दस दर्जे बुलन्द किये जायेंगे और वह शाम तक शैतान के षडयन्त्र से सुरक्षित रहेगा । और अगर शाम को भी यही दुआ पढ़ ले तो सुबह् तक यही फज़ीलत् उसे हासिल् रहेगी ।

94- سبحانَ اللهِ وبحمدِهِ، عدد خلْقِهِ، ورضا نفْسِهِ، وزنةَ عرشِهِ، ومداد كَلِماتِهِ सुबह के वक़्त तीन बार

९४ . अल्लाह पाक है और उसी के लिए हर प्रकार की तारीफ है उस की मखूलूक़ की तादाद के बराबर और उस की अपनी इच्छा अनुसार और उस के अर्श के वज़न् के बराबर और उस के कलिमात (अर्थात अल्लाह का ज्ञान , विद्या तथा उस की हिक्मतें) की सियाही के बराबर । (मुस्लिम ४/२०९०)

95- اللهم إني أسألك عِلماً نافِعاً، ورزقاً طيباً، وعملاً متقبلاً

९५. ऐ अल्लाह मैं तुझ से नफा देने वाले इल्म और पाकीज़ा रोज़ी और क़बूल होने वाले अमल् का सवाल करता हूँ । (सहीह इब्ने माजा १/१५२)

96- أستغفِر الله و أتوب إليه प्रतिदिन १०० बार

९६.मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ तथा उसी से तौबा करता हूँ । (बुख़ारी फतहुल् बारी के साथ ११/१०१ मुस्लिम ४/२०७५)

97- أعوذُ بكلِماتِ اللهِ التاماتِ مِن شر ما خلَق

शाम के वक़्त तीन बार पढ़े ।

९७ . मैं अल्लाह के मुकम्मल् कलिमात के साथ उन तमाम चीज़ों की बुराई से पनाह चाहता हूँ जो उस ने पैदा की हैं ।
(त्रिमिज़ी २/२९० और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८७)

98- ((اللهم صل وسلم على نبينا محمدٍ))

((اللهم صل على محمد وعلى آل محمد كما صليت على ابراهيم وعلى آل ابراهيم انك حميد مجيد - اللهم بارك على محمد وعلى آل محمد كما باركت على ابراهيم وعلى آل ابراهيم انك حميد مجيد))

रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं जो आदमी सुबह् के वक़्त १० बार मुझ पर दरूद व सलात पढ़े और शाम को १० बार पढ़े तो उसे क़यामत के दिन मेरी शफाअत् नसीब होगी । (सहीह् तरग़ीब व तरहीब १/२७३) (लेकिन शर्त यह है कि रसूलुल्लाहﷺ पर दरूद व सलात पढ़ने वाला मोवह्हिद् तथा तौहीद परस्त मुसलमान हो)

28 - सोते समय की दुआएँ

99- قُلْ هو اللهُ أحد ، قُلْ أعوذُ بِرب الفَلَق ، قُلْ أعـوذُ بِـرب الناس

९९ . हर रात जब आप ﷺ सोने के इरादे से बिस्तर पर बैठते तो अपनी दोनों हथेलियों को इकट्ठी करके उन में कुल् हुवल्लाहु अह़द् , कुल् अऊजु बिरब्बिल् फलक् और कुल् अऊजु बिरब्बिन्नास पढ़ कर फूँकते फिर उन दोनों को बदन के जिस जिस हिस्से पर फेर सकते थे फेरते । सर , चेहरा और बदन् के

सामने वाले हिस्से से शुरू फरमाते । इसी प्रकर तीन बार करते । (बुख़ारी फतह् के साथ ९/६२ मुस्लिम ४/१७२३)

100- آية الكُرسِي

१०० . रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि आदमी जब सोने के लिए बिस्तर पर आए और आयतल् कुर्सी पढ़ ले तो अल्लाह की ओर से उस के लिए एक मुहाफिज (निरीक्षक) मोक़र्रर् (नियुक्त) कर दिया जाता है और सुबह् तक उस के क़रीब शैतान नहीं आ सकता । (बुख़ारी फतह् के साथ ४/४८७)

101 ﴿ ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيْهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلْمُؤْمِنُونَ ۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَـٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِۦ ۚ وَقَالُوا۟ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا ٱكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ إِن نَّسِينَآ أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِۦ ۖ وَٱعْفُ عَنَّا وَٱغْفِرْ لَنَا وَٱرْحَمْنَآ ۚ أَنتَ مَوْلَىٰنَا فَٱنصُرْنَا عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْكَـٰفِرِينَ ﴿٢٨٦﴾ ﴾ (البقرة 285-286)

१०१ . जो आदमी सूरा बक़रा के आखिर से दो आयतें रात में पढ़ ले तो उस के लिए ये आयतें काफी हो जायेंगी ।

102 - بِاسمِكَ ربي وضعتُ جنبي وبكَ أرفعه فإنْ أمسكْتَ نفْسِي فارحمها وإنْ أرسلْتها فاحفظْها بما تحفظُ به عِبادكَ الصالحِين

१०२ . तेरे ही नाम से ऐ मेरे रब् मैं ने अपना पहलू (करवट्) रखा और तेरे ही नाम से इसे उठाऊँगा । इस लिए अगर तू

मेरी जान (प्राण) को रोक ले तो उस पर दया तथा कृपा कर और अगर उसे छोड़ दे तो तू उस की हिफाज़त् कर । जैसा कि तू अपने नेक बन्दों की हिफाजत् करता है । (बुखारी ११/१२६ मुस्लिम ४/२०८४)

103- اللهم إنك خلقت نفسي وأنت توفاها لك مماتها ومحياها إنْ أحييتها فاحفظها ، وإنْ أمتها فاغفِر لها . اللهم إني أسألك العافية

१०३ . ऐ अल्लाह तूने ही मेरी जान (प्राण) पैदा की और तूही उसे मृत्यु देगा । तेरी ही हाथ में उस को मारना तथा जिन्दा रखना है । अगर तू इसे जिन्दा रखे तो इस की हिफाज़त् कर और अगर इसे मौत दे तो इसे बख़्श दे । ऐ अल्लाह मैं तुझ से आफियत् का सवाल करता हूँ । (मुस्लिम ४/२०८३)

104- اللهم قِني عذابك يوم تبعثُ عِبادك

१०४ . रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने का इरादा करते तो अपना दायाँ हाथ अपने रुख़सार के नीचे रखते फिर तीन बार ऊपर लिखी गई दुआ पढ़ते ।
अर्थ := ऐ अल्लाह मुझे अपने अज़ाब से बचा जिस दिन तू अपने बन्दों को जमा करेगा । (अबूदाऊद ४/३११ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४३)

105- باسمِك اللهم أموت وأحيا

१०५ . ऐ अल्लाह मैं तेरे ही नाम से मरता हूँ और ज़िन्दा होता हूँ । (बुख़ारी फतह के साथ ११/११३ मुस्लिम ४/२०८३)

106 - سبحانَ اللهِ ، 33 बार والحمد لله ، 33 बार والله أكبر 34 बार

१०६ . रसूलुल्लाह ﷺ ने हजरत अली और हजरत फातिमा (रजियल्लाहु तआला अन्हुमा) से फरमाया क्या मैं तुम दोनों को

वह चीज़ न बताऊँ जो तुम्हारे लिए ख़ादिम् से बेहतर हो । जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो ३३ बार सुब्हानल्लाह कहो और ३३ बार अल्हम्दुलिल्लाह कहो और ३४ बार अल्लाहु अकबर कहो यह तुम्हारे लिए नोकर से बेहतर है । (बुख़ारी फतह के साथ ७/७१ मुस्लिम ४/२०९१)

107- اللهم رب السموات السبع ، ورب العرش العظيم ، ربنا ورب كل شيء ، فالق الحب والنوى ، ومنزل التوراة والإنجيل ، والفرقان ، أعوذ بك من شر كل شيء أنت آخذ بناصيته . اللهم أنت الأول فليس قبلك شيء ، وأنت الآخر فليس بعدك شيء وأنت الظاهر فليس فوقك شيئ ، وأنت الباطن فليس دونك شيء اقض عنا الدين وأغننا من الفقر

१०७ . ऐ अल्लाह । ऐ सातों आसमानों के रब् और अर्शे अज़ीम के रब् । हमारे और हर चीज़ के रब । दाने और गिठली को फाड़ने वाले , तौरात , इनजील और फुरक़ान नाज़िल् करने वाले ! मैं हर उस चीज़ की बुराई तथा शर् से तेरी पनाह चाहता हूँ जिस की पेशानी तू पकड़े हुए है । ऐ अल्लाह ! तू ही अव्वल् है पस् तुझ् से पहले कोई चीज़ नहीं और तूही आख़िर है पस् तेरे बाद कोई चीज़ नहीं । तू ही ज़ाहिर है पस् तुझ से ऊपर कोई चीज़ नहीं और तू ही बातिन् है पस् तेरे पीछे कोई चीज़ नहीं । हमारा क़र्ज अदा करवा दे और हमें मुहताजगी के बदले में ग़नी कर दे । (मुस्लिम ४/२०८४)

108- الحمد لله الذي أطعمنا، وسقانا ، وكفانا ، وآوانا، فكم ممن لا كافي له ولا مؤوي

१०८ . सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने हमें खिलाया और पिलाया और हमें काफी हो गया और हमें जगह दी पस् कितने ही लोग ऐसे हैं जिन्हें कोई किफायत् करने वाला नहीं न कोई जगह देने वाला है । (मुस्लिम २०८५)

109- اللهم عالِم الغيبِ والشهادةِ فَاطِر السمواتِ والأرض رب كُل شيءٍ ومليكه أشهد أن لا إله إلا أنت أعوذُ بك مِن شر نفْسِي ، ومِن شر الشيطَان وشِركِهِ وأنْ أقْترف علَى نفْسِي سوءاً أو أجره إِلَى مسلِمٍ

१०९. ऐ अल्लाह ऐ ग़ैब तथा हाजिर को जानने वाले , आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले हर चीज़ के पालनहार और मालिक ! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत के लायक् नहीं । मैं तेरी पनाह माँगता हूँ अपने नफस् के शर् से और शैतान के शर् एवं उस के शिर्क से और इस बात से कि मैं अपनी जान के विषय में दुरविचार करुँ या किसी अन्य मुस्लिम के बारे में दुरविचार करूँ । (त्रिमिज़ी , अबूदाऊद , और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४२)

110- يقْرأ ﴿الٓمٓ﴾ تنزيلَ السجدةِ وتبارك الذِي بِيدِهِ الملْك

११०. आप ﷺ उस समय तक नहीं सोते थे जब तक

﴿الٓمٓ﴾ تنزيلَ السجدةِ وتبارك الذِي بِيدِهِ الملْك

न पढ़ लेते थे । (त्रिमिज़ी , निसाई और देखिए सहीहुल् जामिअ़ ४/२५५)

111- اللهم أسلمت نفْسِي إِلَيك ، وفَوضت أمرِي إِلَيك ، ووجهت وجهِي إِلَيك ، وألْجأت ظَهرِي إِلَيك ، رغْبةً ورهبةً إِلَيك ،

لا ملجأ ولا منجا مِنك إلا إليك ، آمنت بِكِتابِك الـذِي أنزلـت وبِنبِيك الذِي أرسلت

१११. ऐ अल्लाह मैं ने अपने नफ़्स (प्राण) को तेरे हवाले कर दिया और अपना काम तेरे सिपुर्द कर दिया और अपना चेहरा तेरी तरफ फेर लिया और अपना सब कुछ तेरे हवाले कर दिया । तेरी तरफ रग़बत् करते हुए और तुझ से डरते हुए । तेरे दर के सिवा न कोई पनाह की जगह है और न भाग कर जाने की मगर तेरी तरफ । मैं ईमान लाया तेरी किताब पर जो तूने उतारी और तेरे नबी पर जो तूने भेजा । (बुख़ारी फत्हुल् बारी के साथ ११/११३ मुस्लिम ४/२०८१)☐

29 - रात को कर्वट् बदल्ते समय की दुआ

११२. हजरत आइशा (रजि) फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ रात को जब करवट् बदलते तो यह दुआ पढ़ते थे ।

112- لاإله إلا الله الواحِد القهار ، رب السمواتِ والأرض ومـا بينهما العزيز الغفار

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़् नहीं । जो अकेला तथा शक्तिशाली है । आसमानों और ज़मीन और उन के बीच की सारी चीज़ों का रब जो बहुत इज़्ज़त् वाला बहुत क्षमा करने वाला है । (इसे हाकिम् ने रिवायत् करके सहीह़ कहा है और देखिए सहीहुल् जामिअ् ४/२१३)

30 – नींद में बेचैनी और घब्राहट् तथा वह्शत् की दुआ ।

113- أعوذُ بِكَلِماتِ اللهِ التاماتِ مِن غَضبِهِ وعِقَابِهِ ، وشر عِبادِهِ ، ومِن همزاتِ الشياطِين وأنْ يحضرونَ

११३ . मैं अल्लाह के सम्पूर्ण कलिमात की पनाह पकड़ता हूँ उस के ग़ुस्से और उस की सज़ा से और उस के बन्दों के शर् से और शैतानों के चोकों से और इस बात से कि वे मेरे पास हाज़िर हों । (अबूदाऊद ४/१२ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१७१)

31- कोई आदमी बुरा ख़वाब (स्वप्न) देखे तो क्या करे ?

114- ينفُثُ عن يسارِهِ ، يستعِيذُ بِاللهِ مِن الشيطان ومِن شر مـا رأى ، لا يحدثُ بِها أحداً يتحولُ عن جنبِهِ الذِي كَانَ علَيهِ

(१) बायें तरफ् तीन बार थूके । (मुस्लिम ४/१७७२)
(२) शैतान और अपने इस ख़वाब की बुराई से तीन मरतबा अल्लाह की पनाह माँगे । (मुस्लिम ४/१७७२=१७७३)
(३) किसी को वह ख़वाब न सुनाए । (मुस्लिम ४/१७७२)
(४) जिस पहलू पर वह लेटा हो उसे बदल् दे । (मुस्लिम ४/१७७३)

115- يقُوم يصلي إنْ أراد ذَلك

११५ . (५) अगर इच्छा हो तो उठ कर नमाज़ पढ़े । (मुस्लिम)

32- कुनूते वित्र की दुआएँ ।

116- اللهم اهدِني فِيمن هديت ، وعافِني فِيمن عافَيت ، وتولِني فِيمن توليت ، وبارك لِي فِيما أعطَيت ، وقِني شر ما قَضيت ، فَإنك

تقْضِي ولا يقْضى عليك ، إنه لا يذِل من واليت ، [ولا يعِز من عاديت] ، تباركْت ربنا وتعاليت ،

११६. ऐ अल्लाह तू ने जिन लोगों को हिदायत् दी है उन्हीं हिदायत याफता लोगों में से मुझे भी कर दे और जिन लोगों को तूने आ़फियत् दी है उन्हीं के साथ मुझे भी आ़फियत् दे और जिन का तू वाली बना है उन्हीं के साथ साथ मेरा भी वाली बन जा , और तूने जो कुछ मुझे प्रदान किया है उस में मेरे लिए बरकत् दे , और जो फैसले तूने किए हैं उन की बुराई से मुझे मह्फूज रख् । क्योंकि तू ही फैसला करने वाला है और तेरे विरुद्ध कोई भी फैसला नहीं कर सकता । जिस का तू दोस्त बन जाए वह कभी रुस्वा नहीं हो सकता , और जिस का तू दुश्मन बन जाए उसे कोई इज़्ज़त् नहीं दे सकता । ऐ हमारे रब् तू ही इज्जत् वाला और बुलन्द है । (सही़ह त्रिमिज़ी १/१४४ और सही़ह इब्ने माजा १/१९४)

117 - اَللهم إني أعوذُ بِرضاك مِن سخطِك ، وبمعافاتك مِن عقُوبتك وأعوذُ بِك مِنك ، لا أُحصِى ثَناءً عليك أنت كما أثْنيت على نفْسِك))

११७. ऐ अल्लाह मैं तेरी नाराज़गी से भाग कर तेरी प्रसन्नता की ओर पनाह पकड़ता हूँ और तेरी सज़ा से क्षमा माँगते हुए तेरी बख़्शिश् का तलब्गार हूँ , और तुझ से तेरी ही पनाह चाहता हूँ । मैं तेरी पूरी तारीफ बयान करने की ताक़त् नहीं रखता । तू उस तरह है जिस तरह तूने खुद् अपनी तारीफ की है । (सही़ह त्रिमिज़ी ३/१८० और सही़ह इब्ने माजा १/१९४)

118- اللهم إياك نعبد ، ولك نصلي ونسجد ، وإليك نسعى ونحفِد ، نرجو رحمتك ، ونخشى عذابك ، إن عذابك بالكافرين ملحق . اللهم إنا نستعينك ، ونستغفرك ، ونثني عليك الخير ، ولا نكفُرك ، ونؤمن بك ، ونخْضع لك ، ونخلع من يكْفُرك .

११८. ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत् करते हैं । तेरे लिए ही नमाज़ पढ़ते और सजदा करते हैं । तेरी तरफ ही कोशिश् और जलदी करते हैं । तेरी रहमत् की आशा रखते हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं । तेरा अज़ाब अवश्य काफिरों को मिलने वाला है । ऐ अल्लाह हम तुझ से मदद् माँगते हैं । तुझी से बख़शिश् माँगते हैं । तेरी अच्छी तारीफ करते हैं । तुझ से कुफ्र नहीं करते और तुझ पर ईमान रखते हैं और तेरे सामने झुकते हैं और जो तुझ से कुफ्र करे हम उस से अपना सम्बन्ध समाप्त करते हैं ।

(शैख़ अल्बानी (रहि) अपनी किताब इर्वाउल् ग़लील में फरमाते हैं कि इस की सनद् सहीह है २/१७० और यह दुआ हजरत उमर (रजि) के क़ौल से साबित है रसूलुल्लाह ﷺ से नहीं)

33- वित्र का सलाम फेरने के बाद की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ वित्र में ((सब्बिहिस्मा रब्बिकल् आ़ला)) और ((कुल् या अय्युहल् काफिरून)) और ((कुल् हुवल्लाहु अहद्)) पढ़ते और जब सलाम फेरते तो तीन बार कहते :–

119- سبحانَ المَلِكِ القُدوس [رب الملائكةِ والروح]

११९ . पाक है बहुत पाकीज़गी वाला बादशाह । फरिश्तों और जिब्रील का रब् । नोट :– तीसरी बार यह दुआ ऊँची आवाज़

से पढ़ते और आवाज़ लम्बी करते । (निसाई ३/२४४ बरेकिट के बीच के शब्द दारकुतनी के हैं सहीह सनद् के साथ)

34- ग़म् (चिन्ता) और फिक्र से मुक्ति पाने की दुआ

120 - اللهم إني عبدك، ابن عبدك، ابن أمتك، ناصيتي بيدك، ماض في حكمك ، عدلٌ في قضاؤك، أسألك بكل اسم هو لك، سميت به نفسك، أو أنزلته في كتابك ، أو علمته أحداً من خلقك،أو استأثرت به في علم الغيب عندك، أنْ تجعلَ القُرآنَ ربيع قلبي ، ونور صدري، وجلاء حزني، وذهاب همي

१२० . ऐ अल्लाह मैं तेरा बन्दा हूँ । तेरे बन्दे और तेरी बन्दी का बेटा हूँ । तेरा हुकम मुझ में जारी है । मेरे बारे में तेरा फैसला न्यायपूर्ण है । मैं तुझ से तेरे हर उस ख़ास नाम के माध्यम से सवाल करता हूँ जो तूने खुद अपना नाम रखा है या उसे अपनी किताब में नाज़िल किया है या अपनी मख़्लूक़ में से किसी को सिखाया है या तूने उसे अपने इलमे ग़ैब में महफ़ूज़ कर रखा है यह कि तू कुरआन को मेरे दिल की बहार और मेरे सीने का नूर और मेरे ग़म् को दूर करने वाला और मेरी चिन्ता को समाप्त करने वाला बना दे । (मुस्नद् अहमद् १/३९१ शैख़ अल्बानी (रहि) ने इस दुआ को सहीह कहा है ।

121 - اللهم إني أعوذُ بك من الهم والحزن ، والعجز والكسل، والبخل والجبن ، وضلع الدين ، وغلبة الرجال

१२१ . ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ चिन्ता और ग़म् से और आ़जिज़् हो जाने तथा सुस्ती व काहिली से और बुख़ल् (

कन्जूसी) तथा बुज़्दिली से और क़र्ज (ऋण) के चढ़ जाने से तथा लोगों (हाकिमों) के अत्याचार तथा आक्रमर्ण से ।
(बुख़ारी ७/१५८ रसूलुल्लाह यह दुआ अधिक से अधिक किया करते थे । देखिए बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ११/१७३)

35 – बेक़रारी तथा बेचैनी की दुआ

122- لاإله إلا الله العظيم الحليم ، لا إله إلا الله رب العرش العظيم ، لاإله إلا الله رب السموات ورب الأرض ورب العرش الكريم

१२२ . अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत् के लायक़ नहीं । वह अज़्मत् वाला तथा बुर्दबार है । अल्लाह के अतिक्ति कोई इबादत् के लायक् नहीं जो विशाल अर्श का रब् है । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं जो आसमानों का रब् और ज़मीन का रब् और अर्शे करीम का रब् है । (बुख़ारी ७/१५४ मुस्लिम ४/२०९२)

123- اللهم رحمتك أرجو فلا تكلني إلىَ نفْسي طرفة عين وأصلح لي شأني كُله ، لا إله إلا أنت

१२३. ऐ अल्लाह मैं तेरी रहमत् ही की आशा रखता हूँ । इस लिए तू मुझे पलक् झपक्ने के बराबर भी मेरे नफ्स (आत्मा) के हवाले न कर और मेरे लिए मेरे तमाम काम दुरुस्त कर दे । तेरे सिवा कोई भी इबादत् के लायक़ नहीं । (अबूदाऊद ४/३२४ अहमद् ५/४२ शैख़ अल्बानी रहि ने इसे हसन् कहा है ।

124- لا إله إلا أنت سبحانك إني كُنت من الظالمين

१२४. तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक़ नहीं , तू पाक है । निस्सन्देह मैं ज़ालिमों में से हूँ । (त्रिमिज़ी ५/५२९ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१६८)

125- اللهُ اللهُ ربي لا أشركُ بِهِ شيئاً

१२५ . अल्लाह अल्लाह मेरा रब् है मैं उस के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करता । (अबूदाऊद २/८७ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३३५)

36 – दुश्मन् तथा शासन् अधिकारी से मुलाक़ात के समय की दुआ ।

126- اللهم إنا نجعلكَ فِي نحورِهِم ونعوذُ بِكَ مِن شرورِهِم

१२६ . ऐ अल्लाह हम तुझी को उन के मुक़ाबिले में करते हैं और उन की शरारतों से तेरी पनाह चाहते हैं । (अबूदाऊद २/८९ हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने भी इस पर अपनी सहमति व्यक्त की है २/१४२)

127- اللهم أنت عضدِي ، وأنت نصِيرِي ، بِكَ أجُولُ وبِكَ أصولُ وبِكَ أقاتِلُ

१२७. ऐ अल्लाह तू ही मेरे बाजुओं में शक्ति पैदा करने वाला है और तू ही मेरा मददगार है । तेरे निगरानी में ही मैं घूमता फिरता हूँ और तेरा नाम ले कर मैं हमला आवर होता हूँ और तेरी सहायता से ही मैं दुश्मनों से लड़ता हूँ । (अबूदाऊद ३/४३ त्रिमिज़ी ५/५७२ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८३)

128- حسبنا اللهُ ونعم الوكِيلُ

१२८ . हमारे लिए अल्लाह ही काफी है और वह बहुत बड़ा कारसाज़ है । (बुख़ारी ५/१७२)

37 – शासक् के अत्याचार से बचने की दुआ

129- اللهم رب السمواتِ السبع، ورب العرشِ العظِيمِ، كُن لِي جاراً مِن فُلان بن فُلانٍ، وأحزابِهِ مِن خلائِقِك، أنْ يفْرطَ علي أحـد مِنهم أو يطْغى، عز جارك، وجل ثَناؤك، ولا إِله إِلا أنت

१२९. ऐ अल्लाह । ऐ सातों आसमानों के रब् और विशाल अर्श के रब् मेरे लिए फलाँ फलाँ के विरुद्ध सहायक बन जा और उन सब के जत्थों के विरुद्ध जो तेरी सृष्टि में से हैं । इस बात से कि कोई मेरे ऊपर आक्रमण करे या अत्याचार करे । जिस की तू सहायता करे वही विज्यी होगा और तेरे लिए अधिक प्रशंसा है और तेरे सिवा कोई पूजनीय नहीं । (सहीह अद्बुल् मुफ्रद् ५४५)

130- اللهُ أكْبر، اللهُ أعز مِن خلْقِهِ جمِيعاً، اللهُ أعز مِما أخـاف و أحذَر، أعوذُ باللهِ الذِي لا إِله إِلا هو، الممسِكِ السمواتِ السبع أنْ يقَعن علَى الأرض إِلا بِإِذْنِه، مِن شر عبدِك فُلانٍ، وجنودِهِ وأتباعِـهِ وأشياعِهِ، مِن الجِن والإِنس، اللهم كُن لِي جاراً مِن شرهِم، جـل ثَناؤك وعز جارك، وتبارك اسمك، ولا إِله غَيرك

१३०. अल्लाह महान है । अल्लाह अपनी मख़लूक़ात में सब से सर्वश्रेष्ठ है । मैं जिस चीज़ से डरता और भयभीत हूँ अल्लाह उस से कहीं अधिक सर्वशक्तिमान है । मैं अल्लाह के पनाह में आता हूँ जिस के सिवा कोई भी पूजनीय नहीं । जो सातों आसमानों को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है परन्तु उस की अनुमति से तेरे फलाँ बन्दे के शर् की वजह से और उस के लश्करों चेलों चापटों तथा जत्थों की बुराई ओर षडयन्त्र के कारण जिन्नातों तथा इन्सानों में से । ऐ अल्लाह तू मेरे लिए उन के विरुद्ध सहायक बन जा । तू महान है और जिस का तू

सहायक बन जाए वह कामियाब हो गया और तेरा नाम उच्च है और तेरे सिवा कोई भी पूजनीय नहीं । (सहीहुल् अद्बिल् मुफ्रद् ५४६)

38 – दुश्मन् पर बद्दुआ

131 - اللهم منزلَ الكِتابِ، سريع الحِسابِ، اهـزِمِ الأحـزابِ، اللهم اهزمهم وزلزلهم

१३१. ऐ अल्लाह ! ऐ किताब उतारने वाले , जलदी हिसाब लेने वाले इन जमाअतों को पराजित कर दे ((अर्थात शिकश्त दे दे)) ऐ अल्लाह इन्हें पराजित कर दे और इन्हें सख़त झिंझोड़ दे । (मुस्लिम ३/१३६२)

39 – जब किसी क़ौम से डरता हो तो क्या कहे

132- اللهم اكْفِنيهم بِما شِئْت

१३२ . ऐ अल्लाह मुझे इन से काफी हो जा जिस चीज़ के साथ तू चाहे । (मुस्लिम ४/२३००)

40 – जिसे अपने ईमान में शक् होने लगे तो वह निम्नलिखित दुआ पढ़े ।

133- يستعِيذُ بِاللهِ ، ينتهِي عما شك فِيهِ

१३३ . (१) अल्लाह की पनाह माँगे । (बुख़ारी ६/३३६)
(२) जिस चीज़ में शङ्का उत्पन्न हो रहा है उस विषय में और अधिक सोच विचार करना छोड़ दे । (बुख़ारी ६/३३६ मुस्लिम १/१२०)
(३) निम्नलिखित दुआ पढ़े ।

134- آمنت بِا للهِ ورسلِهِ

मैं ईमान लाया अल्लाह और उस के रसूलों पर । (मुस्लिम १/११९/१२०)
(४) अल्लाह का यह फरमान पढ़े ।

135- هو الأولُ ، والآخِر ، والظاهِر، والباطِن، وهو بكُل شيءٍ علِيم

वही अव्वल् है वही आख़िर है वही जाहिर है वही बातिन् है और वह हर चीज़ को जानने वाला है । (अबूदाऊद ४/३२९ शैख़ अल्बानी (रहि) ने इसे हसन् कहा है ।

41 – क़र्ज (ऋण) की अदायगी के लिए दुआ ।

136- اللهم اكْفِني بِحلالِك عن حرامِك وأغْنِني بِفضلِك عمن سِواك

१३६. ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी हलाल चीजों को अपनी हराम चीज़ों के विरुद्ध प्रयाप्त कर दे और मुझे अपने फज़ल व करम् के ज़रिया अपने सिवा सभी लोगों से ग़नी कर दे । (त्रिमिज़ी ५/५६० देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८०)

137 - اللهم إني أعوذُ بِك مِن الهم ، والحزن ، والعجز والكسل والبخل والجبن ، وضلع الدين وغَلَبةِ الرجال

१३७ . ऐ अल्लाह मैं चिन्ता और ग़म् से , और आजिज़ी तथा सुस्ती से और बख़ीली (कन्जूसी) तथा बुज़्दिली से और अपने ऊपर क़र्ज (ऋण) चढ़ जाने से और लोगों के आक्रमण तथा अत्याचार से तेरी पनाह चाहता हूँ ।

42 – नमाज़ में या क़ुरआन पढ़ते समय उत्पन्न होने वाले वस्वसों से बचने की दुआ ।

138- أعوذُ بالله مِن الشيطان الرجِيم ، واتفُلْ على يسارك

१३८. हजरत उसमान बिन आ़स (रजि) फरमाते हैं कि मैं ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल ! शैतान मेरे तथा मेरी नमाज़ और क़ेरात के बीच रुकावट् बन जाता है । इस प्रकार कि वह नमाज़ की तादाद और क़ेरात मुझ पर ख़लत् मलत् कर देता है । रसूलुल्लाह ﷺ ने उत्तर दिया कि वह ऐक शैतान है जिस का नाम ख़िन्ज़ब् है जब तुम उसे महसूस करो तो तीन बार उस से अल्लाह की पनाह माँगों और बायें तरफ् तीन बार थुत्कार दो । (मुस्लिम ४/७२९ इस रिवायत में उस्मान (रजि) फरमाते हैं कि मैं ने ऐसा ही किया तो अल्लाह तआला ने उसे मुझ से दूर कर दिया ।

43 – उस आदमी की दुआ जिस पर कोई काम मुश्किल् तथा कठिन् हो जाए ।

139-اللهم لا سهلَ إلا ما جعلْته سهلاً وأنت تجعلُ الحـزنَ إذَا شِئْت سهلاً

१३९ . ऐ अल्लाह कोई काम आसान नहीं मगर जिसे तू आसान कर दे और तू जब चाहता है तो मुश्किल् को आसान कर देता है । (सहीह इब्ने हिब्बान हदीस न० – ४२७)

44 – गुनाह कर बेठे तो कौन्सी दुआ पढ़े और क्या करे ?

140- ما مِن عبدٍ يذْنب ذَنباً فَيحسِن الطهور، ثُم يقُـوم فَيـصلي ركْعتين، ثُم يستغفِر اللهَ إلا غَفَر اللهُ لَه

१४० . रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब किसी बन्दे से गुनाह सरज़द् हो जाए फिर अच्छी तरह् वुज़ू करे फिर दो रकात

नफ्ली नमाज़ पढ़े फिर अल्लाह से बख़्शिश् की दुआ माँगे तो अल्लाह तआला ऐसे बन्दे को बख़्श देते हैं । (अबूदाऊद २/८६ त्रिमिज़ी २/२५७ और देखिए सहीहुल् जामिअ् ५/१७३)

45 – वह दुआएँ जो शैतान और उस के वस्वसों को दूर करती हैं ।

141 - الاستعاذة بالله منه

१४१ . (१) शैतान से अल्लाह की पनाह माँगना । (अबूदाऊद १/२०६ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी १/७७ और देखिए सूरा अलेमूमिनून आयत् न० –९८ , ९९)

142 - الأذانُ

१४२ . (२) अज़ान । (मुस्लिम १/२९१ बुख़ारी १/१५१)

143 - الأذكار وقراءة القرآن

१४३. (३) मस्नून दुआएँ और कुरआन की तेलावत् ।

((रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि अपने घरों को क़बरें न बनाओ , शैतान उस घर से भागता है जिस में सूरा बक़रा पढ़ी जाये । (मुसिलम १/५३९) और सुबह व शाम तथा सोने जागने की दुआयें घर में दाख़िल् होने और निकल्ने की दुआएँ , मस्जिद में दाख़िल् होने और निकल्ने की दुआएँ भी शैतान को भगाती हैं । इसी प्रकार दूसरी मस्नून दुआएँ जैसे सोते समय आयतल् कुर्सी पढ़ना , सूरा बक़रा की आख़िरी दो आयतें पढ़ना और जो आदमी सौ बार पढ़े ((लाइलाहा इललल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् ह़म्दु वहुवा अला कुल्लि शैइन् क़दीर)) तो पूरा दिन शैतान से महफ़ूज़ रहेगा । इसी प्रकार अज़ान शैतान को भगाती है ।

46 – जब कोई ऐसा वाक़िआ हो जाए जो उस की इच्छा और मर्ज़ी के विरुद्ध हो या कोई काम उस की ताक़त् ,शक्ति और क्षमता से बाहर हो जाए तो क्या कहे ?

144- قَدرالله وما شاءَ فَعلَ

१४४ . रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : ताक़त्वर मोमिन् कम्ज़ोर मोमिन् से बेहतर है और दोनों में भलाई है जो काम तुम्हें नफा दे उस की इच्छा और अभिलाषा करो और अगर तुम्हें कोई नुक़्सान पहुँच जाए तो यह मत् कहो कि ((अगर मैं इस तरह् करता तो यह हो जाता)) बल्कि यूँ कहो **قَدر اللهُ وما شاءَ فَعلَ** अल्लाह ने जो तक़दीर में लिखा था वह हुआ और अल्लाह ने जो चाहा किया । क्योंकि ((अगर)) का शब्द शैतान का काम शुरू कर देता है । (मुस्लिम ४/२०५२)

(२) रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि अल्लाह तआला आजिज़् रह् जाने और हिम्मत् हार देने पर मलामत् करता है लेकिन् तुम दानाई तथा होशियारी का दामन् पकड़े रहो और जब कोई काम तुम्हारे क्षमता से बाहर हो जाए तो कहो **حسبي الله ونعم الوكيـل** मेरे लिए तो केवल अल्लाह ही काफी है और वह बहुत अच्छा कारसाज़ है । (अबूदाऊद)

47 – जिस के यहाँ कोई औलाद पैदा हो उसे किस प्रकार मुबारक्बाद (दुआ) दी जाए और जिसे मुबारक्बादी दी जा रही हो वह मुबरक्बाद देने वाले के लिए क्या कहे ?

145- بارك اللهُ لك فِي الموهوبِ لك، وشكرت الواهِب، وبلـغَ أشده، ورزقْت برِه.

१४५ . अल्लाह ने तुझे जो सन्तान प्रदान किया है उस में बरकत् दे । औलाद देने वाले अल्लाह का शुक्र अदा कर । अल्लाह उसे जवान करे और उस के माध्यम से तुझे लाभ पहुँचाये ।

जिसे मुबरक्बादी दी जा रही हो वह मुबारक्बाद देने वाले के लिए इस प्रकार दुआ करे ।

بارك اللهُ لك وبارك عليك، وجزاك اللهُ خيراً، ورزقَـك اللهُ مِثْلَـه، وأجزلَ ثَوابك .

अल्लाह तेरे लिए और तेरे ऊपर बरकत् दे और अल्लाह तुझे बेहतरीन बदला दे और जैसे अल्लाह ने मुझे औलाद से नवाज़ा है तुझे भी नवाज़े और तुझे बहुत अधिक सवाब दे ।

48 – बच्चों को कोन से कलिमात के साथ पनाह दी जाए ।

१४६ . हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि) फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हसन् और हुसैन को इन कलिमात के साथ पनाह दिया करते थे

146-أُعِيذُكُما بِكَلِماتِ اللهِ التامةِ مِن كُل شيطَانٍ وهامةٍ ، ومِـن كُل عينٍ لامةٍ

मैं तुम दोनों को हर शैतान और ज़हरीले जानवर से और हर लग् जाने वाली नज़र से अल्लाह के मुकम्मल् कलिमात के साथ पनाह देता हूँ । (बुख़ारी ४/११९)

49 – बीमार पुर्सी के वक़्त मरीज़ के लिए दुआ

(१) रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी बीमार के पास बीमार पुर्सी के लिए जाते तो उसे फरमाते ।

147- لابأس طهور إنْ شاءَ اللهُ

१४७ . कोई ह़रज् नहीं यह बीमारी अल्लाह ने चाहा तो (गुनाहों से) पाक करने वाली है । (बुख़ारी १०/११८)

(२) कोई मुसलमान ऐसे मरीज़ की बीमार पुर्सी करे जिस की मौत का समय न आ पहुँचा हो और सात बार यह दुआ पढ़े तो अल्लाह के हुकम से उसे शिफा मिल जाती है ।

148- أسألُ اللهَ العظِيمِ رب العرشِ العظِيمِ أنْ يشفِيك

१४८ . मैं बड़ी अज़्मत् वाले अल्लाह से जो अर्शे अज़ीम का रब है सवाल करता हूँ कि वह तुझे शिफा दे । (त्रिमिज़ी , अबूदाऊद और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/२१० और सहीहुल् जामिअ् ५/१८०)

50 – बीमार पुर्सी की फज़ीलत

149 - قال ﷺ ((إذا عاد الرجل أخاه المسلم مشى في خرافة الجنة حتى يجلس فإذا جلس غمرته الرحمة، فإن كان غدوة صلى عليه سبعون ألف ملك حتى يمسي، وإن كان مساء صلى عليه سبعون ألف ملك حتى يصبح))

१४९ . हजरत अली (रजि) फरमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना कि (आदमी जब अपने मुस्लिम भाई की बीमार पुर्सी के लिए जाता है तो समझ लो कि वह फलों तथा मेवों वाली जन्नत में चल रहा है यहाँ तक कि वह बैठ जाए , और जब वह वहाँ मरीज़ के पास पहुँचकर बैठता है तो उसे अल्लाह की

रह्मत् ढाँप लेती है , अगर सुबह के समय गया हो तो शाम तक सत्तर हज़ार फरिश्ते उस के लिए दुआ करते रहते हैं और अगर शाम के समय गया हो सत्तर हज़ार फरिश्ते सुबह तक दुआ करते रहते हैं । (त्रिमिज़ी , इब्ने माजा , अहमद और देखिए सहीह इब्ने माजा १/२४४ और सहीह त्रिमिज़ी १/२८६ शैख़ अहमद शाकिर ने भी इसे सहीह कहा है ।

51 – उस मरीज़ की दुआ जो अपनी ज़िन्दगी से मायूस हो चुका हो ।

150- اللهم اغْفِرلي وارحمني وألحِقْني بالرفيق الأعلى

१५० . ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे , मुझ पर रहम् कर और मुझे सब से ऊँचे रफीक़ के साथ मिला दे । (बुख़ारी ७ /१० मुस्लिम ४/१८९३)

हजरत आइशा (रजि) फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ फौत होने के समय अपने दोनों हाथों को पानी में डाल कर मुँह पर फेरते थे और यह फरमाते थे :

151- لا إله إلا الله إن للموت لسكرات

१५१. अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं , बेशक् मौत के लिए सख़्तियाँ हैं । (बुख़ारी फतह् के साथ ८/१४४)

152- لا إله إلا الله والله أكبر ، لا إله إلا الله وحده ، لا إله إلا الله وحده لا شريك له ، لا إله إلا الله له الملك وله الحمد ، لا إله إلا الله ولا حولَ ولا قُوةَ إلا بالله

१५२ . अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत् के लायक़् नहीं । वह अकेला है , उस का कोई शरीक नहीं ,

अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत् के लायक़् नहीं । उसी के लिए मुलक है और उसी के लिए हर किसम की तारीफ है । अल्लाह के सिवा कोई बन्दगी के लायक़् नहीं और न बचने की ताक़त् है और न कुछ करने की मगर अल्लाह की मदद् से ।
(त्रिमिज़ी , इब्ने माजा शैख़ अल्बानी (रहि) ने इसे सहीह कहा है देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५२ और सहीह इब्ने माजा २/३१७)

52 – जो ब्यक्ति मरने के क़रीब हो उसे निम्नलिखित कलिमा पढ़ाया जाए ।

153- من كان آخر كلامه لا إله إلا الله دخل الجنة

१५३ . जिस का अख़िरी कलाम ((लाइलाहा इल्लल्लाह)) होगा वह जन्नत में दाख़िल् होगा । (अबूदाऊद ३/१९० और देखिए सहीहुल् जामिअ् ५/३४२)

53 – जिसे कोई मोसीबत् पहुँचे वह निम्नलिखित दुआ पढ़े ।

154- إنا لله وإنا إليه راجعونَ اللهم أجرني في مصيبتي وأخلف لي خيراً منها

१५४. बेशक् हम अल्लाह ही के अधीन में हैं और निस्सन्देह हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं । ऐ अल्लाह मुझे मेरी मुसीबत् में सवाब दे और मुझे इस के बदले में इस से बेहतर चीज़ प्रदान कर । (मुस्लिम २/६३२)

54 – døot\ की आँखें बन्द करते समय की दुआ

155- اللهم اغْفِر لِفُلانٍ وارفَع درجته فِي الْمهدِيين واخلُفْه فِـي عقِبِهِ فِي الغَابِرِين واغْفِر لنا وله يا رب العالَمِين وافْسح له فِي قَبـرِهِ ونور له فِيهِ

१५५. ऐ अल्लाह फलाँ को ((नाम लेकर कहे)) बख़्श दे और हिदायत् पाने वालों में इस का दर्जा (पद) बुलन्द कर और इस के पीछे रहने वालों में तू इस का जानशीन (प्रतिनिधि) बन जा । और ऐ रब्बुल् आलमीन हमें और इसे बख़्श दे और इस के लिए इस की क़ब्र को कुशादा कर दे और इस की क़ब्र में रौशनी कर दे । (मुस्लिम २/६३४)

55 – नमाज़े जनाज़ा की दुआ

156- اللهم اغْفِر له، وارحمه ، وعافِهِ ، واعف عنه، وأكْرِم نزله، ووسع مدخله ، واغْسِله بِالماءِ والثلج والبردِ ، ونقِهِ مِن الخطايـا كما نقيت الثوب الأبيض مِن الدنس ، وأبدِله داراً خيراً مِـن دارِهِ، وأهلاً خيراً مِن أهلِهِ، وزوجاً خيراً مِن زوجِهِ ، وأدخِلْـه الجنـةَ ، وأعِذْه مِن عذَابِ القَبرِ [وعذَاب النار]

१५६.ऐ अल्लाह इसको बख्श दे । और इस पर रहम् फरमा । और इसको आफियत् दे । और इस को माफ कर दे । और इस की मेहमानी इज़्ज़त् के साथ कर । और इस की क़ब्र को कुशादा कर दे । और इस के गुनाह को पानी और बरफ् और ओले से धुल् दे । और इस को गुनाहों से इस तरह साफ करदे जैसे सफेद कपड़ा मैल से साफ किया जाता है । और इस के घर से अच्छा घर बदल् दे । और इस के घर वालों से अच्छे घर

वाले बदल् दे । और इस के जोड़े से अच्छा जोड़ा दे । और इस को जन्नत् में दाख़िल् फरमा । और इसको क़ब्र और जहन्नम् के अज़ाब से बचाले । (मुस्लिम २ /६६३)

157- اللهم اغْفِر لِحينا ، وميتنا ، وشاهِدِنا ، وغَائِبِنا ، وصغيرنا، وكبيرنا ، وذكرنا، وأنثانا . اللهم من أحييته مِنا فَأحيِهِ على الإسلامِ ومن توفيته مِنا فتوفه على الإيمان ، اللهم لا تحرمنا أجره ولا تضِلنا بعده [ولا تفْتِنا بعده]

१५७. ऐ अल्लाह हमारे जिन्दों और मुर्दों को बख़्श दे । और हाजिरों और गायबों को और छोटों और बड़ों को । और मर्दों और औरतों को । ऐ अल्लाह जिसको तू जिन्दा रक्खे उसको इस्लाम पर जिन्दा रख् ? और हम में से जिसको उठाले (मौत दे) उसको ईमान पर उठा । ऐ अल्लाह इसके बद्ले से हम्को मह्रूम न रख् और इस के बाद हमको गुम्राह न कर [और इस के बाद हमें आजमाइश् में न डाल ।] (मुस्लिम , सहीह् इब्ने माजा १/२५१)

158- اللهم إن فَلانَ بن فُلانٍ فِي ذِمتِك ، وحبل جِوارِك ، فَقِهِ مِن فِتنةِ القَبرِ وعذَابِ النارِ ، وأنت أهلُ الوفَاءِ والحق . فَـاغْفِر لَـه وارحمه إنك أنت الغفُور الرحِيم

१५८ . ऐ अल्लाह फलाँ बिन् फलाँ तेरे ज़िम्मे और तेरी पनाह में है । इस लिए तू इसे क़ब्र की आज़माइश् और जहन्नम के अज़ाब से बचा । तू वफा और हक़् वाला है । इस लिए इसे बख़्श दे और इस पर दया कर । निस्सन्देह तू ही बख़्शाने वाला

अत्यन्त मेहरबान है । (इब्ने माजा और देखिए सहीह इब्ने माजा १/२५१ और अबूदाऊद ३/२११)

159- اللهم عبدك وابن أمتك احتاج إلى رحمتك ، وأنت غني عن عذابه إنْ كانَ محسنا فزد في حسناته وإنْ كانَ مسيئاً فتجاوز عنه

१५९ . ऐ अल्लाह यह तेरा बन्दा और तेरी बन्दी का बेटा तेरी रह्मत् का मुह्ताज है और तू इस को अज़ाब देने से ग़नी है । अगर नेकी करने वाला था तो इस की नेकियों में वृद्धि कर और अगर बुराई करने वाला था तू इस से दर्गुज़र (माफ) फरमा । (हाकिम ने इसे रिवायत् किया और सहीह कहा है और इमाम ज़हबी ने भी सहमति ब्यक्त की है १/३५९ और देखिए शैख़ अल्बानी (रहि) की किताब अह्कामुल् जनाइज़् पृष्ठ १२५)

56 – बच्चे पर जनाज़े की दुआ

160- ((اللهم أعذه من عذاب القبر)) اللهم اجعله فرطاً وذُخراً لوالديه ، وشفيعاً مجاباً . اللهم ثقلْ به موازينهما وأعظم به أجورهما ، وألحقه بصالح المؤمنين ، واجعله في كفالة إبراهيم، وقه برحمتك عذاب الجحيم، و أبدله داراً خيراً من داره، وأهلاً خيراً من أهله، اللهم اغْفر لأسلافنا، وأفْراطِنا، ومن سبقنا بالإيمان

१६०.ऐ अल्लाह इसे इस के माँ बाप के लिए पहले जाकर मेहमानी की तैयारी करने वाला और ज़ख़ीरा बना दे और ऐसा सिफारिशी बना जिस की सिफारिश् क़बूल हो । ऐ अल्लाह इस के साथ इस के माँ बाप दोनों के तराज़ू को भारी कर दे और इस के माध्यम से उन दोनों के सवाब को बढ़ा दे और इसे नेक

मोमिनों के साथ मिला दे और इसे इब्राहीम की किफालत् में कर दे और अपनी रह्मत् से इसे जहन्नम के अज़ाब से बचा (देखिए शैख़ बिन् बाज़ (रहि) की किताब ((अद्दुरूसुल् मुहिम्मा लिआम्मतिल् उम्मा)) पृष्ठ १५)

161- اللهم اجعله لنا فَرطاً ، وسلَفاً ، وأجراً

१६१ . ऐ अल्लाह इसे हमारे लिए पहले से जाकर मेहमानी के लिए तैयारी करने वाला और पेशरव् तथा सवाब का जरिया बना दे । (बग़वी की किताब शरहुस्सुन्ना ५/३५७ यह दुआ केवल हजरत हसन् बसरी ताबई (रहि) से साबित् है । इमाम बग़वी फरमाते हैं कि इमाम बुख़ारी ने इसे मोअ़ल्लक़् बयान किया है ।)

57 – तअ़ज़ियत् (मृतक् के घर वालों को तसल्ली देना) की दुआ ।

162- إن لله ما أخذَ ، وله ما أعطى وكُل شيءٍ عِنده بِأجلٍ مسمى .... فَلتصبِر ولْتحتسِب

१६२ . अल्लाह ही का है जो उस ने ले लिया और उसी का है जो उस ने प्रदान किया और उस के पास हर चीज़ के लिए ऐक निश्चित समय नियुक्त है । इस लिए आप लोग सब्र एवं धैर्य से काम लो और सवाब की नीयत् रखो । (बुख़ारी २/८० मुस्लिम २/६३६)

और अगर इस प्रकार कहे तो अच्छा है :

أعظم الله أجرك ، وأحسن عزاءَ ك ، وغَفَر لميتك

अल्लाह तआला आप लोगों को अधिक तथा विशाल सवाब दे और आप लोगों को अपनी ओर से अच्छी तसल्ली , सन्तुष्ट तथा धैर्य प्रदान करे और आप लोगों के मृतक् को बख़्श दे ।

(इमाम नववी की किताब अल्अज़्कार पृष्ठ १२६)

58 – मदयत् को क़ब्र में दाख़िल् करते समय की दुआ

163 - بِسمِ اللهِ وعلى سنةِ رسولِ اللهِ

१६३ . अल्लाह के नाम से और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत के मुताबिक़ तुम्हें क़ब्र में दाख़िल कर रहा हूँ । (अबूदाऊद ३/३१४ सनद् सहीह़ है । मुस्नद् अह़मद् के शब्द यह हैं । **بِسمِ اللهِ وعلى مِلةِ رسولِ اللهِ** और इस की सनद् भी सहीह़ है ।

59 – मदयत को दफन् करने के बाद दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ जब मुर्दे को दफन करने से फारिग़ होते तो उस की क़ब्र के पास खड़े होते और फरमाते (अपने भाई के लिए अल्लाह से बख़्शिश् माँगों और इस के लिए साबित् क़दम् रखने की दुआ करो क्योंकि अब इस से सवाल किया जायेगा ।
(अबूदाऊद ३/३१५ और इमाम ह़ाकिम ने इसे रिवायत करके सहीह़ कहा है और इमाम ज़हबी ने इस पर सहमति व्यक्त की है १/३७०)

164 - اللهم اغْفِر له اللهم ثَبته

१६४ . ऐ अल्लाह इसे क्षमा कर दे ऐ अल्लाह इसे साबित क़दम रख ।

60 – क़बरों की ज़ियारत् की दुआ

165 - السلام عليكُم أهلَ الديارِ مِن المؤمِنين والمسلِمين وإنا إنْ شاءَ اللهُ بِكُم لاحِقُونَ [ويرحم اللهُ المستقْدِمِين مِنا والمستأخِرين] أسألُ اللهَ لنا ولكُم العافِيةُ

१६५. ऐ इस घर वाले (क़ब्र तथा बर्ज़ख़ी घर वाले) मोमिनो और मुसलमानो ! तुम पर सलाम हो और हम भी अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम से मिलने वाले हैं । [और हमारे अगलों और पिछलों पर अल्लाह की रह़मत् हो] हम अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह से आ़फियत् का सवाल करते हैं । (मुसिलम २/६७१)

61- हवा चलते समय की दुआ

166- اللهم إني أسألك خيرها ، وأعوذُ بك من شرها

१६६. ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस की भलाई का सवाल करता हूँ और इस की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ । (अबूदाऊद ४/३२६ इब्ने माजा २/१२२८ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३०५)

167- اللهم إني أسألك خيرها ، وخير ما فيها ، وخير ما أرسلت به، وأعوذُ بك من شرها، وشر ما فيها ، وشر ما أرسلت به

१६७. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस की भलाई का और उस चीज़ की भलाई का जो इस में है और उस चीज़ की भलाई का जिस के साथ यह भेजी गई है और मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस की बुराई से और उस चीज़ की बुराई से जो इस में है और उस चीज़ की बुराई से जिस के साथ यह भेजी गई है । (मुस्लिम २/६१६ बुख़ारी ४/७६)

62- बादल गरजते समय पढ़ी जाने वाली दुआ

168- سبحانَ الذي يسبح الرعد بحمده والملائكةُ من خيفته

१६८. अब्दुल्लाह बिन् ज़ुबैर (रजि) जब बादल की गरज् सुनते तो बातें करनी छोड़ देते और यह दुआ पढ़ने लगते :

سبحانَ الذِي يسبح الرعـد بِحمـدِهِ والْملائكَـةُ مِـن خِيفَتِـهِ

पाक है वह ज़ात बादल् की गरज जिस की तस्बीह़ बयान करती है उस की तारीफ के साथ और फरिश्ते भी उस के भय से उस की तस्बीह़ पढ़ते हैं । (मोत्ता २/९९२ शैख़ अल्बानी (रहि) फरमाते हैं कि सह़ाबी से इस दुआ की सनद् सह़ीह़ है)

63- बारिश् माँगने की कुछ दुआएँ

169- اللهم أسقِنا غَيثاً مغِيثاً مرِيئاً مرِيعاً ، نافِعاً غَير ضار ، عاجِلاً غَير آجِلٍ

१६९. ऐ अल्लाह हमें बारिश् प्रदान कर , मदद् करने वाली , खुश्गवार , सरसब्ज़ करने वाली । फाइदा पहुँचाने वाली , नुक्सान न देने वाली , जलदी आने वाली हो न कि देर करने वाली । (अबूदाऊद १/३०३ इस की सनद सह़ीह़ है ।

170- اللهم أغِثْنا ، اللهم أغِثْنا ، اللهم أغِثْنا

१७०. ऐ अल्लाह हमें बारिश् दे । ऐ अल्लाह हमें बारिश् दे । ऐ अल्लाह हमें बारिश् दे । (बुख़ारी १/२२४ मुस्लिम २/६१३)

171- اللهم اسق عِبادك ، وبهائِمك ، وانشر رحمتك وأحي بلْدك الميت

१७१. ऐ अल्लाह अपने बन्दों और अपने जानवरों को पानी पिला और अपनी रह़मत् को फैला दे और अपने मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दे । (अबूदाऊद १/३०५ और देखिए इमाम नववी की किताब अल्अज़्कार पृष्ठ १५०)

64- बारिश् उतरते समय की दुआ

172- اللهم صيباً نافِعاً

१७२. ऐ अल्लाह इसे नफा देने वाली बारिश् बना दे । (बुख़ारी फतहुल् बारी के साथ २/५१८)

65- बारिश् समाप्त होने के बाद की दुआ

173- مطرنا بفضل الله ورحمته

१७३. हम पर अल्लाह के फज़ल और उस की रहमत् से बारिश् हुई । (बुख़ारी १/२०५ मुसिलम १/८३)

66- बारिश् रुकवाने के लिए दुआ

174- اللهم حوالينا ولا علينا . اللهم على الآكـام والظـراب ، وبطون الأودية ، ومنابت الشجر

१७४. ऐ अल्लाह हमारे आस पास बारिश् बर्सा और हम पर न बरसा । ऐ अल्लाह टीलों और पहाड़ियों पर और वादियों की निचली जगहों में और पेड़ पौदे उगने की जगहों में (अर्थात जङ्गलों में) बारिश् बरसा । (बुख़ारी १/२२४ मुस्लिम २/६१४)

67- चाँद देखते समय की दुआ

175- الله أكبر ، اللهم أهله علينا بالأمن ، والإيمان والـسلامة ، والإسلام ، والتوفيق لما تحب وترضى ربنا وربك الله

१७५. अल्लाह सब से बड़ा है । ऐ अल्लाह तू इसे हम पर प्रकट कर अमन् , ईमान , सलामती और इस्लाम के साथ और उस चीज़ की तौफीक़ के साथ जिस से तू मोहब्बत् करता है और पसन्द करता है । ऐ चाँद हमारा रब् और तेरा रब् अल्लाह है । (त्रिमिज़ी ५/५०४ दारमी १/३३६ शब्द दारमी के हैं और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५७)

68- रोज़ा खोलते समय की दुआ

176- ذهب الظمأ ، وابتلت العروق ، وثبت الأجر إنْ شاءَ الله

१७६. प्यास समाप्त हो गई और रगें तर हो गईं और अगर अल्लाह ने चाहा तो अजर (पुण्य) साबित् हो गया । (अबूदाऊद २/३०६ और देखिए सहीहुल् जामिअ् ४/२०९)

अब्दुल्लाह बिन् अमर बिन् आ़स (रजि) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : रोज़ादार के लिए रोज़ा खोलते समय एक दुआ है जो रद् नहीं की जाती । इब्ने अबी मुलैका कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन अमर बिन् आ़स (रजि) रोज़ा खोलते समय निम्न लिखित दुआ पढ़ते थे :–

177- اللهم إني أسألك برحمتك التي وسعت كل شيئ أنْ تغفرلي

१७७. ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरी उस रह्मत् के माध्यम से सवाल करता हूँ जो हर चीज़ पर छाई हुई है यह कि तू मुझे बख़्श दे । (इब्ने माजा १/५५७ और हाफिज़ ने अल्अज़्कार की तख़रीज में इसे ह़सन् कहा है । देखिए अज़्कार की शरह ४/३४२)

69- खाना खाने से पहले की दुआ

178- إذا أكل أحدكم طعاماً فليقل بسم الله ، فإن نسي في أوله فليقل بسم الله في أوله وآخره

१७८. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से कोई खाना खाए तो पढ़े बिस्मिल्लाह ((अर्थात अल्लाह के नाम से खाता हूँ)) और अगर शरू में भूल जाए तो कहे : बिस्मिल्लाहि फी अव्वलिही वआख़िरिही)) अल्लाह के नाम से खाता हूँ इस के शुरू में और इस के आख़िर में । (अबूदाऊद ३/३४७ त्रिमिज़ी ४/२८८ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/१६७)

(२) जिसे अल्लाह तआला खाना खिलाए वह निम्नलिखित दुआ पढ़े ।

179- اللهم بارك لنا فيه وأطعمنا خيراً منه ،

१७९. ऐ अल्लाह हमारे लिए इस में बरकत् दे और हमें इस से बेहतर खिला ।
और जिसे अल्लाह तआला दूध पिलाए वह निम्नलिखित दुआ पढ़े ।

"اللهم بارك لنا فيه وزدنا منه "

ऐ अल्लाह हमारे लिए इस में बरकत् प्रदान कर और हमें अधिक दूध पिला । (त्रिमिज़ी ५/५०६ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५८)

70- खाने से फारिग़ होने के बाद की दुआ

180- الحمد لله الذي أطعمني هذا ، ورزقنيه من غير حول مني ولا قوة

१८०. तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मुझे यह खाना खिलाया और मेरी किसी भी कोशिश् और ताक़त् के बिना मुझे यह खाना दया । (अबूदाऊद , त्रिमिज़ी , इब्नेमाजा और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५९)

181- الحمد لله حمداً كثيراً طيباً مباركاً فيه غير [مكْفـي ولا] مودع ، ولا مستغنى عنه ربنا

१८१. तमाम तारीफ अल्लाह के लिए है , बहुत अधिक तारीफ , पाकीज़ा तारीफ जिस में बरकत् की गई है , जिसे न काफी समझा गया है , न छोड़ा गया है और न उस से बे परवाही की गई है ऐ हमारे रब् । (बुख़ारी ६/२१४ त्रिमिज़ी ५/५०७)

71- मेहमान की दुआ खाना खिलाने वाले मेज़बान के लिए

182- اللهم بارك لهم فيما رزقتهم ، واغفر لهم وارحمهم

१८२. ऐ अल्लाह तूने इन्हें जो कुछ दिया है उस में इन के लिए बरकत् फरमा और इन्हें बख़्श दे और इन पर दया कर। (मुस्लिम ३/१६१५)

72- जो आदमी कुछ पिलाए या पिलाने का इरादा करे उस के लिए दुआ।

183- اللهم أطعم من أطعمني واسق من سقاني

१३८. ऐ अल्लाह जो मुझे खिलाए तू उसे खिला और जो मुझे पिलाये तू उस को पिला। (मुस्लिम ३/१२६)

73- जब किसी घर वालों के यहाँ रोज़ा इफ्तारी करे तो उन के लिए यह दुआ करे।

184- أفطر عندكم الصائمون ، وأكل طعامكم الأبرار ، وصلت عليكم الملائكة

१८४. तुम्हारे पास रोज़ेदार अफतार करते रहैं और तुम्हारा खाना नेक लोग खाएँ और फरिश्ते तुम्हारे लिए दुआ करें।
(अबूदाऊद ३/ ३६७ और शैख़ अल्बानी (रहि) ने अलेकलिमुत् तय्यिब् में इसे सहीह कहा है पृष्ठ १०३)

74- दुआ जब खाना हाजिर हो और रोज़ादार रोज़ा न खोले

185- إذا دعي أحدكم فليجب، فإن كان صائماً فليصل وإن كان مفطراً فليطعم

१८५. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से किसी को बुलाया जाए तो दावत क़बूल करे अगर रोज़ादार हो तो दावत

देने वाले के लिए दुआ करे और अगर रोज़े से न हो तो खाना खा ले। (मुस्लिम २/१०५४)

75- रोज़ादार को जब कोई गाली दे तो क्या कहे ?

186-إني صائم، إني صائم

१८६.मैं रोज़े से हूँ , मैं रोज़े से हूँ। (बुखारी फत्हुल् बारी के साथ ४/१०३ मुस्लिम २/८०६)

76- पहला फल देखने के समय दुआ

187- اللهم بارك لنا في ثمرنا، وبارك لنا في مدينتنا ، وبارك لنا في صاعنا ، وبارك لنا في مدنا

१८७. ऐ अल्लाह हमारे लिए हमारे फल् में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे शहर में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे साअ़ में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे मुद् में (अर्थात नाप, तौल के पैमानों में) बरकत् दे। (मुस्लिम २/१०००)

77- छींक की दुआ

188- إذا عطس أحدكم فليقل: الحمد لله ، وليقل له أخوه أو صاحبه : يرحمك الله ، فإذا قال له : يرحمك الله ، فليقل : يهديكم الله ويصلح بالكم))

१८८. जब तुम में से किसी को छींक आए तो कहे ((अल्हम् दुलिल्लाह)) अर्थात तमाम तारीफ अल्लाह के लिए है। और सुनने वाला उस का भाई कहे। ((यर्हमुकल्लाह)) अल्लाह तुझ पर रहम् करे। और जब उस का भाई छींकने वाले के लिए ((यर्हमुकल्लाह)) कहे तो छींकने वाला उसे यूँ कहे ((

यह्दीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम्)) अल्लाह तुम्हें हिदायत् दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे। (बुख़ारी ७/१२५)

78- जब काफिर छींकते समय अल्ह़म्दुलिल्लाह कहे तो उस के लिए क्या कहा जाए।

189- يهدِيكُم اللهُ ويصلِح بالكُم

१८९.अल्लाह तुम को हिदायत् दे और तुम्हारी ह़ालत् संवार दे। (त्रिमिज़ी ५/८२ और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी २/३५४)

79- शादी करने वाले के लिए दुआ

190- بارك اللهُ لك ، وبارك عليك ، وجمع بينكُما فِي خيرٍ

१९०. अल्लाह तेरे लिए बरकत् करे और तुझ पर बरकत् करे और तुम दोनों को भलाई पर इकट्ठा करे। (अबूदाऊद , त्रिमिज़ी , इब्ने माजा और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी १/३१६)

80- शादी करने वाले की अपने लिए दुआ और सवारी ख़रीदने की दुआ।

१९१. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से कोई आदमी शादी करे या लौंडी ख़रीदे तो यह कहे।

191- اللهم إِني أسألُك خيرها وخير ما جبلْتها عليهِ وأعوذُ بِـك مِن شرها وشر ما جبلْتها عليهِ ،

ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस की भलाई का सवाल करता हूँ और उस चीज़ की भलाई का सवाल करता हूँ जिस पर तूने इसे पैदा किया है और तेरी पनाह माँगता हूँ उस के शर से और उस चीज़ के शर से जिस पर तुने उसे पैदा किया है।

और जब कोई ऊँट या जानवर ख़रीदे तो उस की कौहान की चोटी पकड़ कर यही दुआ पढ़े । (अबूदाऊद २/२४८ इब्ने माजा १/६१७ और देखिए सहीह इब्ने माजा १/३२४)

81- जिमाअ़ (सम्भोग) से पहले दुआ

192- بِسمِ اللهِ . اللهم جنبنا الشيطانَ ، وجنب الشيطانَ ما رزقْتنا

१९२. अल्लाह के नाम से । ऐ अल्लाह हमें शैतान से बचा और जो औलाद हमें प्रदान करे उसे भी शैतान से बचा । (बुख़ारी ६/१४१ मुस्लिम २/१०२८)

82- ग़ुस्सा (क्रोध) समाप्त करने की दुआ

193- أعوذُ بِاللهِ مِن الشيطان الرجِيمِ

१९३. मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ ।
(बुख़ारी ७/९९ मुस्लिम ४/२०१५)

83 – किसी बीमारी या मोसीबत् में मुब्तला आदमी को देखे तो निम्नलिखित दुआ पढ़े ।

194- الحمد للهِ الذِي عافانِي مِما ابتلاكَ بِهِ وفَضلَنِي علَى كَـثِيرٍ مِمن خلَق تفْضِيلاً

१९४. तमाम तारीफ उस अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे उस चीज़ से आफियत् दी जिस में तुझे मुब्तला किया और उस ने मुझे अपने पैदा किए हुए बहुत से लोगों पर फज़ीलत् बख़्शी ।
(त्रिमिज़ी ५/४९४ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५३)

84- मज्लिस् में पढ़ने की दुआ

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के लिए एक मज्लिस् में उठने से पहले सौ १००

बार यह दुआ शुमार की जाती थी । ((अर्थात रसूलुल्लाह ﷺ एक मज्लिस् में १०० बार निम्नलिखित दुआ पढ़ते थे))

195- رب اغْفِرلي وتب عليّ إنك أنت التواب الغفُور

१९५. ऐ मेरे रब् मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा क़बूल फर्मा बेशक् तू ही तौबा क़बूल करने वाला , बहुत अधिक बख़्शने वाला है । (त्रिमिज़ी और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५३ और सहीह इब्ने माजा २/३२१ श्ब्द त्रिमिज़ी के हैं ।

85- मज्लिस् के गुनाह दूर करने की दुआ

196- سبحانك اللهم وبحمدِك ، أشـهد أن لا إلـه إلا أنـت أستغفِرك وأتوب إليك

१९६. ऐ अल्लाह तू पाक है और तेरे लिए हर प्रकार की तारीफ है । मैं शहादत् देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं । मैं तुझ से क्षमा चाहता हूँ और तुझ से तौबा करता हूँ । (त्रिमिज़ी , अबूदाऊद , निसाई , इब्नेमाजा और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५३)

हजरत आइशा (रजि) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ न कभी किसी मज्लिस् में बैठे न कभी कुरआन पढ़ा न कोई नमाज़ पढ़ी मगर हमेशा इस दुआ के साथ समाप्त किया । फरमाती हैं कि मैं ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ मैं आप को देखती हूँ कि आप जब भी किसी मज्लिस् में बैठते हैं और कुरआन से कुछ पढ़ते हैं या कोई नमाज़ पढ़ते हैं तो इस दुआ

سبحانك اللهم وبحمدِك ، أشهد أن لا إله إلا أنت أستغفِرك وأتوب إليك

के साथ ख़तम् करते हैं ! आप ﷺ ने परमाया हाँ ! जो कोई भलाई की बात कहेगा तो यह दुआ उस भलाई वाली बात पर मोहर बना कर लगा दी जायेगी और अगर ज़बान से बुरी बात

निकल् गई है तो उस के लिए यह दुआ कफ्फारा बन जाती है । (मुस्नद् अह्मद् ६/७७)

86- जो आदमी कहे ((ग़फरल्लाहु लका)) अर्थात अल्लाह तुझे बख़्श दे उस के लिए दुआ ।

197- الدعاء لمن قال غفر الله لك ((ولك))

१९७. अब्दुल्लाह बिन् सर्जिस् फरमाते हैं कि मैं नबीए करीम ﷺ के पास आया तो आप के यहाँ मैं ने खाना खाया और इस के बाद मैं ने कहा : गफरल्लाहु लका या रसूलल्लाह)) ऐ अल्लाह के रसूल अल्लाह तआला आप को बख़्शे । इस के उत्तर में आप ﷺ ने कहा ((व लका)) और तुझे भी अल्लाह बख़्शे । (मुस्नद् अह्मद् ५/८२)

87- जो अच्छा सुलूक (ब्योहार) करे उस के लिए दुआ ।

198- جزاك الله خيراً

१९८. जिस के साथ कोई अच्छा सुलूक किया जाए और वह अच्छा सुलूक करने वाले को कहे **جزاك الله خيراً** तुझे अल्लाह तआला बेहतरीन बदला दे । तो उस ने तारीफ करने में मुबालग़ा (अतियुक्ति) किया । (त्रिमिज़ी हदीस २०३५ और देखिए सहीहुल् जामिअ् हदीस न० – ६२४४ और सहीह त्रिमिज़ी २/२००)

88- वह दुआ जिस के पढ़ने से आदमी दज्जाल के फित्ने से महफ़ूज़ रहता है ।

199- من حفظ عشر آيات من أول سورة الكهف عصم من الدجال - والاستعاذة بالله من فتنته عقب التشهد الأخير من كل صلاة.

१९९. (१) जो आदमी सूरा कहफ् के शुरू से दस् आयतें याद करले वह दज्जाल से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहेगा। (मुस्लिम १/५५५) (२) हर नमाज़ के आख़िरी तशह्हुद् के बाद दज्जाल के फित्ने से पनाह माँगना। (देखिए इसी किताब में दुआ न०–५५,५६)

89- जो आदमी कहे ((मुझे तुम से अल्लाह के लिए मोहब्बत् है)) उस के लिए दुआ।

200- أحبك الذي أحببتني له

२००. अल्लाह तुझ से मोहब्बत् करे जिस के लिए तूने मुझ से मोहब्बत् की। (अबूदाऊद ४/३३३ सनद सहीह है।

90- जो आदमी तुम्हारे लिए अपना माल पेश करे उस के लिए दुआ।

201- بارك الله لك في أهلك ومالك

२०१. अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे परिवार और माल में बरकत् दे। (बुख़ारी फतेहुल् बारी के साथ ४/८८)

91- क़र्ज (ऋण) अदा करते समय क़र्ज देने वाले के लिए दुआ।

202- بارك الله لك في أهلك ومالك ، إنما جزاء السلف الحمد والأداء

२०२. अल्लाह तआला तेरे लिए तेरे परिवार तथा माल में बरकत् दे। क़र्ज का बदला तो केवल तारीफ और अदा करना है। (इब्ने माजा २/८०९ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/५५)

92- शिर्क से बचने की दुआ

203- اللهم إني أعوذُ بك أنْ أشرك بك وأنا أعلم ، وأستغفرك لما لا أعلم

२०३. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस बात से कि मैं जानते हुए तेरे साथ किसी को शरीक बनाऊँ। और उस शिर्क से भी तेरी बख़्शिश् माँगता हूँ जो में नहीं जानता। (मुस्नद अहमद ४/४०३ और देखिए सहीहुल् जामिअ़ ३/२३३ और सहीह तरग़ीब व तरहीब १/१९)

93- जो किसी को तोह़फा (उपहार) दे या सदक़ा करे और उस के लिए दुआ की जाए तो क्या कहे।

204- الدعاء لمن قال بارك الله فيك ((وفيك بارك الله))

२०४. जिस आदमी को यह दुआ दी जाए कि **بارك الله فيك** अर्थात अल्लाह तुझे बरकत् दे। तो इस के उत्तर में यह कहा जाए **وفيك بارك الله** अर्थात अल्लाह तुझे भी बरकत् दे।

(इब्नुस्सुन्नी पृष्ठ १३८ हदीस न०–२७८ और देखिए इब्नुल् क़य्यिम् की किताब अल्वाबिलुस्स्य्यिब् पृष्ठ ३०४)

94- अगर किसी के दिल् में कोई बद् फाली या बद्शगूनी की बात उत्पन्न हो जाए तो उस से नजात पाने के लिए निम्नलिखित दुआ पढ़े।

205- اللهم لا طير إلا طيرك ولا خير إلا خيرك ولا إله غيرك

२०५. ऐ अल्लाह किसी भी चीज़ में नहूसत् नहीं मगर तेरी नहूसत् और किसी भी चीज़ में भलाई नहीं मगर तेरी भलाई

और तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं । (अह्मद् २/२२० और देखिए अल्अहादीसुस्सहीहा १०६५)

95- सवारी पर सवार होने की दुआ

206- بِسمِ اللهِ الْحمد للهِ (سبحانَ الذِي سخر لَنا هذَا وما كُنا لَه مقْرِنِين وإِنا إِلَى ربنا لَمنقَلِبونَ) الْحمد للهِ ، الْحمد للهِ ، اللهُ أَكْبر ، اللهُ أَكْبر ، اللهُ أَكْبر ، سبحانك اللهم إِني ظَلَمت نفْسِي فَاغْفِر لِي ، فَإِنه لا يغفِر الذنوب إِلا أَنت

२०६. अल्लाह के नाम से । तमाम तारीफ अल्लाह के लिए है । पाक है वह ज़ात जिस ने इस सवारी को हमारे अधीन और क़ाबू में कर दिया है हालाँकि हम इसे अपने अधीन में नहीं कर सकते थे और हम अल्लाह ही की ओर लौट कर जाने वाले हैं । सब तारीफ अल्लाह के लिए है । सब तारीफ अल्लाह के लिए है । सब तारीफ अल्लाह के लिए है । अल्लाह सब से महान है । अल्लाह सब से महान है । अल्लाह सब से महान है । ऐ अल्लाह तू पाक है । ऐ अल्लाह मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया है पस् मुझे बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई गुनाहों को बख़्शने वाला नहीं । (अबूदाऊद ३/३४ त्रिमिज़ी ५/५०१ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५६)

96- सफर (यात्रा) की दुआ

207- اللهُ أَكْبر ، اللهُ أَكْبر ، اللهُ أَكْبر ، سبحانَ الذِي سخر لَنا هذَا وما كُنا لَه مقْرِنِين وإِنا إِلَى ربنا لَمنقَلِبونَ اللهم إِنا نسأَلُك فِي سفَرِنا هذَا الْبِر والتقْوى ، ومِن الْعملِ ما ترضى ، اللهم هونْ علَينا سفَرنا هذَا واطْوِ عنا بعده ، اللهم أَنت الصاحِب فِي السفَرِ ،

والخَلِيفَةُ فِي الأهل ، اللهم إِني أعوذُ بِك مِن وعثَاءِ السفَر ، وكآبةِ المنظَر وسوءِ المنقَلَبِ فِي المال والأهل ،

२०७ . अल्लाह सब से महान है । अल्लाह सब से महान है । अल्लाह सब से महान है । पाक है वह जिस ने इस को हमारे क़ाबू में कर दिया हालाँकि हम इसे अपने क़ाबू में न कर सकते थे । ऐ अल्लाह हम अपने इस सफर (यात्रा) में तुझ से नेकी और तक़्वा का सवाल करते हैं और उस अमल् का सवाल करते हैं जिसे तू पसन्द करे । ऐ अल्लाह हमारा यह सफर हम पर आसान कर दे और इस की दूरी को हमारे लिए समेट कर कम कर दे । ऐ अल्लाह तू ही सफर में साथी और घर वालों में नायब् है । (अर्थात घर वालों का निरिक्षक है) ऐ अल्लाह मैं तुझ से सफर की मशक़्क़त् से और माल तथा परिवार के विषय में ग़म्गीन करने वाले मन्ज़र (दृशय) से और नाकाम लौटने की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ ।

और जब सफर से घर की तरफ वापस् लौटे तो ऊपर की दुआ पढ़े और उस के साथ निम्नलिखित दुआ भी पढ़े ।

آيبونَ ، تائبونَ ، عابدونَ ، لربنا حامِدونَ

हम वापस लौटने वाले , तौबा करने वाले ,इबादत् करने वाले , अपने रब् ही की प्रशंसा करने वाले हैं । (मुस्लिम २/९९८)

97- किसी गाँव या शहर में दाख़िल् होने की दुआ

208- اللهم رب السمواتِ السبعِ وما أظْلَلْن ، ورب الأرضِـين السبعِ وما أقْلَلْن ، ورب الشياطِين وما أضلَلْن ورب الرِيـاحِ ومـا

ذَرين . أسألُك خير هذِهِ القَريةِ وخير أهلِها ، وخير ما فِيها ، وأعوذُ بِك مِن شرها ، وشر أهلِها ، وشر ما فِيها

२०८. ऐ अल्लाह ऐ सातों आसमानों के रब् और उन चीज़ों के रब् जिन पर उन्हों ने साया कर रखा है और सातों ज़मीनों के रब् और उन के रब् जिन चीज़ों को उन्हों ने उठा रखा है और शैतानों के रब् और उन चीज़ों के रब् जिन्हें इन्हों ने गुम्राह किया है और हवाओं के रब् और जो कुछ उन्हों ने उड़ाया है । मैं तुझ से इस गावँ की भलाई और इस गावँ में रहने वालों की भलाई का सवाल करता हूँ और उस चीज़ की भलाई का सवाल करता हूँ जो इस में है और मैं इस गावँ की बुराई और इस के रहने वालों की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ और उन चीज़ों की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ जो इस में हैं ।

इमाम हाकिम् ने इसे रिवायत् करके सहीह कहा है और इमाम ज़हबी ने भी पुष्टि की है २/१०० अल्लामा शैख़ बिन् बाज़ (रहि) ने इसे हसन् कहा है देखिए तुहफतुल् अख्यार पृष्ठ ३७)

98- बाज़ार में दाख़िल् होने की दुआ

209- لا إله إلا الله وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد يحيي ويميت وهو حي لا يموت بيده الخير وهو على كل شيء قدير

२०९. अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । उसी का मुल्क है और उसी के लिए प्रशंसा है । वह ज़िन्दा करता है और मारता है । और वह ज़िन्दा है उसे मौत नहीं आ सकती (अर्थात चिरञ्जीवी है) उसे के हाथ में भलाई है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है । (त्रिमिज़ी ५/४९१ ह़ाकिम् १/५३८ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/१५२)

99- सवारी के फिसल्ने या गिरने के समय की दुआ ।

210- بِسمِ اللهِ

२१० . अल्लाह के नाम से । (अबूदाऊद ४/२९६ और इस की सनद् सहीह है ।

100- मुसाफिर की दुआ मोक़ीम के लिए ।

211- أستودِعكُم اللهَ الذِي لا تضِيع ودائِعه

२११. मैं तुम्हें उस अल्लाह के सिपुर्द करता हूँ जिस के सिपुर्द की हुई चीज़ें कभी जाए तथा बरबाद नहीं होतीं । (अहमद् २/४०३ इब्ने माजा २/९४३ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/१३३)

101- मोक़ीम आदमी की दुआ मुसाफिर के लिए ।

212- أستودِع اللهَ دِينك ، وأمانتك ، وخواتِيم عملك

२१२. मैं तेरे दीन , तेरी अमानत् और तेरे कामों के परिणाम को अल्लाह के सिपुर्द करता हूँ । (अहमद् २/७ त्रिमिज़ी ५/४९९ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/१५५)

213- زودك اللهُ التقْوى ، وغفَر ذَنبك ، ويسر لك الْخير حيثُ ما كُنت

२१३. अल्लाह तआला तुझे तक़वा प्रदान करे और तेरे गुनाह बख़्शे और तू जहाँ कहीं भी रहे अल्लाह तआला तुझे नेकी मयस्सर् करे । (त्रिमिज़ी और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५५)

102- ऊँची जगहों पर चढ़ते समय तक्बीर और नीचे उतरते समय तस्बीह़ पढ़नी चाहिए ।

214- قال جابر رضي الله عنه: ((كنا إذا صعدنا كبرنا، وإذا نزلنا سبحنا))

२१४ . हजरत जाबिर (रजि) फरमाते हैं कि जब हम ऊपर चढ़ते तो तक्बीर ((अल्लाहु अक्बर्)) पढ़ते और नीचे उतरते तो तस्बीह ((सुब्हानल्लाह)) कहते थे । (बुख़ारी ६/१३५)

103- मुसाफिर की दुआ जब सुबह करे ।

215- سمع سامِع بِحمدِ اللهِ ، وحسن بلائِهِ علينا . ربنا صاحِبنا ، وأفْضِلْ علينا عائذاً بِاللهِ مِن النارِ

२१५. एक सुनने वाले ने हमारी ओर से अल्लाह की तारीफ और उस के हम पर जो अच्छे इनआ़मात तथा एह़सानात हैं उन का शुक्र सुना । ऐ हमारे रब् हमारा साथी बन जा और हम पर फज़्ल फरमा । आग से पनाह माँगते हुए यह दुआ करता हूँ । (मुस्लिम ४/२०८६)

104- सफर के दौरान जब मुसाफिर किसी मन्ज़िल् (मोक़ाम) पर उतरे उस समय की दुआ ।

216- أعوذُ بِكلِماتِ اللهِ التاماتِ مِن شر ما خلَق

२१६. मैं अल्लाह के सम्पूर्ण कलिमात के साथ पनाह चाहता हूँ । उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की हैं । (मुस्लिम ४/२०८०)

105- सफर से वापसी की दुआ

217 - لا إله إلا اللهُ وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كُل شيءٍ قدِير ، آيبونَ ، تائبونَ ، عابدونَ ، لربنا حامِدونَ ، صدق اللهُ وعده ، ونصر عبده وهزم الأحزاب وحده

२१७. अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत् के लायक़ नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं , उसी के लिए मुल्क है । उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है । हम वापस लौटने वाले , तौबा करने वाले , इबादत् करने वाले और केवल अपने रब् की तारीफ करने वाले हैं । अल्लाह ने अपना वादा सच्चा कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद् की और अकेले अल्लाह ने सारे लश्करों को शिकस्त दी (अर्थात पराजित कर दिया) (बुख़ारी ७/१६३ मुस्लिम २/९८०)

106- खुश् करने वाली या ना पसन्दीदा चीज़ पेश आने पर क्या कहे ?

218- كان ﷺ إذا أتاه الأمر يسره قال: ((الحمد لله الذي بنعمته تتم الصالحات)) وإذا أتاه الأمر يكرهه قال: ((الحمد لله على كُل حال))

२१८. रसूलुल्लाह ﷺ को जब कोई खुश करने वाली चीज़ पेश आती तो फरमाते **((الحمد لله الذي بنعمته تتم الصالحات))** सब तारीफ उस अल्लाह के लिए है जिस के फज़्ल से अच्छे काम मुकम्मल् होते हैं ।

और जब कोई ऐसी चीज़ पेश आती जो आप ﷺ को ना पसन्दीदा होती तो फरमाते : **((الحمد لله على كُل حال))** हर हालत् में तमाम तारीफ अल्लाह के लिए है । (शैख़ अल्बानी रहि ने सहीहुल् जामिअ् में इसे सहीह कहा है ४/२०१)

107- रसूलुल्लाह ﷺ पर सलात (दरूद) की फज़ीत् ।

219- قال ﷺ ((من صلى علي صلاة صلى الله عليه ا عشراً))

२१९. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जो आदमी मुझ पर एक बार सलात (दरूद) पढ़े अल्लाह तआला उस पर दस बार अपनी रह्मत् भेजता है । (मुस्लिम १/२८८)

220- وقال ﷺ : ((لا تجعلوا قبري عيداً وصـلوا علـي ، فـإن صلاتكم تبلغني حيث كنتم))

२२०. आप ﷺ ने फरमाया ((मेरी क़ब्र को मेलागाह मत् बनाना और तुम जहाँ कहीं भी रहो वहीं से मुझ पर सलात पढ़ो । क्योंकि तुम जहाँ कहीं भी रहो तुम्हारी सलात मुझ तक पहुँचाई जाती है । (अबूदाऊद २/२१८ अह्मद् २/३६७)

221- وقال ﷺ : ((البخيل من ذكرت عنده فلم يصل علي))

२२१. आप ﷺ ने फरमाया बख़ील (कन्जूस) वह है जिस के सामने मेरा जिक्र किया जाए और वह मुझ पर सलात न भेजे । (त्रिमिज़ी ५/५५१ ऋौर देखिए सहीहुल् जामिअ् ३/२५ और सहीह त्रिमिज़ी ३/१७७)

222- وقال ﷺ : ((إن لله ملائكة سياحين في الأرض يبلغوني مـن أمتي السلام))

२२२. आप ﷺ फरमाते हैं कि अल्लाह तआला के कुछ फरिश्ते ज़मीन में घूमते फिरते रहते हैं जो मेरे उम्मतियों का सलाम मुझ तक पहुँचाते हैं । (निसाई , हाकिम् २/४२१ और इस हदीस को शैख़ अल्बानी (रहि) ने सहीह कहा है देखिए सहीह निसाई १/२७४)

223- وقال ﷺ: ((ما من أحد يسلم علي إلا رد الله علي روحي حتى أرد عليه السلام))

२२३. आपﷺ फरमाते हैं कि जब भी कोई आदमी मुझ पर सलाम पढ़ता है तो मेरी रूह (प्राण) को अल्लाह तआला मेरे बदन् में लौटा देता है यहाँ तक कि मैं उस के सलाम का जवाब देता हूँ। (अबूदाऊद हदीस न०-२०४१ और शैख़ अल्बानी (रहि) ने इस हदीस को हसन् कहा है देखिए सहीह अबूदाऊद १/३८३)

108- सलाम को फैलाना

224- قال رسول الله ﷺ : ((لا تدخلوا الجنة حتى تؤمنـوا، ولا تؤمنوا حتى تحابوا، أولا أدلكم على شيء إذا فعلتموه تحاببتم، أفشوا السلام بينكم))

२२४. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया तुम जन्नत में दाख़िल् नहीं हो सकते यहाँ तक कि मोमिन् बनो और मोमिन् नहीं बनोगे यहाँ तक कि एक दूसरे से प्रेम करो। क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ कि जब तुम उस पर अमल करोगे तो एक दूसरे से प्रेम करने लागोगे। वह अमल् यह है कि सलाम को खूब फैलाओ। (मुस्लिम १/७४)

225- ثلاث من جمعهن فقد جمع الإيمان: الإنصاف من نفـسك، وبذل السلام للعالم، والإنفاق من الإقتار))

२२५. हजरत अम्मार बिन् यासिर (रजि) फरमाते हैं कि तीन चीज़ें ऐसी हैं कि जो आदमी इन तीनों को हासिल् कर ले तो उस ने ईमान जमा कर लिया (१) अपनी ज़ात के साथ इन्साफ। (२) तमाम संसार वालों के लिए सलाम फैलाना। (३) और

तन्दादस्ती तथा ग़रीबी में ख़र्च करना। (बुख़ारी फतह् के साथ १/८२ मौक़ूफ , मोअल्लक़् यह सहाबी का फरमान है।)

226 - وعن عبد الله بن عمر رضي الله عنهما: أن رجلاً سـأل النبي ﷺ أي الإسلام خير قال: ((تطعم الطعام، وتقرأ السلام علـى من عرفت ومن لم تعرف))

२२६. हजरत अब्दुल्लाह बिन् उमर (रजि) फरमाते हैं कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया कि इस्लाम की कौन कौन सी चीज़ें सब से अच्छी हैं ? आप ﷺ ने फरमाया ((यह कि तू खाना खिलाये और जिसे पहचानता है और जिसे नहीं पहचान्ता सब से सलाम करे।)) (बुख़ारी १/५५ मुस्लिम १/६५)

109- जब काफिर सलाम कहे तो उसे किस तरह जवाब दिया जाए।

227 - إذا سلم عليكم أهل الكتاب فقولوا : وعليكُم

२२७. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम से यहूद व नसारा सलाम करें तो तुम उन्हें जवाब में **وعليكُم** कहो।

(बुख़ारी ११/४२ और मुस्लिम ४/१७०५)

110- मुर्ग़ बोलने और गदहा हींगने के वक़्त दुआ।

228 - إذا سمعتم صياح الديكة فأسألوا الله من فضله، فإ ا رأت ملكاً وإذا سمعتم نبق الحمار فتعوذوا بالله من الشيطان ، فإنـه رأى شيطاناً

२२८. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम मुर्ग़ की बाँग तथा पाटदार आवाज़ को सुनो तो अल्लाह तआला से उस का फज़ल माँगो यानी यह पढ़ो **اللهم إني أسألك من فضلك** क्योंकि उस ने फरिश्ता देखा है और जब गदहे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह माँगों क्योंकि उस ने शैतान देखा है । यानी यह पढ़ो **أعوذُ بالله من الشيطان الـرجيم** (बुख़ारी ६/३५० मुस्लिम ४/२०९२)

111- रात में कुत्तों का भूँकना तथा गदहों का हींगना सुनकर निम्नलिखित दुआ पढ़ें ।

229 - إذا سمعتم نباح الكلاب و نهيق الحمير بالليل فتعوذوا بالله منهن فإ ن يرين ما لا ترون

२२९. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम रात में कुत्तों का भूँकना और गदहों का हींगना सुनों तो उन से अल्लाह की पनाह माँगों क्योंकि वह ऐसी चीज़ें देखते हैं जो तुम नहीं देखते । (अबूदाऊद ४/३२७ अहमद ३/३०६ और शैख़ अल्बानी ने इस हदीस को अल्कलिमुत्तय्यिब् की तख़रीज में सहीह़ कहा है)

112- उस आदमी के लिए दुआ जिसे तुम ने बुरा भला कहा हो या गाली दी हो ।

230- قال ﷺ : اللهم فأيما مؤمن سببته فاجعلْ ذلك له قُربةً إليك يوم القيامة

२३०. अबूहुरैरा (रजि) फरमाते हैं कि उन्हों ने रसूलुल्लाह ﷺ को यह दुआ करते हुए सुना **اللهم فأيما مؤمن سببته فاجعلْ ذلك له قُربةً إليك يوم القيامة** ऐ अल्लाह जिस मोमिन को मैं ने बुरा भला कह दिया हो तो

क़यामत् के दिन मेरे इस बुरा भला कहने को उस के लिए अपने क़रीब होने का माध्यम बना दे । (बुख़ारी फतह के साथ ११/१७१ मुस्लिम ४/२००७)

113- कोई मुस्लिम जब किसी मुस्लिम की तारीफ करे ।

231- قال ﷺ : إذا كان أحدكم مادحاً صاحبه لا محالة فليقـل: أحسِب فُلاناً واللهُ حسِيبه ولا أزكي على اللهِ أحداً أحسِبه ـ إنْ كانَ يعلم ذَاكَ – كذَا وكذَا

२३१. आप ﷺ ने फरमाया जब तुम में से किसी ने जरूर ही किसी की तारीफ करनी हो तो यह कहे मैं फलाँ के बारे में गुमान करता हूँ और अल्लाह उस का हिसाब लेने वाला है और मैं किसी को अल्लाह के सामने पाक नहीं समझता । मैं फलाँ को ऐसा ऐसा ((नेक या मुख़्लिस् वगैरा)) समझता हूँ । यह तारीफ भी उस वक़्त करे जब ख़ूब अच्छी तरह़ जानता हो । (मुस्लिम ४/२२९६)

114- जब कोई किसी की तज़्किया (तारीफ) करे उस समय की दुआ ।

232- اللهم لا تؤاخِذْني بِما يقُولُونَ، واغْفِر لِي مـا لا يعلمـونَ [واجعلْنِي خيراً مِما يظُنونَ]

२३२. ऐ अल्लाह जो लोग मेरे बारे में कह रहे हैं उस पर मेरी पकड़ मत करना और उस चीज़ के विषय में मुझे क्षमा कर दे जो वे नहीं जानते हैं । [और मुझे उस से बेहतर बना दे जो

वे मेरे बारे में गुमान करते है ।] (सहीहुल् अद्बिल् मुफ्रद् न०५८५)

115- हज् या उम्रा का इहराम बाँधने वाला निम्नलिखित तल्बिया पढ़े ।

233- لبيك اللهم لبيك، لا شريك لك لبيك، إن الحمد، والنعمة، لك والملك، لا شريك لك.

२३३. मैं हाजिर हूँ । ऐ अल्लाह मैं हाजिर हूँ । तेरा कोई शरीक नहीं , मैं हाजिर हूँ । बेशक् तमाम तारीफ और नेमत् एवं बादशाही तेरे ही लिए है । तेरा कोई शरीक नहीं । (बुख़ारी ३/४०८ मुस्लिम २/८४१)

116- हजरे अस्वद् वाले कोने पर अल्लाहु अक्बर कहना चाहिए ।

234- طاف النبي ﷺ بالبيت على بعير كلما أتى الركن أشار إليه بشيء عنده وكبر .

२३४. नबी ﷺ ने बैतुल्लाह का तवाफ ऊँट पर बैठ कर किया । जब आप ﷺ हजरे अस्वद् वाले कोने पर आते तो उस के पास पहुँच कर उस की तरफ् किसी चीज़ से इशारा करते और फरमाते ((अल्लाहु अक्बर)) (बुख़ारी फतह के साथ ३/४७६) किसी चीज़ से मुराद छड़ी है । देखिए बुख़ारी ३/४७२)

117- रुकने यमानी और हजरे अस्वद् के दरमियान दुआ ।

235- ربنا آتنا في الدنيا حسنةً وفي الآخرة حسنةً وقنا عذاب النار

२३५. ऐ हमारे रब् हमें दुनिया और अख़िरत् में भलाई प्रदान कर और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा । (अबूदाऊद २/१७९ अह्मद् ३/४११ शरहुस्सुन्ना लिल् बग़वी ७/१२८)

118-सफा और मरवा पर ठेहरने की दुआ ।

236- إن الصفا والمروةَ من شعائر الله... أبدأ بما بدأ اللهُ به

لا إله إلا اللهُ وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كُل شيءٍ قَدِير ، لا إله إلا اللهُ وحده أنجز وعده ، ونصر عبده وهزم الأحزاب وحده

२३६. हजरत जाबिर (रजि) रसूलुल्लाह ﷺ के ह़ज का बयान करते हुए फरमाते हैं कि जब आपﷺ सफा के क़रीब पहुँचे तो यह कहा : **إن الصفا والمروةَ من شعائر الله... أبدأ بما بدأ اللهُ به**

सफा और मरवा यह दोनों पहाड़ियाँ अल्लाह की निशानियों में से हैं । मैं उसी से शुरूआ़त कर रहा हूँ जिस से अल्लाह ने शुरूआत की है)) फिर आप ने सफा से सई शुरू की उस पर चढ़े यहाँ तक कि बैतुल्लाह नज़र आने लगा और आप क़िब्ला की तरफ् मुहँ करके यह दुआ पढ़ने लगे ।

لا إله إلا اللهُ وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كُل شيءٍ قَدِير ، لا إله إلا اللهُ وحده أنجز وعده ، ونصر عبده وهزم الأحزاب وحده

अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं , उसी के लिए मुलक है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं । वह अकेला है । उस ने अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे की मदद् की और अकेले अल्लाह ने सारे लश्करों को शिकश्त दी ।

आप ﷺ ने इस दुआ को तीन बार दुहराया फिर इस के बाद आप ﷺ ने और दुआएँ कीं। और आप ने मरवा पर भी ऐसे ही दुआ पढ़ी।

119- अरफा के दिन (९जुल्हिज्जा) को दुआ

237- لا إله إلا اللهُ وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كُل شيءٍ قَدِير

२३७. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (त्रिमिज़ी और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८४)

120- तअज्जुब् या ख़ुशी के वक़्त की दुआ।

238- سبحانَ اللهِ

२३८. अल्लाह पाक है। (बुख़ारी १/२१०/२९० मुस्लिम ४/१८५७)

239- اللهُ أكبر

२३९. अल्लाह सब से महान है। (बुख़ारी ८/४४१ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/१०३)

121- जो आदमी अपने बदन में दरद महसूस करे वह क्या करे और कौन्सी दुआ पढ़े।

240 - أعوذُ باللهِ وقُدرتِهِ مِن شر ما أجِد و أحاذِر

२४०. मैं अल्लाह तआला की इज्जत और क़ुदरत् की पनाह पकड़ता हूँ उस चीज़ के शर् (बुराई) से जो मैं पाता हूँ और जिस से डरता हूँ। (मुस्लिम ४/१७२८)

122- जानवर ज़बह् करते या कुरबानी करते समय की दुआ

241- بِسمِ اللهِ واللهُ أكْبر [اللهم مِنك ولك] اللهم تقَبلْ مِني

२४१. अल्लाह के नाम से ज़बह् करता हूँ। अल्लाह सब से बड़ा है [ऐ अल्लाह यह कुरबानी तेरा प्रदान किया हुआ है और तेरे ही लिए है ।] ऐ अल्लाह यह कुरबानी मेरी तरफ से क़बूल फरमा। (मुस्लिम ३/१५५७ बैहक़ी ९/२८७)

123- सरकश् शैतानों की खुफिया तद्बीरों के तोड़ के लिए दुआ ।

242 -أعوذُ بِكلِماتِ اللهِ التاماتِ التِي لا يجاوزهن بر ولا فَـاجِر مِن شر ما خلَق، وبرأ وذَرأ، ومِن شر ما ينزِلُ مِن السماءِ، ومِن شر ما يعرج فِيها، ومِن شر ما ذَرأ فِي الأرض، ومِن شر ما يخرج مِنها، ومِن شر فِتن الليل والنهار، ومِن شر كُل طَارِقٍ إلا طَارِقـاً يطْـرق بِخيرٍ يا رحمن

२४२. मैं अल्लाह के मुकम्मल् कलिमात की पनाह पकड़ता हूँ जिन से कोई नेक और कोई बुरा आगे नहीं गुज़र सकता हर उस चीज़ की बुराई से जिसे उस ने गढ़ा और पैदा किया और फैलाया और हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने ज़मीन में फैलाया और उस की बुराई से जो उस से निकलती है और रात तथा दिन के फित्नों से और हर रात को आने वाले की बुराई से सिवाए उस रात को आने आने वाले के जो भलाई के साथ

आए । ऐ महान कृपालु तथा दयालु अल्लाह । (अह्मद् ३/४१९ सहीह सनद् के साथ)

124- अल्लाह से बख़्शिश् माँगना तथा तौबा व इस्तिग़्फार एवं क्षमायाचना करना ।

243 - قال رسول الله ﷺ : والله إني لأستغفر الله و أتوب إليه في اليوم أكثر من سبعين مرة

२४३. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : अल्लाह की क़सम मैं दिन में सत्तर से अधिक बार अल्लाह से बख़्शिश् माँगता हूँ और उस की तरफ तौबा करता हूँ । (बुख़ारी फतह् के साथ ११/१०१)

244- وقال ﷺ : يا أيها الناس توبوا إلى الله فإني أتوب في اليوم إليه مائة مرة

२४४. आप ﷺ ने फरमाया : ऐ लोगो अल्लाह की तरफ् तौबा करो और बेशक् मैं उस की तरफ् एक दिन में सौ (१००) बार तौबा करता हूँ । (मुस्लिम ४/२०७६)

245- وقال ﷺ : من قال أستغفر الله العظيم الذي لا إله إلا هو الحي القيوم وأتوب إليه، غفر الله له وإن كان فر من الزحف

२४५. और आप ﷺ ने फरमाया : जो आदमी यह दुआ पढ़े अल्लाह तआला उसे बख़्श् देता है चाहे वह मैदाने जिहाद से भागा हुआ हो । أستغفر الله العظيم الذي لا إله إلا هو الحي القيوم وأتوب إليه، غفر الله له وإن كان فر من الزحف मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ जिस के सिवा कोई इबादत के लायक् नहीं और मैं उसी की तरफ तौबा करता हूँ ।

(अबूदाऊद २/८५ , त्रिमिज़ी ५/५६९ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८२)

246- وقال ﷺ : أقرب ما يكون الرب من العبد في جوف الليل الآخر فإن استطعت أن تكون ممن يذكر الله في تلك الساعة فكن

और आप ﷺ ने फरमाया : आल्लाह तआला बन्दे के सब से क़रीब रात के आख़िरी हिस्से में होता है । अगर तुम उन लोगों में शामिल् हो सको जो उस समय अल्लाह को याद करते हैं तो हो जाओ । (सहीह त्रिमिज़ी ३/१८३)

247- وقال ﷺ أقرب ما يكون العبد من ربه وهو ساجد فأكثروا الدعاء .

और आप ﷺ ने फरमाया : बन्दा अपने रब् से सब से अधिक क़रीब सजदे की हालत् में होता है तो सजदे में अधिक से अधिक दुआ करो । (मुस्लिम १/३५०)

248- وقال ﷺ : إنه ليغان على قلبي وإني لأستغفر الله في اليـوم مائة مرة

२४८. अग़र्र मुज़नी बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : मेरे दिल् पर परदा सा आ जाता है और मैं अल्लाह से दिन में सौ (१००) बार बख़शिश् माँगता हूँ । (मुस्लिम ४/२०७५) इब्नुल् असीर फरमाते हैं कि परदा सा आने से मुराद भूल है । क्योंकि आप ﷺ हमेशा अधिक से अधिक ज़िक्र व अज़कार और अल्लाह की इबादत में मश्ग़ूल रहते थे । लेकिन जब कभी इन में किसी चीज़ से कुछ ग़फ़्लत् हो जाती या आप भूल जाते तो उसे अपने लिए गुनाह शुमार करते और ऐसी हालत् में अधिक से अधिक तौबा व इस्तिग़्फार करते ।
(देखिए जामिउल् उसूल २/३८६)

249- فال ﷺ : من فال : سبحانَ اللهِ وبحمدِهِ في يومٍ مِائَةَ مـرة حطت خطاياه ولو كانت مثل زبد البحر

२४९. और आप ﷺ फरमाते हैं : जो आदमी سبحانَ اللهِ وبحمدِهِ ऐक दिन में सौ (१००) बार कहे उस के गुनाह माफ कर दिए जाते हैं चाहे समुन्दर की झाग के बराबर हों । (बुख़ारी ७/१६८ मुस्लिम ४/२०७१)

250- وفال ﷺ : من فال لا إله إلا اللهُ وحده لا شريك له ، لـه الملك وله الحمد وهو على كُل شيءٍ قَدِير عشر مرار. كان كمن أعتق أربعة أنفس من ولد إسماعيل

२५०. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जिस ने दस मरतबा यह दुआ لا إله إلا اللهُ وحده لا شريك له ، له الملك وله الحمد وهو على كُل شـيءٍ قَـدِير पढ़ा वह उस आदमी की तरह होगा जिस ने इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद किए हों
(बुख़ारी ७/१६७ मुस्लिम ४/२०७१)

251- وفال ﷺ : كلمتان خفيفتان على اللسان، ثقيلتان في الميزان ، حبيبتان إلى الرحمن : سبحانَ اللهِ وبحمدِهِ سبحانَ اللهِ العظِيمِ

२५१. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि दो कलमे (वाक्य) ज़बान पर हलके हैं लेकिन मीज़ान (तराजू) में भारी हैं और अल्लाह को बड़े प्यारे हैं । سبحانَ اللهِ وبحمدِهِ سـبحانَ اللهِ العظِـيم पाक है अल्लाह और उसी के हर प्रकार की तारीफ है , पाक है अज़मत् वाला अल्लाह । (बुखारी ७/१६८ मुस्लिम ४/२०७२)

252- وقال ﷺ لأن أقول سبحانَ اللهِ ـ والحمد للهِ، ولاَ إلــه إلا اللهُ، واللهُ أكْبر، أحب إلي مما طلعت عليه الشمس

२५२. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं मेरे नजदीक सुब्हानल्लाह , अल्हम्दुलिल्लाह और लाइलाहा इल्लल्लाह तथा अल्लाहु अक्बर का कहना तमाम दुनियन से अधिक महबूब है। (मुस्लिम ४/२०७२)

253- وقال ﷺ : أيعجز أحدكم أن يكسب كل يوم ألف حــسنة فسأله سائل من جلسائه كيف يكسب أحدنا ألف حسنة؟ قــال : يسبح مائة تسبيحة، فيكتب له ألف حسنة أو يحط عنه ألف خطيئة

२५३. हजरत सअ्द (रजि) से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के पास बैठे थे तो आप ने फरमाया ((क्या तुम में से कोई इस भी आजिज् है कि हर दिन एक हज़ार नेकी कमाये ? आप के पास बैठे हुए साथियों में से एक ने कहा हम में से कोई हज़ार नेकी कैसे कमा सकता है ? आप ﷺ ने फरमाया सौ बार तस्बीह कहे तो उस के लिए हज़ार नेकी लिखी जाएगी या उस से एक हज़ार गुनाह समाप्त कर दिया जाएगा।
(मुस्लिम ४/२०७३)

254- من قال : سبحانَ اللهِ العظِيمِ وبحمدِهِ غرست له نخلة في الجنة

२५४. आप ﷺ फरमाते हैं कि आदमी यह दुआ سبحانَ اللهِ العظِيمِ وبحمدِهِ पढ़े उस के लिए जन्नत में खजूर का एक पेड़ लगा दिया जाता है।

255- وقال ﷺ : يا عبد الله بن قيس ألا أدلك على كــنز مــن كنــوز الجنة؟ فقلت: بلى يا رسول الله، قال: قل لا حولَ ولا قُوةَ إلا باللهِ

२५५. अब्दुल्लाह बिन् कै़स कहते है कि आप ﷺ ने फरमाया : ऐ अब्दुल्लाह बिन् कै़स क्या मैं तुझे जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना न बताऊँ ? मैं ने कहा या रसूलल्लाह क्यों नहीं जरूर बाइए ! आप ﷺ ने फरमाया कहो **لا حولَ ولا قُوةَ إلا بِاللهِ**

256- وقال ﷺ : أحب الكلام إلى الله أربع: سبحانَ اللهِ ، والحمد للهِ ، ولا إلهَ إلا اللهُ، واللهُ أكْبر، لا يضرك بأيهن بدأت

२५६. आप ﷺ फरमाते हैं कि सब से मह़बूब कलाम चार कलिमात (वाक्य) हैं **سبحانَ اللهِ ، والحمد للهِ ، ولا إلهَ إلا اللهُ، واللهُ أكْبـر،** और इन में से जिस से भी चाहो शुरू कर लो तुम्हें कोई नुक़सान नहीं । (मुस्लिम ३/१६८५)

257- جاء أعرابي إلى رسول الله ﷺ فقال : علمني كلاما أقوله: قال: ((قل : لا إلهَ إلا اللهُ وحده لا شريك له، اللهُ أكْبـر كَبيراً، والحمد للهِ كَثيراً، سبحانَ اللهِ رب العالمين، لا حولَ ولا قُـوةَ إلا بِاللهِ العزيز الحكِيم)) قال فهؤلاء لربي فما لي؟ قال: ((قُـلْ اللـهم اغْفِرلي، وارحمني، واهدِني وارزقْني))

२५७. सअ़द बिन् अबी वक़्क़ास (रजि) फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक दीहाती आया और कहने लगा मुझे कुछ दुआएँ सिखाइए जो मैं पढ़ा करूँ । आप ﷺ ने फरमाया कहो : لا إلهَ إلا اللهُ وحده لا شريك له، اللهُ أكْبر كَبيراً، والحمد للهِ كَثيراً، سبحانَ اللهِ رب العالمين، لا حولَ ولا قُوةَ إلا بِاللهِ العزيز الحكِيم)) अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़् नहीं वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा और तमाम तारीफ केवल अल्लाह ही के लिए है । अल्लाह बहुत पवित्र है जो सारे

जहानों का रब् है । कोई ताक़त् नहीं और न कोई क्षमता मगर अल्लाह के सहायता से जो ग़ालिब् हिक्मत् वाला है । दीहाती ने कहा इस में तो मेरे महान रब की प्रशंसा है मुझे कुछ ऐसी दुआ बताइए जिस के माध्यम से अपने रब् से मैं कुछ माँगूँ ? आप ﷺ ने फरमाया कहो ((اللهم اغْفِرلي، وارحمني، واهـدِني وارزُقْـني)) ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे और मुझ पर दया कर और मुझे हिदायत् दे और मुझे रोज़ी दे । (मुस्लिम ४/२०७२)

258- كان الرجل إذا أسلم علمه النبي ﷺ الـصلاة ثم أمـره أن يدعو بؤلاء الكلمات: ((اللهم اغْفِرلي، وارحمنـي، واهـدِني، وعافِني وارزقْني))

२५८. जब कोई आदमी मुसलमान हो जाता तो रसूलुल्लाह ﷺ उसे नमाज़ सिखाते फिर उसे इन कलिमात के साथ दुआ करने का आदेश देते । ((اللهم اغْفِرلي، وارحمنـي، واهـدِني، وعـافِني وارزقْـني)) ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे और मुझ पर दया कर और मुझे हिदायत् दे और मुझे आफियत् दे और मुझे रोज़ी दे ।
(मुस्लिम ४/२०७२)

259- إن أفضل الدعاء الحمد لله ، و أفضل الذكر لاإله إلا الله

२५९. आप ﷺ फरमाते हैं कि सब से अफज़ल् दुआ लाइलाहा इल्लल्लाह है । (त्रिमिज़ी ५/४६२)

260- الباقيات الصالحات: سبحانَ الله، والحمد لله، ولا إله إلا الله ، والله أكبر، ولا حولَ ولا قُوةَ إلا بالله

२६० . अल्बाक़ियातुस्सवालिहात ((अर्थात बाक़ी रहने वाले नेक अमल्) यह हैं । سبحانَ الله، والحمد لله، ولا إله إلا الله ، والله أكبر، ولا حولَ ولا قُوةَ إلا بالله
(अहमद हदीस न०–५१३)

261- عن عبد الله بن عمرو رضي الله عنهما قال : ((رأيت النبي ﷺ يعقد التسبيح بيمينه))

२६१. हजरत अब्दुल्लाह बिन् अमर (रजि) फरमाते हैं कि मैं ने नबी ﷺ को देखा आप दायें हाथ से तस्बीह गिन्ते थे।
(अबूदाउद २/१८ और देखिए सहीहुल् जामिअ् ४/२७१)

262- إذا كان جنح الليل - أو أمسيتم - فكفوا صبيانكم، فـإن الشياطين تنتشر حينئذ، فإذا ذهب ساعة من الليل فخلوهم، وأغلقوا الأبواب واذكروا اسم الله ، فإن الشيطان لا يفـتح بابـاً مغلقـاً، وأوكوا قربكم واذكروا اسم الله ، وخمروا آنيتكم واذكروا اسـم الله، ولو أن تعرضوا عليها شيئاً، وأطفئوا مصابيحكم))

२६२. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जब रात का अन्धेरा छा जाये या फरमाया जब शाम हो जाए तो अपने बच्चों को रोक लो क्योंकि शैतान उस समय फैलते हैं और जब रात का कुछ हिस्सा बीत जाए तो उन्हें छोड़ दो और दरवाज़े बिस्मिल्लाह पढ़ कर बन्द कर लो क्योंकि शैतान दरवाज़ा नहीं खोलता और अपने मश्कीज़ों के मुँह तस्मे से बाँध दो और अल्लाह का नाम लो यानी बिस्मिल्लाह पढ़ो और अपने बरतन् ढाँक दो और अल्लाह का नाम लो यानी बिस्मिल्लाह पढ़ो अगर ढाँकने के लिए कुछ न मिले तो कोई चीज़ ही उस पर रख दो और अपने चिराग़ बुझा दो।

पसमाप्तप

आप का भाई धर्म सेवक
अबू फैसल/आबिद बिन सनाउल्लाह अल्मद्नी
इस्लामिक् सेन्टर उनेज़ा अल्क़सीम पोस्ट बाक्स न०–८०८
फोन न०–०६–३६४४५०६/३६५४००४ फाक्स न०–३६१२७९३
सऊदी अरब

स्थायी पता
अबू फैसल /आबिद बिन् सनाउल्लाह अल्मदनी निवास स्थान
मोहाना चौक WEST फेन न०– 0091– 5544– 61392
पोस्ट शिवपति नगर Pin 272206 जिला सिद्धार्थ नगर
[यू .पी] भारत

नेपाल का पता
अबूफैसल / आबिद बिन् सनाउल्लाह अल्मदनी
मौजा मोहसड़ ग .वि .स तेनुहवा वार्ड न०–३ पोस्ट लुम्बिनी
जिल्ला रूपन्देही नेपाल

حصن المسلم

من أذكار الكتاب والسنة

جمع وتخريج

سعيد بن علي بن وهف القحطاني

ترجمه الي اللغة الهندية

أبوفيصل/عابد بن ثناءالله المدني

مكتب دعوة وتوعية الجاليات بعنيزة
ص ب 808 هاتف 06-3654004/3644506
فاكس 3612793

मस्नून दुआएँ
हिन्दी

लेखक
सअ़ीद बिन् अली बिन् वहब् अल्क़हूतानी
अनुवादक
अबू फैसल /आबिद बिन् सनाउल्लाह
अल्मदनी

प्रकाशक
इस्लामिक सेन्टर उनेज़ा पोस्ट बाक्स न०–८०८
फोन न०–०६–३६४४५०६/३६५४००४
फैक्स न०–३६१२७९३